कन्य-शुल्कम्

मूल लेखक

स्व. गुरजाडा अप्पाराव

संशोधन, परिष्करण और संक्षिप्तीकरण :

स्व. अब्बूरि रामकृष्णाराव

हिन्दी अनुवाद :

डॉ. भीमसेन निर्मल

प्रकाशन

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद

नामपल्ली स्टेशन रोड, हैदराबाद-आं.प्र. 500 001.

पुस्तक प्राप्ति-स्थान :-
विक्री विभाग, हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद
'हिन्दी भवन', एल.एन. गुप्त मार्ग, नामपल्ली स्टेशन रोड,
हैदराबाद-आं.प्र. 500 001.

प्रथम संस्करण : 2000 *अगस्त-1997*

विद्यार्थी संस्करण-25/- रुपये
पुस्तकालय संस्करण-100/- रुपये (सजिल्द)

मुद्रक:
हिन्दी लेज़र ग्राफिक्स प्रिंटर्स,
'हिन्दी भवन', एल.एन. गुप्त मार्ग,
नामपल्ली स्टेशन रोड, हैदराबाद-आं.प्र.

प्रकाशकीय

हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद पिछले 60 वर्षों से दक्षिण भारत में विविध परीक्षाओं के संचालन द्वारा हिन्दी के प्रचार का कार्य करती आ रही है । इसके अतिरिक्त मौलिक साहित्य-सृजन और प्रांतीय भाषाओं की श्रेष्ठ रचनाओं के हिन्दी अनुवादों को प्रकाशित करने का भी सफल प्रयास हुआ है । इसी दिशा में, तेलुगु के अन्यतम नाटक 'कन्या शुल्कम्' का हिन्दी अनुवाद पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है ।

स्व. गुरजाडा वेंकट अप्पाराव कृत इस नाटक का तेलुगु-नाटक साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान है । यह नाटक तेलुगु-भाषी प्रदेश में सैकड़ों बार मंचित हो चुका है और सौ वर्ष से अधिक पुराना हो जाने पर भी इस नाटक की लोकप्रियता अक्षुण्ण है ।

'कन्या शुल्कम्' का प्रथम संस्करण सन् 1897 में हुआ था । सुखद संयोग की बात है कि इसका हिन्दी अनुवाद ठीक सौ वर्ष के बाद प्रकाशित किया जा रहा है । हिन्दी और तेलुगु के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान और अनुवादक डॉ. भीमसेन निर्मल ने 'कन्या शुल्कम्' का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है । इस अनुवाद को प्रकाशित करते हुए हम अतीव हर्ष का अनुभव कर रहे हैं ।

आशा है, हिन्दी के सहृदय विद्वान और नाटक-प्रेमी इस कृति का स्वागत करेंगे ।

--डॉ. पाण्डुरंग ढगे,
प्रधान मंत्री,
हिन्दी प्रचार सभा

हैदराबाद,
15-8-1997

● ● ●

अनुवादक की ओर से

किसी भी आधुनिक भारतीय भाषा में सौ वर्ष से अधिक कालावधि तक जीवित अर्थात् पठित एवं मंचित होने वाला एक मात्र नाटक 'कन्या शुल्कम्' ही है । इसे गुरजाडा वेंकट अप्पारावजी ने सन् 1892 में लिखा और मंचित कराया था । यह नाटक पहली बार सन् 1897 में और दूसरी बार लेखक द्वारा परिवर्द्धित होकर सन् 1909 में प्रकाशित हुआ था । परिवर्द्धित रूप में 'कन्या-शुल्कम्' के कई संस्करण निकले हैं ।

स्व. अब्बूरि रामकृष्णराव तेलुगु के सुप्रसिद्ध समालोचक, कवि और नाटक-प्रयोक्ता थे । उन्होंने मूल नाटक के अनावश्यक विस्तार को कम करके, मुख्य उद्देश्य को उजागर करने वाले ढंग से और एक-सवा घंटे में मंचन के लिए उपयुक्त रूप में 'कन्या शुल्कम्' के संशोधित रूप को तैयार किया । इस रूप में यह सैकड़ों बार मंचित हो चुका है । स्व. ए.आर. कृष्ण (नाटकों के मंचन के विधान में विशिष्ट प्रयोग करने वाले लब्ध-प्रतिष्ठ निर्देशक) ने इस संशोधित रूप को अत्यंत लोकप्रिय बनाया था । मेरा छोटा भाई बी. आनन्द मोहन वेंकटेशम् का पात्र अदा करता था ।

दो सिनेमा कंपनियों ने इस नाटक को चलचित्र का रूप दिया था।

इस प्रकार तेलुगु भाषी क्षेत्र में इस नाटक की लोकप्रियता आज भी अप्रतिम है ।

प्रो. नामवरसिंह की प्रेरणा से अब्बूरि रामकृष्णाराव द्वारा संशोधित रूप (version) का हिन्दी अनुवाद मैं ने अपने अमरीका-प्रवास के दौरान किया है । (मेरी बेटी और दामाद बॉस्टन में रहते हैं ।)

मूल नाटक की विशेषता है, नाटक में प्रयुक्त पात्रोचित भाषा । तत्कालीन ब्राह्मण परिवारों में बोली जाने वाली भाषा, अधकचरे अंग्रेजी ज्ञान को बघारने वाले ढोंगी युवकों की भाषा के प्रयोग से यह नाटक जीवंत बन पड़ा है । भाषा की इस विशिष्टता को अनुवाद में लाना असाध्य है। इसकी झलक दिखाने के लिए मूल में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों को यथावत् रहने दिया है ।

कन्याशुल्क, अनमेल वृद्ध-विवाह, अधकचरे अंग्रेजी ज्ञान से उत्पन्न ढोंग आदि कुप्रथाओं पर करारा व्यंग्य करते हुए, अप्पारावजी ने इस नाटक की रचना की थी। ढोंगी युवकों के प्रतीक के रूप में गिरीशम् तथा वेश्या होते हुए भी सौजन्य के प्रतीक के रूप में मधुरवाणी के नाम तेलुगु भाषियों में रूढ बन गए हैं।

तेलुगु साहित्य के भारतेंदु कंदुकूरि वीरेशलिंगम् के समकालीन गुरजाडा अप्पाराव के इस अद्वितीय नाटक का अनुवाद हिन्दी के सुधी विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत करने का सुअवसर, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद ने मुझे प्रदान किया है। तदर्थ मैं सभा के सदस्यों-विशेष रूप से श्री विद्याधर गुरु, डॉ. पाण्डुरंग ढगे, डॉ. पूनमचंद सिसोदिया - का हृदय से आभारी हूँ। प्रेस के कार्यकर्त्ता-श्री किशन प्रसाद, श्री अशोक कुमार तथा श्रीमती माया पाण्डेय का भी आभारी हूँ, जिन्होंने समय पर, सुचारु रूप से पुस्तक के मुद्रण-कार्य को संपन्न किया है।

अनुवाद-कार्य में मेरी सहायता करने वाले अभिन्न मित्र, समालोचक एवं वैयाकरण डॉ. एन.पी. कुट्टन पिल्लै का मैं कृतज्ञ हूँ। मेरे शिष्य डॉ. एन.वी.एस. प्रसाद के सहयोग को भुलाया नहीं जा सकता।

अब नाटक आपके हाथों में है। पढ़कर विद्वज्जन इस अनुवाद की उपादेयता का स्वयं निर्णय करेंगे ही।

408, गान्धीनगर,
हैदराबाद-500 080
15-8-1997

--*डॉ. भीमसेन निर्मल*
पूर्वाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, उ.वि.
एमिरिटस प्रोफेसर (यू.जी.सी.)

गुरजाडा वेंकट अप्पाराव

तेलुगु के आधुनिक साहित्य के युगनिर्माता कंदुकूरि वीरेशलिंगम पंतुलु के साथ गुरजाडा अप्पाराव और श्री गिडुगु राममूर्ति पंतुलु उल्लेखनीय हैं ।

वीरेशलिंगम ने अपनी सुधारवादी विचार-धारा को सामान्य जनता तक पहुँचाने के लिए साहित्य को साधन बनाया । वे तेलुगु के प्रथम उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार एवं समालोचक हैं । हिन्दी साहित्य के इतिहास में भारतेंदु का जो स्थान है, तेलुगु साहित्य में वीरेशलिंगम का वही स्थान है ।

वीरेशलिंगम से प्रभावित होकर साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण करने वालों में गुर(रु) जाडा वेंकट अप्पाराव प्रमुख हैं । समाज-सुधार और राष्ट्रीय भावनाओं को व्यावहारिक (बोलचाल की) भाषा में अभिव्यक्त करने वालों में अप्पारावजी प्रथमगण्य हैं ।

आधुनिक आन्ध्र के नाटक यक्षगान, वीथिभागवत आदि लोक नाट्य शैलियों से प्रभावित न होकर, संस्कृत तथा अंग्रेजी नाटकों से प्रभावित रहे हैं । स्वयं वीरेशलिंगम पंतुलु ने कतिपय संस्कृत नाटकों तथा अंग्रेजी नाटकों का अनुवाद किया । सामाजिक कुरीतियों का खंडन करते हुए उन्होंने व्यंग्य प्रधान प्रहसनों की रचना की । वीरेशलिंगम पंतुलु ने ग्रांथिक भाषा (व्याकरणबद्ध भाषा) के प्रयोग का समर्थन किया । व्यावहारिक (बोलचाल की) भाषा का समर्थन करते हुए, बोलचाल की और पात्रोचित भाषा में रचना करने वाले प्रथम व्यक्ति थे अप्पाराव । बोलचाल की भाषा के प्रयोग को मद्रास विश्वविद्यालय (उस समय पूरे दक्षिण भारत के लिए एक ही विश्वविद्यालय था) द्वारा अनुमोदित कराने में अप्पारावजी का योगदान अविस्मरणीय है ।

गुरजाडा अप्पारावजी का जन्म 21 सितंबर, 1862 को (कुछ लोगों के अनुसार 30-11-1861) और निधन 30 नवंबर, 1915 को हुआ था । 1886 में बी.ए. करने के बाद अप्पाराव विजयनगरम

DEDICATION

To

His Highness Maharajah Mirja
Sri Ananda Gajapati Raj, Manne Sultan.
Bahadur of Vizianagaram, G.C.I.E.

May it Please your Highness,

It is fabled that when the ancient demigod of your noble race was making a causeway across the sea to rescue his consort from captivity, the faithful squirrel brought at the end of its tail few grains of sand not indeed hoping to advance the high enterprise in any appreciable degree, but to show an inclination to serve. Ten years ago, when the question was engaging Your Highness attention of saving a very helpless section of our womankind from a galling type of slavery fraught with the germs of social demoralisation, an humble servant made a feeble effort to arouse public opinion on the subject by exposing the evil in a popular drama. The success that attended its production on the boards, and demand for copies from various quarters emboldened him to publish it. No one is better aware than the writer himself how great are the imperfections of the piece, and how unworthy it is of presentation to such an exalted personage and ripe scholar as Your Highness but he has ventured to seek Your Highness's indulgence as he deems it the highest honour and his greatest ambition to be permitted to dedicate the fruits of his intellect poor though in merit to a Prince with whom knowledge is an absorbing passion and whose appreciative encouragement of letters, has attracted to his court, literary stars of the first magnitude and inaugurated a brilliant epoch in the history of Telugu literature.

I have the honour to subscribe myself
May it please Your Highness
One Ever Loyal to the Ever Loyal

प्रथम संस्करण की भूमिका

(मूल अंग्रेजी)

श्रीमान विजयनगर के महाराजा के आदेश पर विशाखापट्नम के ब्राह्मण परिवारों में जितने विवाह हुए, उनकी तालिका दस वर्ष पहले तैयार की गयी थी। संबंधित व्यक्ति कन्याशुल्क लेने की बात स्वीकार करने को तैयार नहीं हुए। इसलिए वह तालिका पूर्ण नहीं हुई। फिर भी, वह तालिका एक कीमती और दिलचस्प दस्तावेज बन गई। प्रमाणित विवाहों की संख्या 1084 तक पहुँच गई जिसका औसत प्रति वर्ष 344 पड़ता है। इनमें निन्यानवे बालिकाएँ उम्र में पाँच वर्ष की, 44 बालिकाएँ चार वर्ष की, 36 लड़कियाँ तीन वर्ष की, 6 लड़कियाँ दो वर्ष की और तीन लड़कियाँ एक वर्ष की थीं जब वे विवाह के सूत्र में बंध गयीं। प्रत्येक के लिए रु 350-00 से लेकर 400-00 तक का मूल्य कन्या-शुल्क के रूप में लिया गया। यह सुनकर आश्चर्य होगा कि कभी-कभी गर्भस्थ शिशुओं के लिए भी मोल-तोल किया जाता था। यह निन्दनीय है। समाज के लिए अपमान-जनक है। ऐसी कुरीतियों की ओर इशारा करने और नैतिक आदर्शों का प्रचार करने से बढ़कर साहित्य का और कोई प्रयोजन नहीं है। साधारण जनता जब तक पढ़ी-लिखी नहीं होती, तब तक उसे प्रभावित करने के लिए रंगमंच को छोड़कर और कोई साधन नहीं है। इन्हीं विचारों ने मुझे 'कन्याशुल्क' नाटक लिखने की प्रेरणा दी।

मैंने इस नाटक की रचना बोलचाल की भाषा में की। केवल इसलिए नहीं कि साहित्यिक भाषा की अपेक्षा सामान्य जनता की समझ में आएगी बल्कि इस विश्वास से कि तेलुगु में हास्यरस की शैली के लिए उपयुक्त है। नाटक की शैली, निस्संदेह, कुछ हद तक उपयोग को दृष्टि में रखकर ही निश्चित की जाती है। लेकिन तेलुगु में नाटक साहित्य के अभाव के कारण, लेखक उस बाहरी रूप को अपनाने के लिए स्वतंत्र है जिसे वह अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए उचित मानता है। तेलुगु में छंद अपने नियमों के कारण उस नाद-सुविधा को प्रदान नहीं कर सकते जो किसी भी प्रहसन के लिए अनिवार्य है। जैसे श्री वार्ड कहते हैं, वास्तविक

जीवन मौजूद हो तो कोई भी लेखक नई नाटकीय शैली का आविष्कार कर सकता है । लेकिन जहाँ तक प्रहसन का संबंध है, संसार भर में नाटक के लिए गद्य ही उपयुक्त माना जा रहा है ।

यह आक्षेप किया जाता है कि ग्राम्य भाषा का प्रयोग साहित्यिक रचना के गौरव का नाश कर डालता है । लेकिन यह ऐसी आलोचना है जिसकी ओर आजकल किसी को ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है । प्राचीन भाषाओं के वैयाकरणों की इच्छा-अनिच्छाओं को छोड़कर भाषा-विज्ञान के विकास ने ग्राम्य भाषा की उपयोगिता को सही सिद्ध किया है। तेलुगु की साहित्यिक भाषा में व्याकरण संबंधी ऐसे रूप हैं जो कभी पुराने जमाने में प्रयुक्त होते थे । असुविधाजनक शब्द भंडार और निरंकुश क्रिया संबंधी संकोच तथा व्याकोच, अनुप्रास पर आधारित होकर पद्य-रचना-पद्धति के लिए आवश्यक बन गए थे । अनंत संस्कृत शब्दों का उपयोग करने की अनुमति के कारण कवियों ने उस शब्द-भंडार का इतना उपयोग किया और विचित्र समासों में बांध दिया कि उन्होंने तेलुगु की साहित्यिक भाषा को निर्जीव-सा बना दिया । भाषा को सुधारने के प्रश्न पर चर्चा करने के लिए यह उपयुक्त स्थान नहीं है । फिर भी इतना तो कहा जा सकता है कि अगर तेलुगु की साहित्यिक भाषा को माध्यम बनाना चाहते हैं तो उसको अनावश्यक और अनुपयुक्त प्राचीन संस्कृत शब्द-भंडार से मुक्त कर देना चाहिए और बोलचाल की भाषा के निकट लाकर उस भाषा के शब्दों से भर देना चाहिए । तेलुगु देश के विविध प्रान्तों में बोली जाने वाली आंचलिक शैलियों में बहुत बड़ा अंतर नहीं है । अगर समर्थ लेखक यथाशीघ्र प्रयत्न करें तो अपेक्षाकृत सरल एवं सर्वमान्य साहित्यिक भाषा का मानकीकरण किया जा सकता है ।

अभी हाल में मैंने रायबहादुर वीरेशलिंगम पंतुलुजी का लिखा "ब्राह्मविवाह" पढ़ा और पहचाना कि हम दोनों के नाटकों में कुछ समांतर अंश हैं । उनका नाटक ब्राह्मण विवाहों के संपूर्ण क्षेत्र पर व्याप्त है । लेकिन यह स्पष्ट है कि इन नाटकों में समानता नहीं पायी जाती । क्योंकि हमारी कथावस्तुएँ बिलकुल अलग हैं । ब्राह्म विवाह का उद्देश्य केवल आचार-विचारों को हास्य प्रवृत्ति के द्वारा दिखाना है । "कन्या शुल्कं" में

हास्यमय चरित्र-चित्रण और एक मौलिक तथा क्लिष्ट कथा-वस्तु के निर्माण का प्रयत्न किया गया है, जिसकी सफलता का निर्णय जनता को करना है ।

विजयनगरम

दि. 1-1-1897

जी. वी. ए.

(गुरजाड वेंकट अप्पाराव)

• • •

द्वितीय संस्करण की भूमिका

(मूल अंग्रेजी)

इस नाटक को थोड़े से परिवर्तनों के साथ पुनः प्रकाशित करने की मेरी इच्छा थी, लेकिन मेरे मित्र श्री एस. श्रीनिवास अय्यंगार की सूचना के अनुसार, जिनके साहित्यिक निर्णयों का मैं बहुत बड़ा आदर करता हूँ, मैंने इस नाटक को नए ढांचे में ढाला। इस प्रयत्न में यह परिमाण में बहुत बड़ा हो गया। इस प्रस्तुत आकार में यह बिलकुल नई रचना है।

प्रथम संस्करण सफल हुआ था। समाचार पत्रों ने उसका हार्दिक स्वागत किया और तेलुगु साहित्य के इतिहास में इसे एक अपूर्व घटना कह कर इसकी प्रशंसा की और पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों ने इसे लगन के साथ पढ़ा। अपवाद एकमात्र केवल महा-महोपाध्याय के. वेंकटरत्नम् पंतुलुजी थे जो इस सारे संसार में दो चीजों को—समाज सुधार और बोलचाल की भाषा को—सह नहीं सकते। कुछ ही सप्ताहों में प्रथम संस्करण की प्रतियाँ बिक गईं। तब से लेकर लगातार पुस्तक की माँग होती रही। दूसरे संस्करण को मैं बहुत समय तक टालता रहा और अब केवल मित्रों के आग्रह के कारण इस प्रकाशन की जिम्मेदारी ले रहा हूँ।

तेलुगु देश में साधारणतया लेखक को ही स्वयं प्रकाशक एवं विक्रेता बनना पड़ता है। यहाँ पुस्तकों को बेचने की संस्था नहीं है। पुस्तकों को पढ़ने का जो कार्य है, वह पूर्णतया "बोर्ड आफ स्टडीज़" नामक गौरवनीय संस्था के प्रयत्न के कारण ही है। ईसाई धर्म का ग्यारहवाँ आदेश यह नहीं कहता कि "तुम्हें पढ़ना चाहिए"। लेकिन यह अधिकार "तेलुगु बोर्ड आफ स्टडीज" को दिया गया है कि वह आदेश दे कि "तुम्हें पढ़ना चाहिए" और तुरंत हजारों अभागे युवकों ने ऐसी पुस्तकें पढ़ी हैं जो कोई भी मानव किसी प्रयोजन या आनंद के लिए नहीं पढ़ता।

जब मैं ने यह नाटक लिखा तब उसे प्रकाशित करने का विचार नहीं था। समाज-सुधार को प्रोत्साहित करने के लिए और इस प्रचलित दुरभिप्राय को दूर करने के लिए कि तेलुगु भाषा रंग-मंच के लिए उपयुक्त

नहीं है, मैंने इसकी रचना की। मराठी नाटक मंडलियों ने तेलुगु जिलों में हिन्दी नाटकों का प्रदर्शन करके बहुत धन कमाया। स्थानीय कंपनियों ने उनकी नकल की और दर्शकों ने बड़े हर्ष के साथ उन्हें देखा हालांकि वे उनकी समझ में नहीं आते थे। अज्ञान के वरदान का उदाहरण इससे बढ़कर और कुछ भी नहीं हो सकता। "कन्या शुल्कम्" ने रंगमंच के असभ्य आकर्षणों, तड़क-भड़क, कामोत्तेजक नृत्य, अशिष्ट संगीत और झूठे युद्ध आदि का प्रदर्शन करने के लिए अवसर नहीं दिया। फिर भी प्रेक्षागृह ठसाठस भर जाते और बोलचाल की भाषा के हक का समर्थन करते।

यह देख कर मुझे संतोष हो रहा है कि हिन्दी नाटकों का प्रदर्शन कम हो रहा है। लेकिन तेलुगु रंगमंच की स्थिति संतोषजनक नहीं समझी जाती। न योग्य प्रेक्षागृह हैं, न नाटक के पेशे पर जीवन बिताने वाले अभिनेता हैं जो नाटक का एक कला की तरह अभ्यास करते हैं। बहुत से अच्छे नाटक भी नहीं हैं। बृहत् प्रहसनों के उद्देश्य को छोड़कर क्लिष्ट सामाजिक परिस्थितियों वाला आधुनिक जीवन नाटककारों से उपेक्षित ही रह गया है। केवल शिथिल शृंगारिक विषयों को ही लेकर नाटकों के लिखे जाने के कारण, नूतन विषयों का अन्वेषण करने की शक्तिहीनता स्पष्ट दिखाई पड़ती है। तकनीक का ज्ञान कोई भी लेखक प्रदर्शित नहीं करता। विश्वविद्यालय की शिक्षा का प्रचार हो जाने और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के पचास साल के बाद भी, इतने निम्नस्तर की साहित्यिक रचना का होना आश्चर्य-जनक विषय है और इसका कारण हमारे महाविद्यालयों में अंग्रेजी साहित्य को पढ़ाने की त्रुटिपूर्ण पद्धति ही है। जब तक अंग्रेजी भाषा के आचार्य एवं शिक्षा अधिकारी मातृभाषा की अभिवृद्धि नहीं करते, तब तक शायद इससे बेहतर हालत की कल्पना नहीं कर सकते।

शासकों की क्रूरता के कारण, यानी अधिक कृत्रिम साहित्यिक भाषा, अनुप्रासयुक्त कविता करने की कठिन पद्धति और अनुपयुक्त साहित्यिक पद्धतियों के कारण तेलुगु की ग्रहण-शक्ति अधिक कुंठित होती गयी। साहित्यिक भाषा के बारे में मैं यहाँ एक बात कहूँगा। जब मैं ने प्रथम संस्करण की भूमिका लिखी तब बोलचाल की भाषा विजयी बन गई। मेरे मित्र, प्रिंसिपल, पी.टी. श्रीनिवास अय्यंगार ने, अभी हाल में, "तेलुगु टीचिंग

रिफार्म सोसाइटी" (तेलुगु भाषा को सिखाने में सुधार लानेवाली समिति) का प्रारंभ किया, जिसके उद्देश्य और आशयों में मातृभाषा तेलुगु की वृद्धि करने को प्रमुख स्थान देना है । श्री एट्स ने हमारी पाठशालाओं में विवेकयुक्त विधियों के द्वारा शिक्षण देने की पद्धतियों का प्रवेश कराया था । उन्होंने उक्त सोसाइटी के अध्यक्ष-पद की स्वीकृति देकर उस आंदोलन को बल दिया ।

मैं समझ नहीं सकता कि आधुनिक लेखक बोलचाल की भाषा के गुण, उसकी कोमलता जिसने विदेशी पंडितों की प्रशंसा पाई है और भाव प्रकट करने के लिए उसकी सामर्थ्य को क्यों ग्रहण नहीं करते । आजकल भाषा का उत्तमोत्तम गद्य बोलचाल की भाषा में है । यह तो विचित्र लग सकता है कि तेलुगु गद्य का प्रारंभ और उसकी अभिवृद्धि राजाओं के पोषण में या पाश्चात्य साहित्यों के प्रभाव के कारण नहीं हुई । वह तो पिछली शताब्दी में अंग्रेजों के स्थानीय इतिहासों को बोलचाल की भाषा में इकट्ठा करने के कारण हुई । 'मेकंजी कलेक्शन्स' (मेकंजी संग्रहों) में निस्संदेह लय को छोड़ कर, असमान गुण, प्रवाह और सीधापन देखे जा सकते हैं। उनमें से कुछ साहित्यिक भाषा की उत्तमोत्तम कृतियों को भी मात कर देते हैं । इसके अलावा, तेलुगु साहित्य में संस्कृत में दिखाई पड़नेवाले गुण अर्थात् लोगों के मन की भावनाएँ और समसामयिक छाप का प्रतिबिंब देखे जा सकते हैं । शायद, अनजाने में ही, रायबहादुर श्री के. वीरेशलिंगम पंतुलु ने अंग्रेजी में लिखे जानेवाले नाटकों का अनुसरण करके और भारतीय जीवन को प्रतिबिंबित करनेवाले प्रहसनों को बोलचाल की भाषा में लिख कर, प्रकाशित करके, तेलुगु भाषा की बड़ी सेवा की । भाषा का चुनाव उनके सुनिश्चित लोकज्ञान को स्पष्ट करता है, क्योंकि प्रथम संकलन में उनकी सर्वोत्तम कृतियाँ हैं । वास्तव में उसी एक ग्रंथ ने लोगों को आश्चर्य चकित कर दिया । संस्कृत परंपरा के अनुसार तेलुगु नाटकों में बोलचाल की भाषा का प्रवेश कराने का गौरव मेरे मित्र श्री वेदं वेंकटराय शास्त्रीजी को मिलता है । उनके नाटक "प्रतापरुद्रीयम्" में बोलचाल की भाषा में लिखे गए संवादों का बड़ा प्रभाव है । मैं विश्वास करता हूँ कि मेरा

नाटक बोलचाल की भाषा में लिखा हुआ प्रथम नाटक है और निश्चय ही यह असफल नहीं हुआ है । लेकिन वास्तव में किसी एक लेखक की सफलता या असफलता उस भाषा की सामर्थ्य का प्रमाण प्रस्तुत नहीं करती ।

मातृभाषा जब इस प्रकार लोगों की स्वीकृति पा रही है, और सर्वोत्तम गद्य के रूप में जिसकी उपयोगिता महसूस की जा रही है, तो वह जरूर आगे बढ़ेगी । वर्तमान तेलुगु साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यिक रायबहादुर के. वीरेशलिंगम पंतुलुजी ने अनुनासिक (न्) के बाद प्रयुक्त होनेवाले सरल (व्यंजनों) और परुष (व्यंजनों) में होने वाले परिवर्तनों के नियम का पालन करने में रियायत देने का आदर्श प्रस्तुत किया । व्याकरण के सूत्रों और मान्यता-प्राप्त प्रयुक्तियों का पालन न करने के कारण ऐसा बिरला ही कोई आधुनिक लेखक रहेगा जो निंदनीय न हो । इसके अलावा कक्षा में पंडितों ने संधि के नियमों के पालन करने में भी कुछ ढीलापन दिखाया है । परंपरा की सीमाओं को इस प्रकार तोड़ देने की नीति का स्वभाव स्पष्ट है । प्राचीन साहित्यिक भाषा असुविधाजनक मानी गई है । अप्रयास ही एक नई साहित्यिक भाषा का निर्माण करने का प्रयत्न हो रहा है । मेरी शिकायत यही है कि यह आंदोलन बिना किसी कारण के मंदगति से चल रहा है।

तेलुगु की साहित्यिक शैली को तेलुगु भाषियों पर परंपरा के नाम पर लादा गया है । बंधनों से प्रेम करने वालों को उनकी आराधना करने दीजिए । मेरी मातृभाषा मेरे लिये सजीव तेलुगु है । "दि इटालियन आफ द ईस्ट" (पूर्वी देशों की इतालियन भाषा) । इसमें अपने सुख और दुःख को व्यक्त करने में कोई लज्जित नहीं होता । लेकिन हममें कुछ ऐसे हैं जो उसे लिखने में लज्जित होते हैं । मातृभाषा किसान का दरवाजा खटखटाती है और वह भारत देश में रहनेवाले अंग्रेज शासकों का दरवाज़ा खटखटाती है, उसकी जिम्मेदारियाँ असंख्य हैं ।

बोलचाल की भाषा के पक्ष में, अंग्रेजी की उपभाषाओं और प्राकृतों के इतिहास को जाननेवालों के साथ बहस करने की कोई आवश्यकता नहीं है । मैं जानता हूँ कि नई साहित्यिक भाषा का निर्माण बहस के द्वारा नहीं हो सकता । किसी महान लेखक को उस शैली में लिखना और उसका निर्माण करना चाहिये । उसके लिए आवश्यक पृष्ठभूमि हम तैयार करें।

चीफ जस्टिस सर अर्नाल्ड व्हाइट, जस्टिस मिल्लर और मनरो से युक्त मद्रास हाईकोर्ट के न्यायपीठ ने अभी हाल में समाज-सुधार का प्रबल समर्थन करते हुए यह फैसला सुनाया कि विवाह में कन्या के पिता को शुल्क के रूप में धन देना नीतिसंगत नहीं है और भारतीय संविधान के अधिनियम की 23 वीं धारा के अनुसार सार्वजनिक नीति के विरुद्ध है।

इस पुस्तक को छापने में मुझे एक कठिनाई का सामना करना पड़ा। बोलचाल की भाषा की कई ध्वनियाँ हैं, जिनको व्यक्त करने के लिए तेलुगु वर्णमाला में चिह्न नहीं हैं । आजकल की तेलुगु की उच्चरित ध्वनियों को सूचित करने के लिए निकटतम चिह्नों पर एक आड़ी लकीर खींच कर मुझे तृप्त होना पड़ा । बोलचाल की भाषा का और भी अधिक प्रचार हो जाने के बाद नए चिह्नों का आविष्कार किया जा सकेगा ।

श्री जी. रामस्वामी चेट्टी एंड कंपनी को, जिन्होंने सहर्ष मेरे किए संशोधनों को स्वीकार किया और मुझे पूर्ण रूप से संतृप्त करते हुए अपनी जिम्मेदारी निभाई है, हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ ।

एल्क हिल हाउस
उदक मंडलम् (ऊटी)
दि. 1-5-1909

जी. वी. ए.
(गुरजाड वेंकट अप्पाराव)

● ● ●

कन्या-शुल्कम्

पात्र परिचय

अग्निहोत्रावधानी	:	कृष्णरायपुरम् का वैदिकी ब्राह्मण
वेंकम्मा	:	अग्निहोत्रावधानी की पत्नी
बुच्चम्मा	:	अग्निहोत्रावधानी की बड़ी बेटी (विधवा)
वेंकटेशम्	:	अग्निहोत्रावधानी का अकेला पुत्र जो शहर में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करता रहता है ।
करटक शास्त्री	:	अग्निहोत्रावधानी का साला । संस्कृत नाटक-कंपनी में विदूषक पात्र-धारी ।
करटक शास्त्री का शिष्य	:	दुलहिन और बाद में वैरागी का वेष धारण करता है ।
लुब्धावधानी	:	रामचन्द्रापुरम् का अग्रहारी जो बुढ़ापे में कन्याशुल्क देकर, अग्निहोत्रावधानी की दूसरी बेटी सुब्बम्मा से विवाह करने को उत्सुक रहता है ।
मीनाक्षी	:	लुब्धावधानी की पुत्री (विधवा)
गिरीशम्	:	वेंकटेशम् का गुरु, अंग्रेजी-दाँ ढोंगी युवक
रामप्पा पंतुलु	:	रामचंद्रापुरम का पटवारी, महा दुनियादार
मधुरवाणी	:	वेश्या पर सहृदया

इनके अतिरिक्त पुजारी गवरय्या, नौकर असिरि, हेड कान्स्टैबिल, सिद्धांती आदि गौण पात्र ।

● ● ●

प्रथम अंक

प्रथम दृश्य

स्थान : कृष्णारायपुरम् नामक अग्रहार[1] में अग्निहोत्रावधानी का घर।
अग्निहोत्रावधानी जनेऊ पिरोता[2] रहता है।

करटक शास्त्री का शिष्य गुरु के सिर के बालों से जूँ निकालता रहता है।

वेंकम्मा तरकारी काटती रहती है।

वेंकम्मा : लड़के ने पत्र लिखा था कि कल से किसमिस (क्रिस्टमस) की छुट्टियाँ हैं। काफी दिन हुए, उसे देखकर। आँखें तरस रही हैं, उसे देखने के लिए। किसी भी क्षण आ जाना चाहिए उसे।

अग्नि : व्यर्थ ही तड़प रही हो ?.....लाख मना करने पर भी नहीं मानी, उसे अंग्रेजी शिक्षा के लिए भेजा। खुश्की खेत की सारी आमदनी उसीके लिए खर्च होती जा रही है। पिछले साल तो फेल हो गया था। पता नहीं, इस साल क्या हुआ। कहा कि यह अंग्रेजी हमारे मत्थे बदी नहीं तो तो तुम मेरी एक नहीं सुनती। हमारे बडे भाई दिब्बावधानी के लडके को अंग्रेजी सीखने के लिए पार्वतीपुरम् भेजा तो वह ज्वरग्रस्त होकर, तीसरे दिन ही चल बसा। सोच ही रहे थे कि बुच्चब्बी के लड़के को अंग्रेजी सिखाएँगे तो उसकी तबीयत ऐसी बिगड गई कि मरते-मरते बच गया।

वेंक : आप तो सदा ऐसा ही अशुभ बोलते रहते हैं। आप तो पैसे-पैसे के पीछे मरते हैं ! परसों तक हमारी आँखों के सामने, हमारे आंगन में लंगोटी पहनकर खेलता था न नेमानि सुब्बाराव का छोकरा.....अंग्रेजी पढ़कर मुन्सिफ बन गया न !

अग्नि : हमारे छोकरे को पढ़ना-लिखना तो नहीं आ रहा हैं, पुस्तकों और फीजों के लिए.....लगता है हमारी सारी जमीन बिक जाएगी।

---

1. राजा-महाराजाओं द्वारा ब्राह्मणों को दान में दिया गया गाँव।

2. ब्राह्मण लोग स्वयं अपने हाथ से रूई पिरोकर, जनेऊ बना लेते थे।

उसके बाद.....झोली लेकर घर-घर भीख माँगनी पड़ेगी । गाँव में ही रह जाता तो अब तक कुछ तो पुरोहिताई के काम सीख लेता । लाख मना करने पर भी मेरी बात नहीं मानी और उसे अंग्रेजी पढ़ाई के लिए भेज दिया ।

वेंक : हमारा लड़का अंग्रेजी पढ़कर मुन्सिफ बनेगा या पुलिस का जवान.....गाँव की सारी जमीनें खरीद लेगा । सालभर में सौ रुपये खर्च करने के लिए मीन-मेख गिन रहे हैं । जनेऊ पिरोते हुए और मंत्र पढ़ते हुए, अपने समान बैठाने की इच्छा है ? नहीं,..... आप को भार लगे तो मेरे मैके वालों ने मुझे जो जमीन दी है न, उसे बेचकर, लड़के को पढ़ाऊँगी ।

करट : तुम्हारी जमीन क्यों बेचें बहन ! हमारा पैसा खूब खाया है न, वही खर्च भी उठाएगा ।

अग्नि : मेरी अवहेलना करने पर तुली हो ? अब की बार ऐसी बात कही तो तुम्हारे भाई की परवाह न कर.....

(गिरीशम् और वेंकटेशम् का प्रवेश)

वेंक : अरे लाड़ले.....आँखों के तारे.....आ गया रे.....(वेंकटेशम् को गले लगा लेती है ।)

अग्नि : अरे भडुए, इस बार तो पास हो गया ना ? (वेंकटेशम् हक्का-बक्का देखता रह जाता है ।)

गिरी : पास हो गया, फस्ट क्लास में पास हो गया । मैं ने खूब मेहनत करके, पढ़ाया है ।

अग्नि : यह म्लेच्छ कौन है ?

गिरी : डैमिट ! टेल मैन (Damn it, tell man)

अग्नि : क्या बकवास कर रहा है ? एक थप्पड़ मार, दाँत उखाड़ दूँ ?

वेंकटे : (थर-थर काँपते हुए, माँ की ओर देखकर) माँ, ये ही मुझे पढ़ाने वाले मास्साहब हैं ।

करट : घर पर कोई मान्य व्यक्ति आया तो बेसिर-पैर की बातें क्यों करते हो जेठ ! उन्होंने लड़के से अंग्रेजी में कुछ कहा तो तुम अपने कंधे क्यों टटोल रहे हो ?

(गाडीवान समान उठा लाकर रख देता है ।)

गिरी : (करटक शास्त्री से) आपके जेठ हैं क्या ये अवधानी जी ? आप मुझे पहचान नहीं पा रहे होंगे । लेकिन आप जब डिप्टी कलेक्टर साहब के घर आते-जाते थे, मैं उनके लड़कों को पढ़ाया करता था । ओह, डिप्टी कलेक्टर आपकी तारीफ करते थकते नहीं थे।

करट : हाँ, लगता है, कहीं आपको देखा है । डिप्टी कलेक्टर.....वे तो बड़े उदार और सज्जन थे ।

गिरी : वे कहा करते थे कि आपके समान छप्पन भाषाओं को जानने वाला दूसरा कोई नहीं है, आप तो धारा-प्रवाह संस्कृत बोलते हैं और आप जैसे विदूषक को कहीं देखा नहीं है ।.....उनके समान कविता के मर्म को जानने वाला दूसरा कौन है ? मेरी कविता सुनने के लिए वे हमेशा लालायित रहते थे । मुझे महाराजा के दर्शन का अवसर भी दिलाया है ।

अग्नि : (आग बबूला होते हुए) ये बेसिर-पैर की बातों से मुझे कोई काम नहीं है । इसका ढंग देखें तो लगता है कि यहीं ठिकाना जमा देगा । हमारे घर में भोजन की व्यवस्था कतई नहीं होगी।

वेंक : उनकी बातों पर ध्यान मत दो बाबू ! उनका ढंग ही ऐसा है। आपकी कृपा से हमारा लड़का कुछ पढ़-लिख पाएगा तो आपको जिन्दगी भर याद रखूँगी ।

गिरी : उसमें मुझे तकलीफ ही क्या है माई ! आपके लड़के ने बहुत आग्रह किया कि हमारे गाँव आकर मुझे पढ़ाइए तो सोचा, काम का लड़का है, चला आया । वरन् शहर में मुन्सिफ के घर का भोजन और वेतन कड़ुए लगे क्या जो यहाँ चला आया ?

वेंक : पढ़ाई के लिए लड़के को शहर भेज, अकेले यहाँ रहना, उसका पराये स्थान पर मुसीबतें झेलते रहना.....मेरे प्राण तो हमेशा वहीं रहते हैं । पैसे की कभी परवाह नहीं की ।.....हम ने उसे जनम भर दिया, अब आप ही उसके माँ-बाप हैं । जिम्मेदारी आपके कंधों पर है, उसे पढ़ाने की ।

गिरी : आपको इतना सब कहने की क्या जरूरत है माई ! मेरे बारे में अपने लड़के से ही पूछकर, पता लगा लीजिए । मुन्सिफ और डिप्टी कलेक्टर ने मुझे खोज निकाला था । अपने बारे में मैं स्वयं क्या कहूँ ? इतना क्यों, तीन साल तक मेरे पास छोड़ दीजिए, क्रिमिनल में पुलीस की परीक्षा पास करा दूँगा ।

अग्नि : तीन साल !.....अरे इस साल पुस्तकों के लिए कितना खर्च होगा रे ?

वेंकट : पन्द्रह रुपये ।

अग्नि : एक दमड़ी नहीं दूँगा । लगता है, ये दोनों मिलकर, वह पैसा बाँट खाएँगे । मैं ने सारे वेद पढ़ लिए हैं, एक दमड़ी खर्च किए बिना । एक पुस्तक तक नहीं खरीदी । यह सब धोखे का जाल लग रहा है ।

करट : (मुस्कुराते हुए) लाख रुपये की बात कही आपने जेठजी !

गिरी : (करटक शास्त्री से) दिस ईज बार्बरस । देखा, जेंटिलमैन अर्थात् सज्जन के साथ कैसी बातें कर रहे हैं ! अब मेरा यहाँ रहना समुचित नहीं है । अब यहाँ से चला जाऊँगा ।

वेंक : अब बस कीजिए । घर पर कोई भी आ जाए, आप ऐसे ही कुछ कहे बिना नहीं रहते । यही मेरे मन को सालता रहता है। .....उनकी बातों का बुरा मत मानिए बाबू । आप कहीं मत जाइए ।

करट : अवधानी ! लड़के को थोड़ा-बहुत पढ़ाने के लिए, इतना आगे-पीछे सोच रहे हो ! बुच्चम्मा को बेचने पर पन्द्रह सौ रुपये मिले थे न, उनका क्या किया ?

गिरी : सेल्लिंग गर्ल्स ? डैमिट !

अग्नि : हर कोई लफंगा कहता है कि मैं ने बेचा है, बेचा है । बेचने के लिए क्या साग-तरकारी है ? अगर वे रुपये न लेता तो पति के मर जाने के बाद उसकी क्या हालत होती ?

करट : 'मर गया' तो क्या उसकी गलती है ?.....अब.....तब मरने वाले के साथ शादी कर दी तुमने ।

गिरी : आप ही हैं अग्निहोत्रावधानी जी ? हमारे यहाँ राजमहेंद्रवरम् में लोग कहते हैं कि इस इलाके में वेद-पाठ में आपकी टक्कर का कोई नहीं है ।

अग्नि : आप राजमहेंद्री के हैं ? अरे, यह बात पहले ही क्यों नहीं बतायी ?.....रामावधानी कैसे हैं ?

गिरी : कुशल-मंगल से हैं । वे मेरे सगे मामा हैं ।

अग्नि : अरे, यह तो बताया ही नहीं !

गिरी : जब कभी इस इलाके की चर्चा होती है, तो हमारे मामा आपका उल्लेख बराबर करते हैं ।

अग्नि : वे हमारे अच्छे मित्र हैं । देखा, मेरा कुछ प्रथम क्रोध है । आपका परिचय नहीं था । जो कुछ कहा, उसे भूल जाइएगा ।

गिरी : उसमें क्या है ? आप जैसे बड़ों की बातें, हम जैसे छोटे लोगों के लिए आशीर्वाद के समान हैं ।

करट : (अपने में) इतने दिनों के बाद हमारे अवधानी को योग्य गुरु मिला है !

अग्नि : सुनिए, आप का क्या नाम है ?

गिरी : मुझे गिरीशम् कहते हैं ।

अग्नि : देखिए गिरीशम् जी, यह करटक शास्त्री सिर-फिरा आदमी है। अच्छे-बुरे के बारे में सोचता ही नहीं ।.....दामाद मर गया तो कितना लाभ हुआ ! उसकी जमीन-जायदाद पर दावा दायर कर

दिया न ! मैं ने इस बीच एक पिटीशन दाखल कराया था, उसपर जो आर्डर निकाला गया, उसे जरा पढ़ सुनाइए । (कमरे के भीतर जाता है और एक कागज लाकर गिरीशम् को देता है।)

गिरी : (देखकर) लगता है कि किसी अपढ़ गुमाश्ते ने लिखा है । लिखावट पढ़ी ही नहीं जा रही है ।

अग्नि : हमारे वकील ने तो आदि से अंत तक पढ़ डाला था ।

गिरी : मैं भी पढ़ सकता हूँ । उनसे धारा प्रवाह पढ़ सकता हूँ । लेक्चर देने वाला पंडित हूँ, यह मेरे लिए बाएँ हाथ का खेल है । लिखने वाले की अकलमंदी को देख खुशी हो रही है । तो क्या सरल-सुबोध भाषा में इसका अनुवाद करने का आदेश है ?

अग्नि : और क्या चाहिए ? (अपने-आप) एक पैसा खर्च किए बिना इससे सभी कागजों का अनुवाद करा लूँगा ।

गिरी : और भी कुछ अंग्रेजी के कागज़ात हैं तो मुझे दे दीजिए । अनुवाद कर दूँगा ।

अग्नि : अच्छा, दे दूँगा ।

वेंक : बाबू, आप और मेरा लड़का थोडी देर अंग्रेजी में बातचीत कीजिए । सुनने की बड़ी इच्छा है ।

गिरी : ठीक है अम्मा !

My dear Venkatesam माइ डियर वेंकटेशम्–

ट्विंकिल ! ट्विंकिल ! लिटिल स्टार,

हाउ ऐ वंडर यू आर !

वेंकट : देर ईज ए व्हैटमैन इन द टेंट ।

गिरी : द बॉय स्टुड ऑन द बर्निंग डेक, व्हेर ऑल बट ही हेड फ्लेड।

वेंकट : अपॉन द सेम बेड अंड ऑन द सेम साइड ऑफ इट, दि साइड्स ऑफ ए ट्रपीजियम ऑर ईक्वल टु वन अनेदर ।

गिरी : ऑफ मेनूस फर्स्ट डिसओबीडियन्स अंड द फ्रूट ऑफ दट मेनूगो ट्री, सिंग, वेंकटेश, मै वेरी गुड बाय ।

वेंकट : नाउन्स एंडिग इन फॉर छेंज देर 'यफ' ऑर 'फि' इन्टु 'व्ज' ।

अग्नि : इन बातों का मतलब क्या है जी गिरीशम् ?

गिरी : इन छुट्टियों में क्या-क्या पढ़ना चाहिए, कैसे पढ़ना चाहिए, इसी के बारे में बातें कर रहे हैं ।

करट : अरे वेंकट, एक तेलुगु पद्य सुना रे ।

वेंकट : 'पोगचुट्टकु सतिमोविकि' (चुरुट के लिए और नारी के अधर के लिए)

करट : शाबाश !

गिरी : डैमिट, डोंट रीड दट (धीरे से) 'नलदमयंतुलिद्दरु' वाला पद्य पढ़ो ।

वेंकट : 'नलदमयंतुलिद्दरु मनः प्रभवानल-दह्यमानुलै सलिपिरि दीर्घ वासर निशल् (मन में उत्पन्न अनल से दह्यमान होकर, नल और दमयंती ने लंबे-लंबे दिन और रात तपस्या की)

करट : हाँ, हाँ....... मनःप्रभवानल का अर्थ क्या है रे ?

वेंकट : (छत की ओर ताकते हुए चुप रहता है ।)

गिरी : छोटे बच्चों को ऐसे कठिन पद्य का अर्थ समझ में कहाँ आता है ?

अग्नि : पद्यों का अर्थ समझाते नहीं क्या ?

गिरी : अब तो वेद के समान कंठस्थ करा देते हैं । गोरे लोगों के स्कूलों में तेलुगु पद्यों का कोई महत्व नहीं है । जब देखिए तब जागर्फी, गीगर्फी, अर्थिमैटिक, आल्जीब्रा, मैथमैटिक्स-ये ही पढ़ाते-पढ़ाते तंग कर देते हैं ।

करट : (अपने आप) वाह, बड़ा बातूनी निकला, इसे जल्दी बिदा न कर दें तो धोखे में पड़ जाएँगे ।

अग्नि : इतना सब कुछ पढ़ाते हैं ?

गिरी : फिर क्या समझ रहे हैं ? आपके लड़के के समान होनहार बालक के लिए पलभर फ़ुरसत नहीं मिलती ।

अग्नि : ठीक कहा ! ऐसा ही पढ़ना चाहिए । खेल-कूद से मन हटा दें तो हमारा लड़का खूब पढ़ सकता है ।

गिरी : मेरे पास खेल-कूद का नाम तक नहीं ले सकते । पुस्तक हाथ में ली तो उंगलियाँ पुस्तक से चिपक जानी चाहिए । ऐसा पढ़ाता हूँ।

अग्नि : अगर ऐसा करेंगे तो हमारा लड़का सभी परीक्षाओं में पास हो जाएगा ।.....एक पैसा खर्च किए बिना उसकी शादी करने का अवसर भी मिल गया है ।

वेंक : आपका स्वभाव ही कुछ क्रोध का है । वरन् आपके मन में अपने छोकरे पर प्रेम नहीं है क्या ? शहर में जब शीतला का प्रकोप हुआ, तब आपने लिखा था न कि छुट्टी लेकर आ जाओ । बिना पढ़ाए, बिना शादी कराए कैसे रहा जा सकता है ?

करट : बिना पैसा खर्च किए लड़के की शादी करोगे ? वाह, इसे लड़कियों को बेचने का धंधा समझ रखा है क्या ? पन्द्रह सौ दिए बिना इस छोकरे को कोई अपनी बेटी नहीं देगा ।

अग्नि : तुम्हीं देखोगे कि एक पैसा खर्च किए बिना वेंकट की शादी कैसे करूँगा ।.....रामचन्द्रापुरम् में लुब्धावधानी को जानते हो न ?

करट : नहीं तो ।

अग्नि : वे लखपति हैं । अठारह सौ में सुब्बी (सुब्बम्मा) को माँगने आए। दोनों तरफ के खर्च उनके । कहा, धूमधाम से शादी करेंगे । बच्ची को ले जाकर, वहाँ शादी करा देने में, हमारे लिए एक पैसा भी खर्च नहीं होगा, अठारह सौ बचेंगे, उनसे वेंकट की शादी करवा दूँगा ।

वेंक : दूल्हे की उम्र ?

अग्नि : उससे क्या मतलब ?.....यही पैंतालीस.....
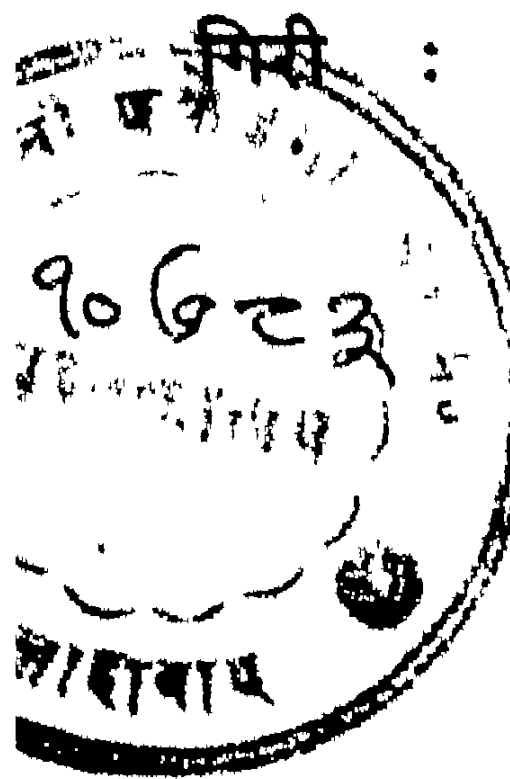
गिरी : लुब्धावधानी जी मेरी बडी चाची की संतान हैं । आपके साथ रिश्ता..... यह जानकर खुशी तो हो रही है, लेकिन वे तो साठ पार कर चुके हैं । उनकी उम्र कुछ भी हो.....सेल्लिंग गर्ल्स अर्थात् कन्याशुल्क ! डैमिट, बिलकुल अन्याय है । जब मैं पुना में था, मैं ने इस विषय पर चार घंटे तक लगातार भाषण दिया था । अगर आप फुरसत से बैठ जाएँ, मेरी बातें सुनें तो आप भी समझ जाएँगे कि यह बिलकुल अवैध है ।

करट : जेठजी, यह रिश्ता तय करोगे तो घर में आग लगा दूँगा ।

अग्नि : अरे इसकी ....हर कोई भडुआ मेरे घर में बैठ, मेरा खाते हुए मेरी निंदा करे ! जाओ, बात पक्की कर दी । अब भाड़ में जाओ ।

वेंक : मुझसे कहे बिना ही ?

अग्नि : लुगाइयों से मशविरा क्या ? यह शादी नहीं की तो मैं (उठकर जाता है ।)

करट : आहा, कैसी बात ?

वेंक : दद्दा (भाई)! यह शादी हो गई तो मैं कुएँ में या नदी में डूब मरूँगी । बड़ी को छाती पर अंगीठी के समान रखे जी रहे हैं। अंग पर इतनी उम्र आई पर इनको बाल-बच्चों के सुख-दुख की कोई चिंता नहीं । इस अभागे रिश्ते को तय कर आए हैं । चाहते हो कि मैं जिंदा रहूँ तो इस रिश्ते को रद्द करा दो ।

करट : असंभव-सी बात को मेरे कंधों पर डाल दिया । एकदम जिद्दी मूरख........। मना करेंगे तो और भी सिर चढ़ेगा । मैं क्या कर सकता हूँ ? कैसे तुम्हें तसल्ली दूँ ? कुछ भी नहीं सूझ रहा है ।

गिरी : माई, आपको सोच क्यों ? अवधानीजी फुरसत से बैठ जाएँ तो एक घंटेभर में उन्हें समझा दूँगा कि पैसा लेकर बूढ़ों के साथ लड़कियों की शादी करना नीतिविरुद्ध है ।

वेंक : बाबू! अगर वह आपका भतीजा है, तो उसके पास जाकर उसे समझा दीजिए। आपके पाँव पड़ती हूँ। जिंदगी-भर याद करूँगी।

गिरी : माई, क्या कहूँ ? वह लुब्धावधानी तो महा कंजूस है। उसके लिए लड़की का मिलना ही सब कुछ है। अगर यह रिश्ता छोड़ देगा तो उसकी शादी ही नहीं होगी। अपने आप वह इस रिश्ते को छोड़ेगा नहीं।

करट : बहन, इधर आ। मैं एक उपाय बताता हूँ।

(करटक शास्त्री, उसका शिष्य और वेंकम्मा का प्रस्थान)

गिरी : माई डियर शेक्सपियर ! तुम्हारे पिता तो अग्गिराम है। तुम्हारे घर में किसी में भी उन्हें बस में कर लेने का एलोक्वेन्स नहीं है। देखो, मेरी चालाकी, आज क्या करने जा रहा हूँ ! वह भाषण फाइल से निकालो जिसे वीरेशलिंगम् पन्तुलुजी ने "कन्याशुल्कम्" पर लिखा था। ससुरजी के सामने लेक्चर देने के लिए तलवार और ढाल पैने करने होंगे।

वेंकट : लेक्चर की बात को ताक पर रख दीजिए। इस बात की खुशी है कि आज के दिन बाल-बाल बच गया। आप साथ न आते तो फेइल होने के कारण पिताजी रस्से से चमड़ी उधेड़ देते।

गिरी : ऐसी आफतों से बचना ही अक्लमंदों का लक्षण है। जब किसी डिफिकल्टी का सामना करना पड़े, तब कोई ऐसा उपाय कर डालो जो लाजवाब हो। फिर पोलिटीशियन किसे समझ रहे हो? पूछने वाला कोई नहीं है, इसलिए ऐसे एक गाँव में पड़ा हूँ। हमारी कंट्री (देश) इंडिपेंडेंट बन जाता तो ग्लाडस्टन के समान दिवानगिरी चलाता। क्यों वेंकट, तुम्हारे पिता को देखें तो लगता है कि किताबों के लिए पैसे देगा नहीं। सिगार तो शहर से आधा पैकेट ही लाए हैं। अब करें क्या ?

वेंकट : पिताजी नहीं देंगे तो माँ से माँग लाऊँगा।

गिरी : देखा, तुम्हारी बुद्धि कैसे विकसित हो रही है ! ऐसे ही ट्रेनिंग पाओगे तो आगे चलकर तुम भी बड़े पोलिटीशियन बन जाओगे।

(बुच्चम्मा का प्रवेश)

बुच्च : छोटे, माँ हाथ-पैर धो लेने के लिए कह रही है ।

गिरी : (अपने में) हौ ब्यूटिफुल ! क्वैट अनेक्स्पेक्टेड !

बुच्च : जी, आप कलेवा खाएँगे ?

गिरी : नो अब्जेक्शन एट ऑल । अर्थात् कोई हर्ज नहीं है । परोस दीजिए, यह आया । आते समय, रास्ते में नहर के किनारे संध्या पाठ कर लिया है ।

(बुच्चम्मा जाती है ।)

गिरी : व्हाट ! यह तुम्हारी सिस्टर है ! लगता है, बाल बिगड़ गए हैं।

वेंकट : मेरी दीदी ही है, बालों में तेल नहीं लगाती है ।

गिरी : अरे, बाल बिगड़ जाने का अर्थ है, "विड़ो" हो जाना । तेल-वेल से मतलब नहीं । इतने दिन हुए "विडो मैरेज" पर लेक्चर दे रहा था, कभी तुमने यह बात नहीं बताई । हाय, कितने खेद की बात है कि तुम्हारे घर पर ही एक अनूफार्चुनेट ब्यूटिफुल यंग विडो है । मै हार्ट मेल्ट्स । मैं ही पिता होता तो इसकी "विडो मैरेज" करके शाश्वत कीर्ति प्राप्त कर लेता । (अपने में) वाह कैसी सुंदरता है, कैसी जवानी ! आज तक ऐसा कहीं देखा नहीं है ! सोचा, इस छोटे गाँव में समय बीतेगा नहीं, लेकिन लंबे अर्से तक कैंप डालने का मौका मिलना, मेरी किस्मत की बात है ।

वेंकट : पिताजी मेरी शादी भी कर देंगे ।

गिरी : आज बड़ी शादी हो जाती, बाल-बाल बच गए । इन छुट्टियों में तुम्हारी चमड़ी उधेड़ी नहीं गई तो वह तुम्हारी योग्यता का प्रमाण होगा । खैर, सचमुच की शादी! इतना पढ़-लिखकर, पिता की तय की गई किसी अनजान लड़की के गले मंगलसूत्र बाँध दोगे ? अच्छी, गोरी, खूबसूरत यंग विडो के साथ शादी नहीं करोगे तो ऐ शुड बी अशेम्ड ऑफ यू ।

दूसरा दृश्य

(मंदिर की फुलवाड़ी–मंडप पर बैठा है शिष्य ।)

शिष्य : छः महीने में एक बार पुस्तक हाथ में लें तो पुराने श्लोक और नए श्लोक एक जैसे लगते हैं । अब नए श्लोक को पहचानना मेरे बस की बात है क्या ? किसी ज्योतिषी से पूछकर पता लगाना चाहिए । नहीं तो झट से पुस्तक खोलकर, जो श्लोक दिखाई पडे, उसे पढ़कर सुना दूँगा ।

"मृगाः प्रियालु द्रुममंजरीणाम्"

लगता है, इसे कहीं पढ़ा है, मृग-हिरन दौड़ रहे हैं । वाह, कवि ने कितनी बड़ी बात कही है ! दौडें या न दौडें-किसे चाहिए? कुत्ते और सियार भी तो दौड़ रहे हैं । क्या बिल्लियाँ नहीं दौड़ती हैं ? जीवन के लिए उपयोगी एक भी पंक्ति इस पुस्तक में नहीं है। चार अंकों को जोड़ना, सूद का हिसाब लगाना.....प्च्.....कालिदास को कहाँ मालूम ? वह गोरे साहब की महिमा है ! अरे, गिरीशम्‌जी से पूछकर देखो कि तुम्हारा शहर कहाँ है, कौन-सा पहाड़ कहाँ है, झट से बता देंगे ।

"प्रियामुखं किंपुरुषश्चुम्ब"

अरे, रंडुए ने चूम लिया, कहीं नाक नहीं पकड ली ।

(करटक शास्त्री पीछे से प्रवेश करता है । शिष्य उन्हें नहीं देख पाता)

शिष्य : (अपनी धुन में)

"वर्ण प्रकर्षे सतिकर्णिकारम् ।
धुनोति निर्गन्धतयास्मचेतः ।"

लगता है, इस श्लोक को भी कहीं पढ़ा है । वह कोई फूल........कवि को पसंद नहीं है । अगर उसे पसंद नहीं है तो क्या नुकसान हुआ? हमारे गुरुजी को कुंदुरु की साग पसंद नहीं है । पिछवाड़े में कुंदुरु की बेल है, इसलिए गुरुपत्नी रोज़

कुंदुरु की ही साग बनाती हैं । जिंदा लोगों की पसंदगी और नापसंदगी का यह हाल है तो मरे हुए की इच्छा-अनिच्छा की परवाह क्यों ? इस पढ़ाई को अब छोड़कर, गिरीशम्‌जी के पास थोड़ी बहुत अंग्रेजी सीख लूँगा । अंग्रेजी आती है न, इसलिए वेंकट की आँखें सिर पर चढ़ गई हैं ।

करट : अरे, बचुए........कह क्या रहा है ?

शिष्य : अपना दुखड़ा रो रहा हूँ ।

करट : गुरु जो हूँ..........मुझे भी कुछ बता दे ।

शिष्य : बताने के लिए क्या रखा है ! नाटक में अभिनय के लिए लंबे-लंबे समास, वाक्य आदि बिना अर्थ समझाए ही, मुझसे कंठस्थ कराते हैं; किन्तु चार दिन में एक श्लोक भी समझाने की फुरसत नहीं मिलती आपको । छः महीने में एक बार अग्रहारों में आने पर, पुस्तक निकालने पर मुझे संस्कृत आएगी कैसे ?

करट : अब आगे देखो, कैसे पढ़ाता हूँ, दिन में चार श्लोक.......... हाँ, नया श्लोक पढ़ो ।

शिष्य : "अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराजः ।"

करट : अरे, यह तो प्रारंभ है.......

शिष्य : मुझे आरंभ और अंत दोनों एक से लग रहे हैं ।

करट : (हँसकर) ठीक है, प्रारंभ से ही पढ़ेंगे ।

शिष्य : उससे क्या लाभ होगा ? इस श्लोक का अर्थ ही झूठ है ।

करट : किसने कहा ?

शिष्य : गिरीशम्‌जी ने ।

करट : क्या कहा ?

शिष्य : हिमालय तो दो समुद्रों का दास है । वह लट्टू के समान नहीं है । मैप (नक्शे) में दिखाया उन्होंने ।

करट : भाड़ में फेंको हिमालय को ।..........पहले पुस्तक बंद कर दो और मेरी बात सुनो ।

शिष्य : जी.......(पुस्तक बंद कर देता है ।)

करट : पढ़ाई से क्या मतलब ? यह तो "वित्त करी" है न.......चार पैसे कमाने के लिए है न ?

शिष्य : जी हाँ.......

करट : इन दिनों संस्कृत किसे चाहिए ?

शिष्य : दरिद्र अभागों को ।

करट : ठीक कहा । तुम अंग्रेजी सीखना चाहते हो न ?

शिष्य : वैसा दाता कहाँ है ?

करट : मैं सिखलाऊँगा ।

शिष्य : सच ?

करट : सच........लेकिन एक शर्त पर.....

शिष्य : क्या है वह ?

करट : मेरे सिर पर एक जिम्मेदारी आ पड़ी है । उसे तुम्हें निभाना है ।

शिष्य : मुझे........

करट : हाँ, यह काम.........तुम्हारे ही हाथ होना है । दूसरा कोई नहीं कर सकता । वह काम...........तुम्हें दस दिन के लिए लड़की बन जाना चाहिए ।

शिष्य : विग तो शहर में रह गया न ?

करट : विग की कोई जरूरत नहीं । जूडा बाँधकर, साडी पहना दें तो तुम पंद्रह साल की कन्या जैसा दिखाई दोगे । तुम्हें ले जाकर लुब्धावधानी के साथ शादी करा दूँगा । चार दिन उनके यहाँ होशियारी से रहकर, चौथे दिन भेष बदलकर, भागकर आ जाओ । सचमुच की शादी का मुहुर्त काफ़ी दूर है ।

शिष्य : यह कौन-सा बड़ा काम है ?

करट : ऐसा मत समझो । अति करोगे तो लोगों को संदेह होगा । पकड़े जाओगे तो सिर पर आएगा ।

शिष्य : आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है ।

करट : अगर तुम ने यह काम पूरा कर दिया तो तुम्हारी शादी अपनी बेटी से करके, घर-जमाई रख लूँगा ।

शिष्य : तो ऐसा क़सम खाइए ।

करट : ठीक, यह पुस्तक हाथ में ले क़सम खा रहा हूँ ।

शिष्य : इस पुस्तक पर मेरा भरोसा नहीं रहा है और एक......गिरीशम्‌जी से माँगकर अंग्रेजी की एक पुस्तक लाऊँ ?

करट : इस भूमाता की कसम ।

शिष्य : आप वचन चूक जाएँ तो वह बिचारी क्या करेगी ? खैर, आपका वचन ही पर्याप्त है । वैसा ही करूँगा ।

तीसरा दृश्य

(गिरीशम और वेंकटेशम्‌ का प्रवेश)

वेंकट : रात को कन्याशुल्कम्‌ पर लेक्चर दिया न ?

गिरी : ऐसा-वैसा लेक्चर नहीं.........सिर फिर गया । ....तुम्हारे पितांजी महिरावण के समान हैं । तुम्हारे अंकल करटशास्त्री स्काउंड्रल-सा लग रहा है ।.........खैर, दोस्ती मिला दी है ।

वेंकट : क्या हुआ ? हुआ क्या ? दोस्ती मिलाई ?

गिरी : एक पोलिटिकल महास्त्र का प्रयोग किया.......और

वेंकट : क्या है वह अस्त्र ?

गिरी : सामने वाले की बात की सराहना करना । उसी को तो सम्मोहनास्त्र कहते हैं न ?

वेंकट : लेक्चर देकर हमारे पिताजी को समझाने की जगह, उनकी बात को ही आप मान गए ?

गिरी : कुछ तो करना ही पड़ता है न अपनी हस्ती को निभाने के लिए। ....गहरे सोचने पर लगता है कि "इन्फेंट मैरेज" (Infant-marriage) समुचित ही है ।

वेंकट : अब तक उसके विरोध में बोलते थे न ?

गिरी : कभी-कभी ओपीनियन्स (Opinions) चेंज (Chage) न करते रहें तो पोलिटीशियन नहीं बन सकते ।.......अब यही कहूँगा कि छोटी उम्र वालियों का बूढ़े लोगों के साथ शादी करना समुचित ही है ।

वेंकट : कहीं यह न कह दें कि सुब्बम्मा की शादी लुब्धावधानी के साथ कर देना अच्छा ही है ? अगर यह रिश्ता हो जाए तो मेरी माँ कुएँ में गिर कर मर जाने के लिए तैयार है ।

गिरी : किसी ने कहा कि फेमिनैन्स ऑर फूल्स । कहने वाले बहुत मिलेंगे, पर करने वाले कम । कुएँ में गिरने की बात नान्सेंस है । अगर तुम्हारे पिताजी दो-तीन तोले सोने का गहना बनाकर दें तो चुपचाप पड़ी रहेंगी ।......यह बताओ कि असल में विवाह-कार्य शुभप्रद है या अशुभ ?

वेंकट : शुभप्रद ही है ।

गिरी : वेरी गुड । शुभ है न । किसीने कहा कि अधिकस्य अधिकं फलम्। छोटी उम्र वाली की शादी एक बुड्ढे से कर दें, वह मर गया तो दूसरे के साथ, वह भी मरा तो और एक के साथ...... इस तरह शादी के बाद शादी..... शादी..... इसके पास कन्याशुल्क के रूप में हज़ार, उसके पास हजार......इस तरह पैसे ही पैसे........ रोटी पर घी, घी पर रोटी........ इस तरह कन्या-शुल्क और कन्या-शुल्क........ फायदा ही फायदा होगा और अंत में मुझ जैसे बुद्धिमान के साथ शादी कर दें तो मिलेगा मजा ! इस लोक का सुख पूरा का पूरा । इहलोक का सुख मिला तो मान लो पर-लोक का सुख भी मिल ही जायगा ।

वेंकट : यह क्या ? कन्या-शुल्कम् का समर्थन कर रहे हैं ?

गिरी : लुब्धावधानी के साथ शादी का सबसे अच्छा कारण बताता हूँ। सुनो ।

वेंकट : क्या है वह ?

गिरी : लुब्धावधानी बुड्ढा है, तिस पर सोने की चिड़िया है । दो-तीन

साल में जरूर ही बकेट को लात मार देगा (अर्थात् किक् द बकेट अर्थात् मर जाएगा) भगवान का प्यारा बन जाएगा। बस, तुम्हारी छोटी बहन रिच् विडो (Rich Widow) बन जाएगी। बड़े बनने के बाद तुम उसकी "विडो मैरेज" करके शाश्वत कीर्ति को प्राप्त कर सकते हो। कैसा है प्लॉन (Plan) ? ....खैर, सिगार्स (Cigars) के लिए कुछ कॉपर्स (Coppers)-पैसे कमाए कि नहीं ?

वेंकट : नहीं, सवेरे से माँ आग उगलती बैठी है। पिताजी ने नास बनाने के लिए तंबाकू रखी है न, उसमें से एक उठा लाया हूँ।

गिरी : यह है पोलिटिक्स ! अब तक बताया क्यों नहीं ? सिगार बनाकर, इस मंदिर में बैठकर, सिगार का मजा लें।

वेंकट : मंदिर में सिगार ?

गिरी : सिगार पीना है, सुलगाना है तो मंदिर में ही। इसके धुँए के सामने गुग्गुल, अगरबत्ती आदि किस काम के ? लाओ तंबाकू....... (सूँघकर) वाह, बढ़िया तंबाकू है। सचमुच कंट्री-लाइफ़ में मज़ा है, बेस्ट टुबाको, बेस्ट दही, बढ़िया घी, इसलिए पोयट्स "कंट्री लाइफ़, कंट्री लायफ़" कहकर, उसके लिए तड़पते रहते हैं।

वेंकट : आप भी तो पोयट्स ही हैं न ?

गिरी : यह भी कोई कहने की बात है ? मुझे भी कंट्री-लाइफ़ पसंद है लेकिन विलायत के समान हमारे यहाँ शेपर्डेस (Shepperdess), लव-मेकिंग आदि नही होते। खैर, कहीं-कहीं ग्रास-गरल्स (घसियारी लड़कियाँ) तो होती हैं पर एक डर्टी स्मेल (Dirty Smell)। इसके अलावा मेइडेन्स (Maidens) नहीं होते। लवमेकिंग (Love making) तो विडोस (Widows) के साथ ही करना है, दूसरा कोई चारा नहीं है।

वेंकट : आपने 'विडो' के बारे में पोइट्री लिखी थी ना। उसे सुनाया नहीं।

गिरी : माँगते ही देने पर किसी भी चीज का महत्त्व कम हो जाता है।

इसके अलावा और एक दो साल के बाद ही तुम उस पोएम के रस को समझ सकोगे । फिर भी स्पेशल केस (special case) मानकर, तुम्हें उपदेश दूँगा । कॉपी निकालो और लिख लो ।

The Widow

She leaves her bed at A.M. Four
And sweeps the dust from off the floor,
And heaps it all behind the door,
The Widow !
Of Wondrous size she makes the cake,
And takes much pains to boil and bake,
And eats it all without mistake,
The Widow !
Through fasts and feasts she keeps her health,
And pie on pie, she stores by stealth,
Till the town talk of her wealth,
The Widow !
And now and then she takes a mase,
And lets the hair grow on her pase,
And cares a hang what people prase,
The Widow !
I love the Widow - however she be,
Married again or single free
Bathing and praying
or frisking and playing
A model of saintliness,
or model of calmliness,
What were the earth,
But for her birth ?
The Widow !

इसे मैंने 'रिफार्मर' (Reformer) में प्रकाशित किया था । तो इसे पढ़कर, टेनीसन छाती पीटता रह गया । (सिगार पीना

समाप्त कर) चलो घर जाएँगे, बहुत देर हो गई है। (चार कदम भरते ही, अग्निहोत्रावधानी आते हैं।)

अग्नि : क्योंजी हनुमानजी......... आप का नाम क्या है ?

गिरी : गिरीशम् कहते हैं।

अग्नि : हाँ......गिरीशम्जी, रात को हमने जो चर्चा की थी, उस तरह हम कोर्ट में जीत जाएँगे न ?

गिरी : अगर हम नहीं जीतें तो मैं कान कटवाकर यहाँ से चला जाऊँगा। आपके सोच-विचार साधारण स्तर के हैं क्या ? इसके अलावा, "यतो धर्मस्ततो जयः" के अनुसार न्याय आप के पक्ष में है। बुच्चम्माजी के केस के प्रसंग में जबलपुर हाईकोर्ट का एक जजमेंट (judgement) हमारा समर्थन करता है। हमारे चाचाजी अभी हाल में ऐसे ही केस में जीत चुके हैं।

अग्नि : सब ठीक है, पर इस केस को "काकिनाडा" के कोर्ट में दाखिल करना पड़ा। अपने करटक शास्त्री को भेजा तो उसने तीसरे दर्जे के वकील के हाथ में केस धर दिया। वह तो हमेशा पैसे के लिए लिखता है, पर केस के मामले में एक पंक्ति तक नहीं लिखता। बार-बार जाना चाहें तो दूरी का सवाल है।

गिरी : आप आदेश दें तो स्टीमर पर जाकर, सारा मामला तय करके आऊँगा। हमारे एक चाचा काकिनाडा में सबसे बुद्धिमान वकील हैं। अगर वे केस हाथ में लें तो हारने का प्रश्न ही नहीं उठता।

अग्नि : आपका जाना और मेरा जाना दोनों बराबर हैं। कितना भी फीज़ (fees) क्यों न हो, आपके चाचाजी के हाथ में केस दे देंगे। आपका ख्याल क्या है ?

गिरी : आपके पास फीज......? न न ! आने-जाने का खर्चा दे दें तो बिना फीज के ही काम करा दूँगा।

अग्नि : मुझे मालूम है कि आप ऐसा ही कहेंगे। खैर, केस जीतने के बाद उन्हें अच्छा ईनाम दे देंगे।

गिरी : दें या न दें, बात पक्की।

(बुच्चम्मा का प्रवेश)

बुच्च : बापू, माँ स्नान करने के लिए कह रही है ।

अग्नि : अच्छी बात । (बुच्चम्मा जाती है तो गिरीशम् कनखियों से देखता है ।) भोजन के बाद कागजात आपके हाथ दूँगा । ज़रा फुरसत से देखिए । हमारे घर के दायीं ओर के पडोसी रामावधानी पर common compound wall को लेकर हमने जो दावा दायर किया था, उसे रिश्वत खाकर मुन्सिफ ने खारिज कर दिया । स्माल क्लाज कोर्ट में अपील की तो हमारे वकील ने प्रतिपक्षी के पास से पैसा लेकर, हमारे केस को बरबाद कर दिया । आप जैसे आदमी का सहारा मिल जाए तो उस रामावधानी को छठी के दूध की याद दिला सकता हूँ । दायीं ओर की दीवार पर उसका हक हो तो पछाऊँ दीवार पर तो हमारा हक होना चाहिए न ? आप ही न्याय की बात बताइए । देखिए, उस दीवार पर अपने कमरे की छत खड़ी कर दी ।......वकील ने कहा कि क्रिमिनल (criminal) केस दाखिल करेंगे ।

(दुबारा बुच्चम्मा का प्रवेश)

बुच्च : बापू, जल्दी स्नान करने के लिए माँ कह रही है ।

अग्नि : चुप निगोडी !......कान में जूँ की तरह । बड़े लोगों के साथ कारोबार की बातें कर रहा हूँ तो बीच में आकर सताती क्यों हो ?

गिरी : क्रिमिनल केस तो अवश्य दायर करना चाहिए । क्रिमिनल प्रोसीजर कोड नंबर 171 सेक्शन के अनुसार केस दायर कर दें या सेक्शन 172 के अनुसार ?

अग्नि : दोनों सेक्शन के अनुसार दायर नहीं कर सकते ?

गिरी : इल्लीगल (illegal) प्रवेश और इल्लीगल कब्जा दोनों सेक्शन के अनुसार । इसके अलावा, मैं ने अपनी आँखों से देखा है न । मैं खुद आँखों देखा गवाही भी दे सकता हूँ । यह दीवार तो स्पष्ट रूप से आपकी ही लग रही है ।

अग्नि : इसमें संदेह कहाँ ? इतने दिन चुप रहा । पिछवाड़े की दीवार भी देखें, आइए । अक्काबत की नाक रगड़कर जीत ली है । लेकिन कोर्ट के खर्च के लिए सिरिपुरम् की जमीन को बेच डालना पड़ा । रामावधानी का केस जीत जाता तो उसकी चिंता न रहती ।

(सब का प्रस्थान)

● ● ●

दूसरा अंक

पहला दृश्य

(रामचन्द्रापुरम् में रामप्पा पंतुलु के घर में बैठक का कमरा । मधुरवाणी बैठकर कुछ गुनगुनाती रहती है तो रामप्पा पंतुलु का प्रवेश ।)

मधुर : 'न जानकर धोखा खा गई रे ! धोखा खा गई रे ।'

राम : धोखा खा जाना क्या ? उसके बाद......

मधुर : बाद क्या ? आपका भरोसा किया था, सो धोखा खा गई ।

राम : ऐसा क्यों कह रही हो ? तुम्हें धोखा तो नहीं दिया । बात के अनुसार शहर में दो सौ रुपये दिए । मासिक वेतन पहले ही दे दिया था । अब फिर धोखा कैसा ?

मधुर : कैसी अजीब बातें कर रहे हैं पंतुलुजी ! आप को शायद लग रहा है कि मेरे लिए पैसा ही सब कुछ है । मेरे लिए वह तिनके के बराबर है । अगर मुझे मालूम रहता कि आप के जमीनात पर कर्ज है तो आपसे दो सौ रुपये भी लेती क्या ? आप अपने खर्चे कम करके, किफायत से अपनी घर-गिरस्थी को सुधार नहीं लेंगे तो मैं मानने वाली नहीं । लोग कहें कि फलाने पंतुलु फलानी रखैल (वेश्या) के साथ रहकर सुधर गए तो वह मेरे लिए प्रतिष्ठा की बात होगी । यह हमारे घर की परंपरा है पंतुलुजी! इसको छोड़, हमारे बारे में और कुछ मत सोचिए ।

राम : जमीनात को गिरवी पर रखना तो एकदम झूठी बात है । मुझे किस बात की कमी ? महाराज के समान दिन बिता रहा हूँ ।

मधुर : मेरी नजरों में 'महाराज' जैसे दिखाई पड़े, इसीलिए घर-बार, जान-मान को छोड़ आपके पीछे चली आई हूँ । आपको ही सब कुछ समझ रही हूँ । मुझे धोखा मत दीजिए । वरन् पाप-कूप में फँस जाएँगे ।

राम : मैं धोखा देने वाला थोड़े ही हूँ ।

(हेड-कान्स्टेबिल सिगार फूँकता हुआ कमरे में आता है और कुर्सी पर बैठ जाता है ।)

हेड : रामप्पा पंतुलु ! सुना, इन्स्पेक्टर को ही धोखे में डाल दिया ?

राम : (हेड के कान में) अरे, 'जी' जोडकर बात करो ।

हेड : कभी नहीं कहा 'जी' । आज यह नया संबोधन कैसा ?

राम : जनाना हैं, बस ऐसे ही घुसकर आ जाना वाजिब है क्या ?

हेड : वहुवचन का प्रयोग कर रहे हो । तुम भी उनमें शामिल हो गए क्या ?

राम : मजाक के लिए समय और स्थान चाहिए ।

हेड : मैं मजाक के लिए नहीं आया हूँ । इन्स्पेक्टर का नाम लेकर, सुना है, रामिनायुडु के पास पच्चीस रुपये वसूल किए । पता नहीं, इस तरह कितने लोगों के पास से वसूला होगा । फौरन जाकर, रामप्पा पंतुलु की चुटिया पकड़कर घसीट लाने का आदेश है ।

राम : बचपन में एक चटसार में साथ मिलकर पढ़ चुके हैं । इसलिए उसकी चुटिया पकड़कर मैं खींचूँ या मेरी चुटिया पकड़कर वह खींचे, कोई फरक नहीं । लेकिन रामिनायुडु की बात तो एकदम झूठ है । आप चलिए, मैं घोडे पर आऊँगा ।

हेड : मैं कैसे आऊँ तुम्हारे साथ ? मेरे सिर पर तो कई काम हैं । तुम्हारे साथ एक कान्स्टेबिल को भेज दूँगा ।

राम : (हेड के कान में) तुम्हारा भला होगा, मेरे घर पर यह एक वचन (तुम) का प्रयोग मत करो ।

हेड : यह है क्या तुम्हारा रोना । ठीक है, वैसा ही हो । (जाता है।)

राम : (अपने में) फिर वही एकवचन ।......(प्रकट) कौन है रे वहाँ?

नौकर : (प्रवेश कर) जी हुजूर ।

राम : कह दो......घोडे को तैयार रखें ।

नौकर : जी हुजूर । (जाता है ।)

राम : देखा मधुरवाणी ! मैं जहाँ खड़ा रहूँ, वहाँ रुपयों की वर्षा होती है । इस इन्स्पेक्टर को, यहाँ आने के बाद पाँच-छः हजार दिलाए।......अगवाड़े का किवाड़ बंद करके संगीत का अभ्यास कर लो । विद्या के समान दूसरी कोई वस्तु नहीं है । (चार क़दम रखकर, वापिस आकर) अभी वीणा बाहर निकाली ? इस गाँव में कई बुरे लोग हैं । मेरे सखा और मेरे रिश्तेदार कहते हुए, आएँगे । उन्हें भीतर आने न देना ।......अर्गला लगा लो । (जाता है ।)

दूसरा दृश्य

(वही कमरा । मधुरवाणी वीणा के पास बैठी है । दरवाजा खटखटाने की आवाज ।)

मधुर : (दरवाजे के पास जाकर) कौन हैं आप ? रिश्तेदार हैं ?

(दरवाजे के बाहर करटक शास्त्री और उसका शिष्य)

करट : आफत के समय सहारा देने वाले ही रिश्तेदार हैं । हम आपके रिश्तेदार नहीं हैं लेकिन आप हमारी रिश्तेदार बन सकती हैं।

मधुर : दोस्त हैं ?

करट : (अपने में) यह वेश्या मधुरवाणी तो नहीं है । एक कंठस्वर के समान दूसरा भी हो सकता है । (बाहर) दोस्ती करने के लिए एक ही तो वस्तु है ।

मधुर : क्या है वह ?

करट : स्वर्ण ।

मधुर : आप हमारे पंतुलुजी के दोस्त या रिश्तेदार नहीं हैं तो किवाड़ खोले जा सकते हैं । (दरवाजा खोलती है ।)

करट : अरे, मधुरवाणी है !

मधुर : (नाक पर उंगली रखकर) आश्चर्य है !

करट : किस बात का ?

मधुर : यह भेष ?

करट : 'उदर निमित्तं बहुकृत वेषम्' । यह भी भगवान का दिया हुआ वेष है ।

मधुर : मेरे पास रहस्य ? यह लड़की कौन है ?

करट : मेरी बेटी ।

मधुर : नाटकों में बिगडकर, बहुरूपिया बन गई है क्या ?......भगवान ने खूब दिया है, फिर यह दीनता कैसी ?

करट : तुम्हारी दया से स्थिति-गतियों में कोई कमी नहीं है । तुम्हें देखने के लिए आया हूँ ।

मधुर : मेरे भाग्य, इतने दिनों के बाद सही, इस अभागिन की याद आई।

करट : तुम्हारी बराबरी करने वाली औरत और कौन होगी ? तुम्हें देखना ब्रह्मानंददायक है न ! तुम्हारे पास आना मुझे बुरा लगता है क्या जो इतने दिन से नहीं आया ? सुना, डिप्टी कलेक्टर के लड़के ने तुम्हें अपनाया । तब से, उनके डर के मारे, तुम्हारे पास नहीं आ रहा हूँ । भगवान से कई बार प्रार्थना की कि उनका तबादला हो जाए । खैर, तुम यहाँ कब से हो ?

मधुर : डिप्टी कलेक्टर ने पढ़ाई के नाम पर अपने पुत्ररत्न को मद्रास भेज दिया । उसके बाद दो-तीन महीने तक उन्होंने अपने दोस्त गिरीशम् के हाथ पैसा भेजा । उसके बाद गिरीशम् जी ने मुझे रख लिया लेकिन पैसे की बड़ी तंगी थी । डिप्टी कलेक्टर के भय से कोई नामी आदमी घर पर नहीं आ रहा था । कुछ दिन वहाँ से दूर रहकर, उस बदनामी से बचने के लिए यहाँ आई।

करट : (नाक पर उंगली रखकर) गिरीशम् ने तुम्हें रख लिया ? हमारे भांजे को ट्यूशन पढ़ाने के बहाने हमारी बहन के घर आ गया। जल्दी उससे पिंड छुडाना है ।

मधुर : (नाक पर उंगली रखकर) मेरे पास जो भी आया, वह बिगड़ जाता है क्या ? मेरे पास आने में बाधा पहुँचाई, इसलिए डिप्टी कलेक्टर को गालियाँ सुनाईं थीं न अभी । उनकी अपेक्षा आपका न्याय कौन अच्छा है ? मेरे पास आए हैं न, इस कारण आपकी

पत्नी को चाहिए कि वह आपको दरवाजे पर से ही बाहर ढकेल दे । अपने को रुपैया, दूसरे को पैसा......?

करट : करनी में न हो पर कथनी में तो हमेशा वही सजा मिल रही है ।

मधुर : (मुस्कुराती हुई) यह औरत हमारे पंतुलु की नजरों में पड़ जाए तो वाह, इसकी पोल खुल जाएगी ।

करट : यह क्या कह रही हो ? यह तो अभी कन्या है । इसकी शादी करने के लिए तुम्हारे पास लाया हूँ ।

मधुर : हमारे पंतुलु के साथ ?

करट : 'एकनारी सुन्दरी व दरी वा ।' त्रिलोक सुंदरी तुम मिल गई हो तो अब पंतुलु को शादी की क्या जरूरत ?

मधुर : फिर और किसकी ? मेरी ? तब तो तैयार हूँ । पुरुष का भेष पहन कर, शादी के लिए तैयार हो जाऊँगी । ऐसी पत्नी का मिलना और जगत्प्रसिद्ध करटक शास्त्री का दामाद बनना बड़े भाग्य की बात है । मुझे 'दिव्य सुंदर विग्रह' वाली कहा, सोचा होगा कि इससे मैं फूलकर कुप्पा हो जाऊँगी । ऐसी सुंदरी के सामने हम जैसे तो सूरज के सामने दिए के समान हैं । नारी जिसको सराहे वही सुंदरता है ! पुरुष की आँखों पर परदा पड़ा रहता है । आपको क्या मालूम ?......तब मेरी पत्नी को मुझे देकर, अपना रास्ता नापिये । (शिष्य का हाथ पकड़कर खींचती है ।)

शिष्य : देखा बापू, कैसा पकड़ खींच रही है !

मधुर : (खूब हँसती हुई) वाह रे वाह, यही है क्या बड़े घर का ढंग? पति के बुलाने पर नहीं जाओगी तो अडोस-पडोस के लोग क्या कहेंगे ?

शिष्य : शायद मार ही डालेगी । बापू, चलो, घर चले जाएँगे ।

मधुर : वाह री कितनी भोली हो! शादी तो बाद में कर लूँगी । पहले एक बार चूम तो लूँ । (चूम लेती है ।)

करट : भोली और अनजानी लड़की को बिगाड़ दे रही हो ।

मधुर : मुझ जैसी सौ लोगों को सिखाकर, बिगाड़ सकता है । यह आखिर किसका शिष्य है ? इस कन्या के मुख से कुछ चुरुट की गंध आ रही है ।

करट : अच्छा, यह बात है । इसीलिए डिब्बे में से अक्सर चुरुट गायब हो रहे हैं ।......मधुरवाणी । भगवान ने मुझे तुम्हें बताया है। ऐसा समय देखकर आया, जब पंतुलु घर पर नहीं है । उसके लौट आने से पहले मेरी बातें सुनकर, हमें आफत से बचा दो।

मधुर : बात क्या है ? मैं क्या सहायता कर सकती हूँ ?

करट : मामला बड़ा पेचीदा है । सुनो, इस गाँव में गिरीशम् का भतीजा, बुड्ढा लुब्धावधानी है न । हमारी भांजी की शादी उसके साथ करने के लिए हमारे जेठ ने तय किया है । अगर यह शादी हो जाए तो मेरी बहन ने कुएँ में गिरकर जान दे देने की कसम खाई है । पता नहीं, क्या करोगी । मेरी बहन के प्राण बचाओ।

मधुर : इस कन्या को उससे कम में बेच दें तो लुब्धावधानी खुशी-खुशी इसके साथ शादी कर लेगा । वहाँ तक क्यों ? मैं ही खरीद लूँगी ।

करट : तनिक रास्ता बताने पर, पार पहुँच जाने वाली तुम्हें और ज्यादा क्या बताऊँ ?

मधुर : अब तय-शुदा रिश्ते को किस बहाने इनकार करा दें ?

करट : तुम्हारी बुद्धि के लिए असंभव कुछ है क्या ? पैसे के सामने असंभव कोई बात है ?

मधुर : बुद्धि के लिए सब कुछ असंभव है, पर पैसे के लिए असंभव कुछ भी नहीं है ।......हमारे पंतुलु का विचार है कि इस शादी से कुछ फायदा (इस रुपट्टे) होने वाला है ।

करट : मेरा संबंध करा दें तो मैं बीस रुपट्टे दूँगा ।

मधुर : ठीक है, नाटक में कितना भी हास्य हो फिट बैठेगा पर सच्चे अभिनय में हास्य को लाएँगे तो जान पर आ जाएगी । सोचा है?

करट : बीच में तुम्हें क्या और मुझे क्या ? दाढी-मूँछ कटवाकर, अपने रास्ते जाऊँगा । साड़ी तुम्हारे पास फेंककर मेरा शिष्य चला जाएगा । उसके बाद इस अजीब काम को देख-सुन, तुम भी चार लोग-लुगाइयों के साथ, दाँतों तले उंगली दबा लेना । पंतुलु को सिफारिश कर, इस मंत्र को सफल बनाने के उपाय के बारे में सोचो ।

मधुर : अकेले पंतुलु से यह काम नहीं हो सकेगा ।

करट : तो फिर बताओ, और किसके पैर पकड़ने होंगे ?

मधुर : पंतुलु से बात करने के बाद, लुब्धावधानी की बेटी, मेरी दोस्त मीनाक्षी से अकेले में कहिए कि दो सॉवरीन दूँगा । उसके बाद पुरोहित (सिद्धांति) से मिलकर उन्हें भी लालच में डाल दीजिए। इस काम के लिए सिद्धांति ही मूल में है । मैं परदे के पीछे रहकर, समय के अनुकूल, काम करूँगी ।

करट : तुम्हारी बात......अलग से कहने की क्या जरूरत ! तुम्हें खुश करना मेरा कर्त्तव्य है ।

मधुर : आपकी यह बात मेरे लिए दुखदायक है । मैं पेशे से वेश्या हूँ, इसलिए जहाँ, द्रव्याकर्षण करना हो, वहाँ पैसा खींच लेती हूँ। पर यह मत सोचिए कि मधुरवाणी में दया-अनुकंपा नहीं है । आपकी बहन के सिर पर आफत आई हो तो मैं पैसे की आशा करूँ ? हेड कान्स्टेबिल को तो कुछ सच-सच बताएँगे । वह अभी आएगा । उससे बात करूँगी । आप यहीं बैठे रहिए ।

करट : अपना ही आदमी है न ! कहीं डुबो तो नहीं देगा ?

मधुर : गुलाम है । (जाती है ।)

करट : चलो बैठेंगे ।

शिष्य : मेरा नाम क्या है ?

करट : अरे यह क्या......? सुब्बी, सुब्बी है । क्या मधुरवाणी को देखते ही अकल चरने गई ?

शिष्य : सोच रहा हूँ, उसकी हँसी को सीख सकूँ ।

करट : 'सब्बु' (साबुन) शब्द याद रहे तो 'सुब्बी' नाम याद रहेगा ।

(रामप्पा घोड़े को दूर पर छोड़, कमरे में आता है ।)

राम : (करटक शास्त्री से धीमी आवाज में) कोई भीतर गए हैं क्या?

करट : (जोर से) कोई दो-तीन लोग आए तो थे लेकिन आपकी घरनी ने डाँट सुनाकर भेज दिया ।

राम : आप कौन हैं ? क्यों आए हैं ?

करट : कृष्णा-तट का निवासी हूँ । मेरा नाम गुन्टूरु शास्त्री है । आपके पास एक जरूरी काम से आया हूँ ।

(बाहर से आवाज आती है पुलीस जवान की । 'इन्स्पेक्टर ने कहा कि मेरे आने तक पेड़ के नीचे घोडे को खड़ा रखेंगे । जल्दी से रुपये दीजिए ।')

(मधुरवाणी का प्रवेश)

राम : कौन आए थे ?

मधुर : कौन आएँगे ? आपके दोस्त थे । भगा दिया ।

बाहर से जवान : रुपये दिलाइए ।

राम : (मधुरवाणी से) वे रुपये कहाँ हैं जो मैं ने तुम्हें दिए थे ? शाम तक लौटा दूँगा । यह शैतान जान खा रहा है ।

मधुर : 'वे'......उन्हें तो शहर भेज दिया । मैं रुपये यहाँ रख लूँ तो वहाँ मेरी माता का......?

राम : झूठ......सरासर झूठ ।

मधुर : (चाबियों का गुच्छा पंतुलु पर फेंककर) खुद देख लीजिए ।

राम : (कंधा सहलाते हुए) इतना दुरहंकार ठीक नहीं है । सोचती हो, चोट लगेगी नहीं ।

मधुर : कड़वी बातें कहने पर चोट नहीं लगेगी क्या ?

बाहर से जवान : ओ पंतुलुजी, जाकर इन्स्पेक्टर से कह दूँ ?

मधुर : कितना देना है ?

राम : सिर्फ पच्चीस ।

करट : मैं दे दूँगा । (जवान को देता है ।)

राम : हाथ में धन-रेखा है तो पैसा इस तरह आता रहता है । क्या खास काम है आपका ?

करट : यह मेरी पुत्री है । इसका विवाह कराकर, पुण्य कमाइए ।

राम : विवाह कराने के लिए मैं वैदिकी पुरोहित नहीं हूँ । मुझे मंत्र-पाठ नहीं आते । (चुरुट निकालकर, उसके छोर को दाँतों से कुतरकर) क्यों मधुरवाणी ! काड़ी की डिब्बी ।

मधुर : (काड़ी की डिबिया देती हुई, पंतुलु से शिष्य की ओर और शिष्य से पंतुलु की ओर तुनक कर देखती है ।)

करट : मंत्र कहने पर वैदिकी का मंत्र कौन बड़ा है । इन दिनों वैदिकी मंत्रों की कोई महिमा नहीं रही है । मंत्र कहें तो नियोगी[1] प्रभु का मंत्र ही है । आप जैसे सुयोग्य व्यक्तियों के मुख से मंत्र बोलता है ।

राम : क्यों मधुरं ! इस लड़की से शादी कर लूँ ?

मधुर : (पंतुलु और शिष्य की ओर क्रोध से देखती हुई, निकल जाती है ।)

राम : सुंदरियों के लिए क्रोध भी एक प्रकार का अलंकार है न! क्या कहते हैं शास्त्री जी ?

करट : वैदिकी लोग जो हैं ! हम क्या जानें ? हमारी घरनियाँ क्रोध आने पर झाड़ू लेकर खड़ी हो जाती हैं । सरस-शृंगार के बारे में पुस्तकों में पढने के सिवा वह हमारे लिए अनुभव की बात नहीं है । भगवान श्रीकृष्ण राधिका से यों बोल रहे हैं :– हे राधिके! अपने क्रोध का उपसंहार करो न! 'घटय भुजबंधनं रचय रदखंडनं, येनना भवति सुखजालम्' । अर्थात् ऐसे गाढालिंगन में आबद्ध कर दो, इस तरह होठों को कुतर दो कि खून निकल आए । वाह क्या कहा कवीश्वर ने ?

राम : (मधुरवाणी जिस दरवाजे से गई, उस ओर देखते हुए) बिना किसी मूल के ही आफत ।......ये बेतुकी कवितांएँ मधुरवाणी

---

1. ब्राह्मणों की एक शाखा जो दीवनागिरी और पटवारीगिरी जैसे काम, राजा से नियुक्त होकर करती है ।

को मत सुनाओ । मुझ जैसे नाजुक स्वभाव वाले ऐसी शृंगार-चेष्टाओं को बरदाश्त नहीं कर सकते ।

करट : यह आपकी धर्मपत्नी नहीं है ? धर्मपत्नी की अपेक्षा संस्कारवान लग रही है यह वेश्या । वाह, बड़े किस्मत वाले हैं आप!

राम : चुनने में है, सब कुछ चुनने में है! अपना खास काम......अब तक बताया नहीं ।

करट : सुना, लुब्धावधानी आपके अच्छे मित्रों में से हैं । सुना, वे आपकी बात कभी टालेंगे नहीं ।

राम : उस लफंगे से दोस्ती कैसी ? उस मक्खीचूस को पैसा ही सब कुछ है । उसकी दोस्ती तो पैसे से है, और किसी से नहीं । फिर भी दुनियादार न होने के कारण और अदलातों के भय के कारण, मेरी सहायता के बगैर नहीं रह सकता । उसकी बात ही क्या, इस तालूके में कोई सिविल मैजस्ट्रीट हो, रामप्पा पंतुलु की सहायता के बगैर काम नहीं चला सकता ।

करट : यह सुनकर ही और यह जानकर कि आप नियोगी प्रभु हैं, मंत्र-तंत्र बल से काम निभा लेंगे, आपको ढूँढता हुआ आया हूँ । हमारी चाची का लड़का बी.ए., बी.एल. हो गया है, डिप्टी कलेक्टरी कर रहा है । रिश्तेदारों को उससे तनिक भी सहायता नहीं है । इतना ही नहीं, कोई सज्जन गृहस्थ उसके घर पर साग-तरकारी या और कुछ भेजे और उसकी माँ या पत्नी उन्हें ले ले तो, जब तक उन्हें वापिस भेजा नहीं जाए, वह भोजन किए बगैर रह जाता है। देना या लेना आप जैसे नियोगी प्रभुओं को ही आता है । हम जैसे लोगों की नौकरियाँ व्यर्थ की चीज़ें हैं । किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि पौरुषवान को मूँछें शोभा देती हैं, अन्यथा झींगे की मूँछों के समान हैं ।

राम : इस अंग्रेजी पढ़ाई के प्रचार से, वैदिकियों को क्या, सब तरह की जातियों के लोगों को नौकरियाँ मिल रही हैं । ख़ैर, कितना भी पढ़-लिख लें, आप वैदिकी अध्यापकों को हमारी जैसी दुनियादारी कहाँ

से आएगी ? हमारी दुनियादारी तो सहजात है । आपकी तो सीखी हुई है । बाहर से थोपी चीज तो अलग होती है न! रिश्वत लेना न जानकर, आपके लोग 'पतिव्रता' बनने का अभिनय करते हैं ।

करट : अगर हमारे लोगों को दुनियादारी आती तो मेरी यह दुःस्थिति क्यों होती ? अगर हमारा भतीजा चार लोगों से कह देता तो मुझे इन मुसीबतों का सामना करना क्यों पड़ता ?

राम : कैसी मुसीबतें ?

करट : ऋण-बाधा बहुत अधिक है । अगली पूर्णिमा तक एक दस्तावीज़ के पैसे न भरूँ तो कोर्ट जाना पड़ेगा । इस लड़की को 'नल्लबिल्ली' में वेंकटदीक्षित जी के हाथ सोलह सौ में बेचने का निर्णय हुआ। ऐन मौके पर उन्होंने कहा 'रुपये अभी नहीं दे सकते, शादी होने के एक महीने के भीतर दे देंगे' । इसलिए उस रिश्ते को छोड़ दिया। यह सुना कि लुब्धावधानी शादी करने के लिए कन्या ढूँढ रहे हैं। तो सबसे पहले आपके दर्शन करने आया हूँ । अगर आप यह काम करा दें तो आप के चरणों में दस मुहरें समर्पित कर लूँगा।

राम : मैं चालीस-पचास की झंझटों में फँसने वाला नहीं ।

करट : आप जो सहायता करेंगे, उसके लिए मैं कुछ भी समर्पित कर सकता था । किंतु सोलह सौ का कर्ज सिर पर है । उससे अधिक जो कुछ भी मिले, आप ले लें, मुझे कोई हर्ज नहीं ।

राम : 'होगा तो, मिलेगा तो' ऐसी बातें हमें पसंद नहीं हैं । अग्निहोत्रावधानी को अठारह सौ दे रहे हैं न । उसमें आधा करने पर । लुब्धावधानी का मामला काफी हद तक तय हो गया है । दस दिन पहले आते तो कुछ किया जा सकता था । इस रिश्ते की बात सबसे पहले मैं ने ही की थी । बाद में पोलिसेट्टि ने मेरे हाथों से छीन लिया। बड़ी मुश्किल से 'मेजबानी'[1] के लिए मधुरवाणी को मनाते-मनाते मेरी नानी याद आई ।......एक सौ रुपये मेरे फीज के लिए देकर, बाकी खर्चे संभाल लीजिए । मामला चलाऊँगा ।

---

1. शादी के समय वेश्याओं के नृत्य-गीत का कार्यक्रम ।

करट : अपने यात्रा-खर्च के लिए लाए रुपये आपको समर्पित कर दिए हैं। अब सिर मुँड़वाने के लिए एक पैसा भी नहीं है । अदालतों में जाने-आने के लिए मेरे पास कुछ तो होना चाहिए । यह गले में फँदा जैसी पड़ी हुई है । इसे लेकर अदालत में कैसे जाऊँ ? मैं इस बात पर विश्वास नहीं करता कि आपकी दुनियादारी के लिए कोई बात असंभव है । किसी भी तरह उस रिश्ते को रद्द करा दीजिए, हमारा रिश्ता तय करा दीजिए, जो भी मिले उसमें दस प्रतिशत आप लीजिए और बची रकम ही मुझे दिला दीजिए ।

राम : दस प्रतिशत से काम नहीं चलेगा । हम हमेशा आधे पर ही बात करते हैं ।

करट : इस पापी रकम पर ही आप को......

राम : पापी रकम हमारे हाथों में आते ही पवित्र बन जाती है । यह तो औरों को देने के लिए है, मेरे लिए थोडे ही है!

करट : ठीक है, वैसा ही होने दीजिए ।

राम : अब मेरे कौशल को देखिएगा । मधुरं! मधुरं! कागज, कलम दवात ले आ ।

मधुर : (भीतर से) मुझ से अधिक मधुर मिल गया तो अब मेरी क्या जरूरत ?

राम : स्त्रियों के मन में संदेह-भूत जमकर बैठा रहता है । सुन रहे हैं न! यह एक सरसोक्ति है ।

करट : खरा हीरा प्राप्त किया है!

राम : हीरा तो है ही, लेकिन शहर में रह आने के कारण चार लोगों से बातें किए बिना उसे चैन नहीं आता ।

करट : उतनी स्वतंत्रता देना ही उचित है । औरत को ज्यादा पाबंदियों में रखना भी ठीक नहीं है ।

राम : करेगी क्या ?

करट : ऐसी मान-मर्यादा वाली औरत हो तो कहीं कुएँ में या नदी में कूद मरेगी ।

राम : ऐसा ?

करट : इसमें संदेह क्या ? नाजुक मन वाली औरत को फूल के समान देखना चाहिए ।

राम : ये सब आपको कैसे मालूम ?

करट : पुस्तकों में जो पढ़ा है । नायक के निरादर करने पर नायिका ने पुष्पोद्यान की लताओं से फाँसी लगा ली । महाकवियों ने अपने नाटकों में ऐसा ही लिखा है ।

राम : और किसी से बातें करें तो कोई परवाह नहीं । आप ही उसे समझाइए कि उस हेड कान्स्टेबिल से बातें न करे । आप तो पिता के बराबर हैं न । आप की बात मानेगी ।

करट : थू! ऐसी किस्मत! मेरे ऐसी लड़की होती तो तीन-चार हजार में बेचकर, ऋणभार से मुक्त हो जाता । इसे ही चार जगह दिखाता तो दो-तीन हजार हाथ में आ ही जाते । अपने निकट के रिश्तेदार से शादी कराने की जिद पर बैठी रही मेरी घरवाली । उसीके कारण यह दुर्दशा......। इसीलिए घर में कहे बगैर लड़की को साथ लेकर इधर चला आया हूँ ।

राम : मेरी तरफ से कोई चूक नहीं होगी ।

करट : तब तो काम पूरा हो गया, समझिए ।

राम : अरी कहाँ हो ? इधर आ, हाथ बता ।

(शिष्य भय का अभिनय कर पीछे हटता है ।)

करट : हाथ दिखा दे अम्मा! डरने की कोई बात नहीं ।

(करटक शास्त्री शिष्य को रामप्पा के पास ढकेलता है । रामप्पा हाथ पकड़कर, हथेली देखने लगता है । शिष्य अपना हाथ खींच लेने का अभिनय करता है । मधुरवाणी दवात, कलम, कागज लाकर, रामप्पा के पीछे खड़ी हो जाती है ।)

राम : वाह, कैसी धनरेखा.....वाह.....संतान-योग्यता भी खूब है ।

मधुर : आप हाथ पकड़ लें तो किस बात की कमी रहेगी? (कहती हुई, दवात की स्याही रामप्पा के मुख पर डालकर, झट भीतर चली जाती है ।)

दूसरा दृश्य

(कृष्णरायपुरम् में अग्निहोत्रावधानी का घर अगवाड़े में खड़ा गिरीशम् मंद स्वर में कुछ गुनगुनाता रहता है ।)

(पिछवाड़े में अमरूद के पेड़ पर बैठकर, वेंकटेशम् अमरूद कुतरता रहता है । पेड़ की शाखाओं से घिरे हुए कुँए में से बुच्चम्मा पानी भरती रहती है ।)

बुच्च : क्यों रे भाई, गिरीशम्जी बहुत बड़े नामी आदमी हैं क्या ?

वेंकट : ऐसे वैसे बड़े नहीं......क्या समझा उनको ? सुरेंद्रनाथ बैनर्जी के समान बड़े हैं ।

बुच्च : वे कौन हैं ?

वेंकट : सबसे बड़े, बड़े हैं ।

बुच्च : तब गिरीशम् जी को नौकरी क्यों नहीं है ?

वेंकट : नान्सेन्स! तुम औरत हो, तुमको कुछ भी नहीं मालूम । नौकरी को बड़ा समझ रही हो! नौकरी का मतलब नहीं समझी । नौकर का मतलब सर्वेंट है ।

बुच्च : मतलब ?

वेंकट : सर्वेंट का मतलब नौकर है । हमारी भैंस को चराने ले जानेवाला 'असिरिगाडु' एक सर्वेंट है । हमारे घर में बरतन माँजकर, झाड़ू-बुहार देने वाली 'अंकी' एक सर्वेंट है । ये हमारे नौकर हैं । पुलीस के लोग, मुन्सिफ आदि गोरे सरकार के नौकर हैं । बड़ा वेतन मिलते ही बड़ा समझ रही हो ? पुलीस वाला उनके पास जाएगा तो कहेगा कि 'स्टैंड' याने खड़े रहो । गिरीशम्जी जाएँगे तो शेक-हैंड दे कर, 'कुर्सी पर विराजिए' कहता है । हैदराबाद के नवाब ने कहा कि एक हजार रुपये दूँगा, मेरे पास नौकरी करो तो गिरीशम् जी ने सरासर इनकार कर दिया ।

बुच्च : क्या उनकी शादी हुई ?

वेंकट : नहीं ।

बुच्च : भैय्या, वे कहते हैं न कि विधवा स्त्रियों का शादी कर लेना अच्छा है । फिर उन्होंने शादी क्यों नहीं की ?

वेंकट : तुम्हें कितना भी समझाऊँ, समझोगी नहीं । (जोर से) उनका नौकरी ना करना, शादी नहीं करना......दुनिया (लोक) को सुधारने के लिए है । अब समझ में आया न ?

बुच्च : कैसे सुधार रहे हैं रे ?

वेंकट : मुझ जैसे युवकों को पढ़ाना-सिखाना (धीमी आवाज़ में) चुरुट पीना सिखाना (जोर से) नाच्चिकोच्चन अर्थात् वेश्याओं को देश से बाहर निकाल देना, नेशनल कांग्रेस अर्थात् दीवानगिरी करना आदि । अब तो समझ गई न ?

बुच्च : कह रहा था कि नौकरी नहीं करेंगे । फिर दिवानगिरी किसके पास?

वेंकट : किसके पास ? अरी, तुम तो औरतजात हो । ये सब तुम्हें क्यों?

बुच्च : तुम भी लोक को सुधारोगे क्या ?

वेंकट : क्यों नहीं ?

बुच्च : तब किसी विधवा स्त्री से शादी करोगे क्या ?

वेंकट : बापू हड्डियों का चूरा नहीं बनाएँगे तो जरूर......लेकिन सिर-मुंडी से नहीं......

(गिरीशम् का प्रवेश)

गिरी : भाभीजी, इस पेड़ के नीचे खड़ी आप साक्षात् वनलक्ष्मी-सी हैं । **(बुच्चम्मा को टकटकी लगाकर देखता है ।)**

बुच्च : सुना, भैया विधवा से शादी करना चाहता है ।

गिरी : मेरा प्रिय शिष्य और आपका प्रिय भाई वेंकटेशम् अगर विधवा से विवाह कर लेगा तो हम सब उसे आसमान पर नहीं बिठाएँगे?

बुच्च : आप तो गुरु हैं । आप पहले कर लीजिए, तब......।

गिरी : शादी कर लूँगा तो लोक का सुधार कैसे ?

बुच्च : शादी करके नहीं कर सकते क्या ?

गिरी : लोक का मतलब क्या समझ रही हैं ? यह सुविशाल लोक है । अगर शादी कर लूँ, तो बाहर कहाँ जा सकता हूँ ? उदाहरण के

लिए मान लीजिए।हम दोनों शादी कर लेंगे ।......यों ही कह रहा हूँ । शादी हो जाए तो घर-गृहस्थी चलाने के लिए पैसे चाहिए न? अब तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता रहा तो 'कहीं खाना और कहीं सोना' चल जाता था । आप से शादी कर लूँ तो ऐसा नहीं चलेगा न । ससुरजी की हठधर्मिता की परवाह न कर, हम दोनों चुपचाप किसी को बताए बगैर रामवरम् जाकर, वहाँ शास्त्रानुसार शादी कर लें तो फिलहाल 'विडो मैरेज सोसाइटी' वाले माहाना (मासिक) सौ रुपये देंगे । चार-पाँच महीने तक उन रुपयों से निर्वाह करें, उसके बाद हैदराबाद या बडौदा में मासिक हजार रुपये की नौकरी आसानी से मिल जाएगी । पहले सोचा था, अहंकार से, मैं किसीके पास नौकरी नहीं करूँगा । अगर मालूम रहता कि आप शादी करने की सलाह देतीं, तो तभी वह नौकरी स्वीकार कर लेता।

बुच्च : भैया ने कहा कि आप नौकरी नहीं करेंगे ।

गिरी : बिलकुल ठीक । ब्रह्मचारी रहकर, लोकोपकार करते हुए, नौकरी नहीं करने का प्रण किया था । लेकिन अब, मेरी किस्मत से, इस लोक के बहुमूल्य वज्र-तुल्य पत्नी के मिल जाने पर, शादी किए बगैर कैसे रहूँगा ? मान लीजिए, इस समस्त लोक का मूल्य रजत है । आप जैसी सुवर्ण-छाया वाली सोने की पुतली तो खरा सोना है न । कैसे नकारूँ ? बोलिए, हाँ या नहीं ? आप ही बताइए कि रजत का मूल्य अधिक या सुवर्ण का ?

बुच्च : सुवर्ण का ही......।

गिरी : ठीक है न, तब आप जैसी सोने की पुतली के मिलने पर, लोक-लीक को ताक पर रखकर, शादी करनी ही पड़ती है न! मान लीजिए, हमारी शादी हो गई । शादी के बाद गृहस्थी को सुख से चलाने के लिए खूब पैसा चाहिए न ! नौकरी करें, तभी खूब पैसा मिलेगा न ?

बुच्च : ठीक......

गिरी : आप पूछ सकती हैं कि पैसे की क्या जरूरत ? बताता हूँ, सुनिए। रहने के लिए एक घर तो चाहिए न । क्या कहती हैं ?

बुच्च : ठीक......

गिरी : मेरे लिए बड़े बंगले के बिना काम नहीं चलता । छोटे-छोटे मकानों में रहते मेरा दम घुटने लगता है । उस बंगले के चौतरफ़ फुलवाड़ी चाहिए । उसमें फूलों के पौधे ही नहीं, आम, केले, अमरूद वगैरह-वगैरह वृक्ष होने चाहिए । हमारा वेंकटेशम् फल खाते हुए बंदर के समान पेड़ों पर ही रहेगा ।

वेंकट : पेड़ों के सभी फल मैं काट दूँगा ।

गिरी : तुम उतने बड़े तो हो ही! इस प्रकार मकान, फुलवाड़ी, अगवाड़ा, पिछवाड़ा सब का इंतजाम करने तक, हमारे बच्चे होंगे । उनका लालन-पालन करना होगा न ? मैं जब कुर्सी पर बैठकर लिख लेता रहूँ, तब वे आकर मेरा हाथ पकड़कर खींचेंगे और तरह-तरह की चीज़ें माँगेंगे न । आप भी अंग भर गहने सजाकर, कुंकुम का तिलक लगाकर, महालक्ष्मी के समान घर में अधिकार चलाती रहेंगी न । तब एक लड़की इधर से और एक लड़की उधर से आकर, आपके गले से लिपटकर, तरह-तरह की चीज़ें ला देने की ज़िद करेंगी । उनके लिए वे सब चीज़ें ला देनी होंगी न । जरी के बेलबूटेदार कपड़े सिलवाने होंगे न । कभी-कभी नवाब का आदेश होगा कि गिरीशम् के बच्चों को रनिवास में लाओ । तब हमारे बच्चों को वेंकटेशम् के समान भद्दी लिबास में सैज नहीं सकेंगे न । उनके लिए छोटे-छोटे ताँगे-बग्घी वगैरह खरीदने होंगे न । उन्हें पढ़ा-लिखाकर सुयोग्य बनाना है न । यह क्या शादी के बाद का झंझट नहीं है ? अगर इन कार्यों में फँस जाऊँ तो लोकोपकार करने के लिए फुरसत ही कहाँ मिलेगी ?......हाँ, बोलना भूल गया। तब हमारा वेंकटेशम् हमारे पास ही रहकर पढ़-लिख लेगा ।

वेंकट : अरे वाह, दीदी से शादी कर लेंगे क्या ?

गिरी : यों ही कहा तो तुम्हारी बुद्धि फिर गई क्या ?

बुच्च : इतना ही न ?

गिरी : नहीं तो......इससे ज्यादा मेरी किस्मत कहाँ ?......अगर यह बात आप कहें या मैं कहूँ......मुझे लात मार कर घर से निकाल देंगे। अगर वेंकटेशम् कहेगा तो रस्सा तैयार ही है ।

वेंकट : बापरे बाप (पीठ मलते हुए) चुप......मैं यह बात कहूँगा ही नहीं। (वहाँ से भाग जाता है ।)

बुच्च : मेरी दोस्त, रामभट्ट की बेटी अच्चम्मा, आप स्वीकार करें तो आप से शादी करने को तैयार है ।

गिरी : अगर शादी करूँ तो भी अच्चम्मा-गिच्चम्मा जैसी ऐरी-गैरी से शादी क्यों करूँगा ? मुझपर दया दिखाकर, औरों की परवाह न कर, अपना सुख और अपनी जिंदगी के बारे में सोचकर, आप जैसी दिव्य सुंदर विग्रह वाली, गुणवती मुझसे शादी करना चाहे तो मैं शादी कर लूँगा। वरन् उत्तम ब्रह्मचर्य और लोकोपकार के व्रत को क्यों छोड़ूँ ? क्या कहती हैं आप ?

(परदा गिरता है ।)

तीसरा दृश्य

(रामप्पा पंतुलु के मकान का बरामदा ।

रामप्पा कुर्सी पर बैठा है । मधुरवाणी पान के बीड़े बनाकर देती रहती है ।)

राम : मैं ने बचपन में अंग्रेजी सीखी होती तो जज लोगों को कंपा देता । मेरे वाक्स्थान में बृहस्पति है । इसीलिए अंग्रेजी न आने पर भी मेरी प्रज्ञा प्रकाशमान है ।

मधुर : बातें करने वाले शुनक को शिकार पर भेजने पर, 'चुप रहो' कहने पर 'चुप रहो' कहता है ।

राम : मैं शुनक हूँ ?

मधुर : मजाक में कही बात को सच मान रहे हैं ?

राम : मजाक किया ?

मधुर : आपसे मजाक न करूँ तो क्या गाँव-भर के लोगों से मजाक करूँ?

राम : सबसे मजाक करोगी तो जानती हो क्या होगा ?

मधुर : इसीलिए कुत्ता कहूँ, सुअर कहूँ, आपको ही कह सकती हूँ और

किसको कहूँ ? आपसे कुछ भी कहने का मेरा अधिकार है। ......आपके वाक्चातुर्य का कहना ही क्या ? उसीके कारण तो आप के जाल में फँस गई ।

राम : मुझे अंग्रेजी आती तो गोरी औरतें क्या मेरे पीछे पागल नहीं बनतीं ?

मधुर : आपकी सुंदरता के लिए हम लोग बस नहीं हैं क्या ? अंग्रेजी कहते ही याद आया । कहते हैं, गिरीशम्जी अंग्रेजी में बात करते हैं तो लगता है, ठेठ अंग्रेज ही बोल रहा है ।

राम : ऐसा......ऐसा ! तुम्हें कैसे मालूम ? वह तो केवल बट्लर इंग्लीश बोलता है । वैसी अंग्रेजी का प्रयोग कोर्ट में करेंगे तो लात मारकर निकाल देंगे ।

मधुर : पता नहीं, आप ही जानें । सुना, गिरीशम्जी लुब्धावधानी के भतीजे हैं । आज तक बताया नहीं ।

राम : तुम्हारा मन उसकी ओर क्यों जा रहा है ? होगा या नहीं, तुम्हें क्या ?

मधुर : पागल की बात, मूरख का बकवास......।

राम : मैं पागल हूँ ?

मधुर : आप नहीं, मैं ही......।

राम : क्यों ?

मधुर : ललाट पर लिखे रहने के कारण ।

राम : क्या लिखा हुआ है ?

मधुर : दुख लिख हुआ है ।

राम : दुख क्यों ?

मधुर : गिरीशम्जी लुब्धावधानी के भाई हैं तो अवधानी की शादी में जरूर आएँगे । अगर शादी में आएँ तो किसी छोटी बात पर झगड़ा छेड़कर, कहीं आप पर हाथ न उठाएँ, इसकी चिंता है ।

राम : ठीक समय पर याद दिलाया । लेकिन खर्च के डर से अवधानी किसी को शादी में बुलाएगा नहीं ।

मधुर : न बुलाने पर भी गिरीशम् जी आएँगे ।

राम : कहीं तुम ने तो नहीं बुलाया ?

मधुर : आपकी कोई नीति नहीं, मैं ऐसी नहीं हूँ ।

राम : फिर तुम्हें कैसे मालूम कि वह आएगा ?

मधुर : दुलहिन के बड़े भाई को ट्यूशन पढ़ाने के लिए, उनके यहाँ रहकर, सुना है शादी के सभी काम करवा रहे हैं । इसलिए आए बगैर नहीं रहेंगे, ऐसा मेरा ख्याल है ।

राम : वह आएगा तो क्या होगा ?

मधुर : मुझसे पूछ रहे हैं ?

राम : शादी टल जाए तो......

मधुर : वह कैसे ?

राम : उसके लिए एक उपाय सोच रखा है ।

मधुर : तब तो मधुरं की बात निभानी होगी ।

राम : निभाए बिना कैसे रहेगा रामप्पा ?

मधुर : तब तो......(उन्हें चूम लेती है ।)

राम : अच्छी सलाह दोगी तो चार सॉवरिन दूँगा ।

मधुर : मैंने पैसा नहीं माँगा, प्रशंसा माँगी । आप मेरे लिए प्राण समान हैं । आपको बचा लेना क्या किसी दूसरे पर उपकार करना है ?

राम : बखुशी देना भी गलत है ?

मधुर : गलत नहीं है क्या ? वेश्या के मन में दया-सहानुभूति आदि गुण नहीं होते क्या ?

राम : गलती हो गई । तोबा कर रहा हूँ । अब बताओ क्या बात है ?

मधुर : शादी के समय रसोई बनाने के लिए उस रसोइन को नियुक्त कराइए।

राम : वाह, क्या ही अच्छी सलाह दी है! एक छोटा-सा चुंबन (चूमने जाकर, रुककर) लेकिन कहीं गिरीशम् उसपर और मुझपर एक साथ पाद-प्रहार न कर बैठे !

मधुर : आप को इस तरह डरने की कोई जरूरत नहीं ।......वह वहाँ दिखाई पड़ेगी तो गिरीशम् पीठ दिखाकर भाग निकलेगा । उससे कोई मुँह लड़ा नहीं सकता, बड़ी बदजबान औरत है ।

राम : हाँ, जबान ही नहीं, हाथ भी वैसा ही है । उसकी मार का प्रभाव तुम्हें क्या मालूम ! फिर भी, बड़ी अच्छी सलाह दी है । एक बार चुंबन....... (चूम लेते समय, लुब्धावधानी एक पत्र हाथ में लिए प्रवेश करता है ।)

लुब्धा : यह कैसा बचकानापन !

राम : (चौंककर पीछे मुड़कर देखता है) मामा, जवानी सिर पर है न । फिर भी मैं अपनी मधुरवाणी को सरे बाजार चूम लूँ तो मुझे मना कौन कर सकता है ?

मधुर : बीच चट्टान पर खड़े होकर चूम नहीं सकते ! शरारत की भी कोई हद होनी चाहिए ।.......जेठजी को नमस्कार । पधारिए । (कुर्सी ला रखती है ।)

राम : मेरे मामा लगते हैं तो तुम्हारे लिए जेठ कैसे ?

मधुर : हमारी जात के लिए सभी जेठ ही होते हैं...... आपके मामा कैसे हुए ? (अवधानी से) बैठते क्यों नहीं ? पता नहीं क्यों, आज जेठजी कुछ नाराज से लग रहे हैं । कल-परसों शादी होने के बाद दीदी को दरवाजे बंद करके ही शायद चूम लेंगे ।......खैर, आपके दामाद अभी बचपना करते ही रहते हैं ।

राम : पच्चीस-तीस की उम्र में प्रौढ़ता कहाँ से आएगी ?......क्यों मामा, नाराज हो ?

लुब्धा : मुझे शादी-वादी कुछ नहीं चाहिए ।

राम : (मधुरवाणी से कान में) देखा मधुरम्, मेरा [illegible] अभी से प्रभाव डालने लग गया है । (अवधानी से) यह क्या, ऐसा क्यों कह रहे हैं ? सबकुछ तय हो गया। अब आनाकानी करने से क्या लाभ ?

लुब्धा : तुम्हारा क्या जाएगा ? आनाकानी-वानाकानी नहीं । मुझे यह शादी नहीं करनी ।

मधुर : (रामप्पा के कान में) वह पत्र क्या है ?

राम : (मधुरवाणी के कान में) अग्निहोत्रावधानी का नाम लेकर मैं ने ही बनवाया है ।

मधुर : (रामप्पा के कान में) क्या लिखवाया है ?

राम : (मधुरवाणी के कान में) तुम बूढ़े हो, इसलिए तुम से रिश्ता हमें पसंद नहीं है ।

मधुर : आश्चर्य ! कह देती हूँ ।

राम : (मधुरवाणी के कान में) कहीं अक्ल चरने तो नहीं गई ? तुम ने ही मेरी जान खाई थी कि इस शादी को टाल दीजिए । इसीलिए यह उपाय किया । अब चुप्पी साध लो ।

मधुर : (अवधानी के कान में) पंतुलु चाहते हैं कि यह रिश्ता आपके सिर मढ दें । स्वीकार मत कीजिए ।

राम : (मधुरवाणी से) यह कैसी बेअदबी ! (अवधानी से) कहा है 'स्त्री बुद्धिः प्रलयान्तकः' उसकी बातों पर भरोसा मत कीजिए । ऊहापोह करने के लिए उससे बढ़कर दूसरी नहीं है ।

लुब्धा : (हाथ का पत्र दिखाते हुए) यह सारा षड्यंत्र तुम्हारा ही है ।

राम : (मधुरवाणी की ओर तीखी नजरों से देखकर, अवधानी से) नाराज हो जाना तो ठीक है लेकिन एकवचन का प्रयोग ठीक नहीं है ।

लुब्धा : यह सब तुम्हारी ही करतूत है । मुझे डुबो देने का निश्चय किया है । पढ़कर देखो ।

राम : (पत्र हाथ में न लेते हुए, कुर्सी पीछे की ओर सरकाकर) उस पत्र के बारे में मुझे क्या मालूम ?

लुब्धा : तुम ही तो कर्ता हो । तुम्हें मालूम नहीं रहेगा तो और किसे मालूम होगा ?

राम : देखिए, फिर वही एकवचन का प्रयोग । आदर देकर बात कर रहा हूँ, क्या इसलिए मेरा अनादर कर रहे हैं ? अब आगे यह कहें कि पत्र मैं ने बनवाया है तो मैं अब चुप रहने वाला नहीं।

......इस रामप्पा पंतुलु को क्या समझ रहे हैं ?......मालूम हो जाएगा ।

लुब्धा : तुम......।

राम : फिर वही......

लुब्धा : आपकी हो या दूसरे की हो यह चाल । गलती तो मेरी है । बीच के भडुओं से मेरा क्या ? सीधे उस अग्निहोत्रावधानी के पास जाकर, पता लगा लूँगा ।

राम : बातें बड़ी-बड़ी कर रहे हैं । खबरदार । (लुब्धावधानी जाता है।) मुझे बदनाम करनेवाले बदमाश......।

मधुर : मुझे भी उनमें जोड़ने का विचार है क्या ?

राम : मुझे तो 'वेधवा'[1] बनाने पर तुली हुई हो न !

मधुर : मेरे रहते आप 'वेधवा' कैसे बनेंगे ?

राम : मुझे तो सब तरह से 'वेधवा' बना दिया है । अब बचा क्या है ?

मधुर : ये कैसी बातें......?

राम : उस 'वेधवा' से क्यों कहा कि मैं ने वह पत्र लिखवाया है ।

मधुर : आपकी कसम । मैं ने ऐसा नहीं कहा है ।

राम : फिर उसे कैसे मालूम हुआ कि मैं ने पत्र लिखवाया है ?

मधुर : यह परेशानी क्यों ?

राम : अगर यह जाकर अग्निहोत्रावधानी को वह पत्र दिखा देगा तो वह फौरन मुझपर फोर्जरी का केस दाखिल कर देगा । गले पर आ जाएगा । अब क्या करें ?

मधुर : ठीक है, अस्त्र के लिए प्रति-अस्त्र का प्रयोग करूँगी । (जल्दी से बाहर जाती है ।)

(एक हाथ में पत्र और एक हाथ से लुब्धावधानी के हाथ को पकड़कर भीतर आती है ।)

---

1. 'विधवा' से बनी हुई गाली । पुं.

मधुर : (रामप्पा से) बस, बस, आपकी कार्य-कुशलता ! जेठजी के न भाई, न लड़का, न लड़की । आपको अपना समझकर आए तो सलाह-मशविरा न देकर, एकवचन-बहुवचन कहते हुए बेकार का तर्कवाद शुरू किया । जेठजी, इस कुर्सी पर बैठिए । (उन्हें कुर्सी पर बिठाकर, रामप्पा से) इस पत्र में क्या लिखा है, तनिक आराम से पढ़कर देख लीजिए । (पत्र रामप्पा के हाथ में रख देती है ।)

राम : (पत्र लेकर, अपने में) बच गया रे भगवान! (पत्र देखकर अपने में) अरे, यह तो मेरा पत्र ही नहीं है । अपनी छाया को देखकर, खुद ही डर गया । (बाहर) मामा, आते ही गालियों से शुरू करेंगे तो कोई भी हो, कृद्ध हुए बगैर नहीं रहेगा न । शांति से, आदर के साथ पूछते तो आप की जो भी चाहिए, सहायता नहीं करता?

लुब्धा : फिर यह लिखिए कि इस आडंबर की कोई जरूरत नहीं है । आडंबर चाहिए तो सारा खर्चा उन्हीं को वहन करना पड़ेगा ।

मधुर : (अवधानी की चुटिया की गाँठ खोलकर) कैसा मैल ? लालन-पालन करनेवाले के अभाव में ही तो......(आले में से सुगंधित तेल निकालकर, तेल लगाती है, कंघी लेकर बाल संवारती है।)

राम : (पत्र को उलटकर, प्रेषक का नाम पढ़ता है ।) 'आपका सेवक, आपका भाई गिरीशम् ।' इसने लिखा है !

मधुर : पूरा पढ़कर, सुनाइए ।

राम : तुम्हारा गिरीशम्......कहते ही पढ़कर सुनाना है क्या ?

मधुर : तब......आप ही पढ़कर प्रसन्न हो जाइए ।

लुब्धा : 'तुम्हारा गिरीशम्' यह क्यों कहा ?

राम : वह तो अलग कहानी है ।

लुब्धा : पढ़िए तो सही ।

राम : (पत्र पढ़ता है ।) आपका सेवक, आपका अत्यंत प्रिय भाई गिरीशम् अनेक नमस्कार कर यों निवेदन कर रहा है । इस बुढ़ापे में ही सही, आपने फिर से विवाह कर, गृहस्थाश्रम

स्वीकार करने का निश्चय किया, यह जानकर हृदय हर्ष-प्रफुल्लित हो गया ।

लुब्धा : भड़ुआ ! बुढ़ापा कहता है । अभी हाल ही में तो पचास वर्ष पूरे हुए हैं ।

मधुर : (कंघी को कमर में खोंसकर, बालों की गाँठ बाँधकर) लालन-पालन के अभाव में ऐसे हैं, वरन् आपको बूढ़ा कौन कह सकता है ?

राम : (पत्र पढ़ता है) 'आपकी होने वाली पत्नी मेरे प्रिय शिष्य वेंकटेशम् की बहन है । इस कारण मुझे ब्रह्मानंद हुआ । मैं अग्निहोत्रावधानी के घर पर रहकर, विवाह के समस्त कार्य करवा रहा हूँ । वे मुझे पुत्र-समान देख रहे हैं । वे बड़े सज्जन तो हैं पर चंद्र के कलंक के समान, उनमें तनिक द्रव्याशा और किंचित् प्रथम कोप अवश्य हैं ।' छोकरा अपने संस्कृत-ज्ञान को बता रहा है । 'नोट—जब उन्हें क्रोध आता है, तब छिपकर रहें तो हड्डियाँ नहीं टूटेंगी । जान बच जाएगी । द्रव्याशा—वह उनके लिए या आपके लिए उपकारी नहीं है । आपके गाँव के किसी शरारती के लिखने पर कि आप खूब धनवान हैं और बड़े आडंबर के साथ विवाह करने पर तुले हुए हैं, अग्निहोत्रावधानी जी इस गाँव के सभी लोगों को लेकर, पचास बैलगाड़ियों के साथ आनेवाले हैं । इसके अलावा दीवानजी की अनुमति लेकर एक कुंजर, तीन ऊँट, आठ अश्वों को लाने वाले हैं । सोने के छड वाली पालकी को भी लाने जा रहे हैं ।' 'नोट—उसपर सवार होकर, बाजे-गाजे सहित जुलूस के साथ विवाह का होना मेरे लिए नेत्रपर्व तो होगा ही, लेकिन मुझ जैसे आत्मीय जनों को यह चिंता हो रही है कि यह सब व्यर्थ का खर्चा है । बैल का फोड़ा, कौए को रुचिकर,......रामप्पा पंतुलु का क्या जाएगा ?'

भड़ुआ, मेरी चर्चा क्यों ?

'इसमें एक परम-रहस्य है । यह यह है कि रामप्पा पंतुलु पेचीदगियों का जाकाल (jackal) है, बुद्धि के लिए बिग यास

(big ass) है ।'

यह कैसा बट्लर इंग्लीश !

'अर्थात्'

व्याख्या भी कर रहा है ।

'जाकाल का मतलब है सियार ।'

लफंगा कहीं का

'बिग यास का अर्थ है । बड़ा......'

अरे, इसकी चुटिया काट दें ! कैसी ब्रदकिस्मती है इसकी ! इसपर इसी क्षण मानहानि का दावा दायर कर दूँगा ।

(मधुरवाणी हँसी को रोक न पाकर ठठाकर हँस पड़ती है ।)

राम : ऐसा क्यों हँस रही हो ? तुम्हारा धगड़ मुझे गाली दे रहा है, इसलिए ?

मधुर : **(हँसी को रोकने का प्रयास कर, थोड़ी देर के बाद)** नहीं, नहीं, आपकी क़सम......वह......ऊँट

राम : मेरी क़सम क्या......मैं मरूँ तो तुम्हें खुशी ही होगी ।

मधुर : **(नाक पर उंगली रखकर, रामप्पा के निकट पहुँचकर, सिर को अपनी छाती पर लेकर चूमकर)** यह कैसी अनहोनी बात ?

राम : फिर क्यों हँस रही हो ?

मधुर : ऊँ......ऊँट......

राम : हाँ, ऊँट । तो क्या ?

मधुर : **(अपनी हँसी को सम्हालकर)** उनकी क्या जरूरत ?

राम : मुझे क्या मालूम ?

लुब्धा : पत्र से लगता है कि आपने ही लाने को लिखा है ।

राम : मैं ने ?......मुझे क्या पड़ी है......?

मधुर : **(जोर से हँसती हुई)** चढ़ने के लिए ।

राम : मैं......ऊँट पर चढ़ूँ ?

मधुर : क्यों नहीं ? आप एक ऊँट पर, जेठजी एक ऊँट पर, पोलिसेट्टि शादी का सप्लाइदार है न, वह एक ऊँट पर, बैठकर, खेतों में जुलूस निकालिए । उस वैभव को, आँख भर देखकर, खुश हो जाएँगे लोग । (जोर से हँसती है । हँसी को रोककर) जेठजी, माफ़ कीजिए । उस दुष्ट वाक्य को पढ़कर हँस पड़ी। अन्यथा मत समझिए ।

राम : दुष्ट......ऐसा वैसा नहीं, भड़ुआ......लफंगा......

लुब्धा : लगता है कि आपने ही एक बड़े गधे को लाने के लिए लिखा है ।

राम : नहीं, नहीं, गधे का कहीं उल्लेख नहीं है ।

लुब्धा : है जरूर, गधे को क्यों मँगवाया है ?

राम : कहीं आपकी अक्ल चरने तो नहीं गई है ! बोल रहा हूँ, गधे का उल्लेख नहीं है । (मधुरवाणी फिर से हँसती रहती है।) तुम्हारी भी अक्ल काफूर हो गई है । क्यों यह हँसी ? मुझे देखकर या अवधानी को देखकर ?

मधुर : संदेह क्यों ?......कहावत है कि......

राम : क्या है, वह कहावत ?

मधुर : एक गधे ने कहा कि गाने के लिए मैं और खूबसूरती के लिए मेरी दीदी ऊँट ।

राम : याने ?

मधुर : शादी के समय गधे और ऊँट की बात, इतने दिनों के बाद सुनी है......इसलिए......

राम : तो ?

मधुर : हँसी आई । आप भी हँसिए ।......यह झगड़ा क्यों ?

राम : इसपर फौरन मानहानि का दावा दायर कर दूँगा ।

मधुर : (अवधानी से) जेठजी, अकारण हमारे पंतुलु पर संदेह क्यों? ......वे सचमुच आपको अपना बड़ा भाई मान रहे हैं । गिरीशम् जी का पंतुलु के खिलाफ लिखने का और कारण है । यह आप

से कहने की बात नहीं है । फिर भी आप दोनों की दोस्ती में भंग पड़ने जा रहा है, इसलिए कहना ही पड़ रहा है । आपके गिरीशम्‌जी ने मुझे कुछ दिन तक अंग्रेजी पढ़ाई है । कुछ दिन मुझे आश्रय भी दिया है । पंतुलुजी मुझे उनके पास से ले आए हैं । इस क्रोध के कारण, इस वेदना के कारण पंतुलुजी को 'सियार और गधा' कहा है । आप उन बातों की परवाह न कीजिए ।

राम : 'सियार और गधा' कहना यों ही टाल देंगे क्या ? दावा दायर होने के बाद मालूम होगा ।

मधुर : जेठजी, एक और बात का विचार कीजिए । हाथी, ऊँट, गधे इनसे पंतुलु को क्या लाभ ? (हँसती है ।)

राम : दिमाग नहीं है क्या ? कह रहा हूँ कि गधे की बात नहीं है।

मधुर : जाने दीजिए । आप नाराज क्यों होते हैं ? गधे न हो तो दूसरे ही सही । ये सब आकर, आपके घर खाएँ तो पंतुलु को क्या लाभ? आप ही कहिए । सप्लाई करने वाले पोलिसेट्टि को कुछ लाभ हो सकता है ।

लुब्धा : खूब कहा ।.....यह पोलिसेट्टि की ही करतूत है ।

राम : सस्ते में कर देगा, यह समझकर सारी जिम्मेदारी उस बनिये पर छोड़ दी । अब भुगत लो ।

मधुर : अब भी समय है जेठजी! 'दुलहिन को यहाँ भेज दें तो दस रुपये के खर्च में शादी का सारा काम कर देंगे । आप में से किसी को भी आने की जरूरत नहीं है ।' इस मतलब का एक पत्र अपने ससुरजी को लिखिए ।

लुब्धा : बड़ी अच्छी सलाह दी है । मामाजी, मधुरं बड़ी बुद्धिमती है ।

राम : वह देखो, आपको 'मधुरं-पिधुरं' नहीं कहना चाहिए । आपको तो 'मधुरवाणी' कहना चाहिए ।

लुब्धा : गलती हो गई.......फिर अगर वे लोग केवल दुलहिन को भेज दें तो ?

मधुर : ठीक है, खर्चा कम पड़ेगा । शादी कर लीजिए ।

लुब्धा : मेरी जान जाए तो जाए, यह रिश्ता नहीं करूँगा । वह पत्र अंत तक पढ़िए तो आपको उनकी बुरी नीयत का पता चलेगा ।

मधुर : पढ़ना छोड़कर क्या सोच रहे हैं ?

राम : गिरीशम् पर दावा दायर किए बिना नहीं रहूँगा । गधा कहीं का ....जैसी उसकी बुद्धि वैसा ही है यह पत्र ......पढ़ूँ क्या ?

लुब्धा : उस भड़ुए ने मेरी मान-मर्यादा रखी है क्या ? खैर, आगे पढ़िए तो सही ।

राम : (पढ़ता है) 'पुनश्चः दुलहिन तो बहुत सुलक्षणी है । लेकिन ललाट पर बालों के बीच एक रेखा है । हमारे पूर्वज उसे वैधव्य-हेतु बताते हैं । यह एकदम सुरर-सुप..र..स्टि..शन है अर्थात् अंध विश्वास है । हम जैसे प्राज्ञ लोगों को उसपर ध्यान नहीं देना चाहिए । नोट–इसके लिए ओझा ने एक तंत्र बताया है । चिमटे से उन बालों को उखाड़ दें और एक क्रीम लगा दें तो ये बाल बढ़ेंगे नहीं । इस बीच संयोग से, वैधव्य ही प्राप्त हो जाए तो बार-बार क्षुरकर्म के कारण वे बाल बढ़ेंगे ही नहीं । दूसरा नोट-यदि वैधव्य संप्राप्त हो जाए तो हमारी भाभी बाल बढ़ा ले तो आप क्या कर सकते हैं, मैं क्या कर सकता हूँ ।

मधुर : बस, बस कीजिए । अब पढ़ना बंद कर दीजिए । गिरीशम्‌जी कितने शरारती हैं !

राम : अब तो उसका स्वभाव समझ में आया न ! (पढ़ता है) तीसरा नोट–इन दिनों स्त्री के पुनर्विवाह की चर्चा जोरों पर है । यह आपको मालूम ही है । आप स्वर्ग पधारकर वहाँ स्वर्ग-सुखों को भोगते रहें तब भाभी में पुनर्विवाह की इच्छा पैदा हो सकती है। उसे (उस पुनर्विवाह को) मैं कतई रोक नहीं सकता, इसे स्पष्टतया जानिए । क्योंकि, अगर मना करने के लिए उनके सामने जाऊँगा तो वे पूछेंगी कि 'तुम्हारे भाई साहब स्वर्ग में रंभा के साथ परमानंद भोग रहे हों तो मेरा क्या होगा ? तो मैं क्या जवाब दूँ ।'

मधुर : अब बस कीजिए ।

राम : तुम्हारी मर्जी हुई तो पढ़ूँ और तुम्हारी मर्जी न हुई तो रो देने वाला हूँ क्या ? (पढ़ता है) चौथा नोट—शेष सभी अंश बहु-उत्तम हैं । अवश्य यह संबंध (विवाह) कर लेना चाहिए । आपकी सास साक्षात् अरुंधती हैं । उन्हें यह संबंध (रिश्ता) किंचिन्मात्र पसंद नहीं है । वे अड़ोस-पड़ोस से कह रही हैं कि मुहूर्त के समय पर आपके घर के कुएँ में गिरकर जान दे दूँगी । उसकी परवाह नहीं है । अग्निहोत्रावधानी हाथ-पैर बाँधकर उन्हें एक कमरे में बंद कर रख देंगे । मंगल-सूत्र-धारण के बाद कुएँ में गिरें तो गिरने दीजिए ।हमारा क्या बिगड़ेगा! पुलीसवालों के हाथ कुछ रखकर, उनके झमेले से बचा जा सकता है । ये सब बातें आपका भला चाहकर लिखा है । यहाँ के लोगों को इसका पता नहीं लगना चाहिए । हाँ, भूल गया । सुना है, दुलहिन की कुंडली उत्कृष्ट है । वह संभवतः राम......

मधुर : राम ?

राम : उसे औरतों को नहीं सुनना चाहिए ।

लुब्धा : यह कह रहा है कि उसे (कुंडली को) भी आपने ही बनवाया है।

राम : उसकी बुद्धि के लिए अच्छा-बुरा कुछ भी नहीं है । डैमेज दावा दायर करने पर ही, उसे मालूम होगा......

लुब्धा : लेकिन मुझे डर है कि उसमें थोड़ी बहुत सच्चाई हो सकती है। पोलिसेट्टि ने भी कहा है कि सासु को यह रिश्ता पसंद नहीं है। ......इस रिश्ते को दूर से ही नमस्कार । यह मुझे नहीं चाहिए।

मधुर : ठीक कहा जेठजी । ससुर को पत्र लिख दीजिए कि मुझे यह रिश्ता कतई पसंद नहीं है । कागज, कलम लाऊँ ?

लुब्धा : मामाजी, अब आगे-पीछे मत सोचिए, पत्र लिख दीजिए । (उठकर, मधुरवाणी के कान में फुसफुसाता है । मधुरवाणी भी उनके कान में फुसफुसाती है ।)

राम : मुँह में मुँह में रखकर, वह फुसफुसाना कैसा ?

(बाहर से डाकिया आवाज देता है । 'लुब्धावधानीजी हैं क्या? उनके नाम पत्र है ।')

(मधुरवाणी बाहर जाकर, पत्र लाती है और लुब्धावधानी को देती है । लुब्धावधानी रामप्पा के हाथ में देता है ।)

लुब्धा : ऐनक नहीं लाया । इसे भी आप ही पढ़िए ।

राम : समस्या ही सुलझ गई । आपके ससुर के पास से ।

लुब्धा : क्या लिखा है ? क्या हाथी, ऊँट, घोड़े नहीं लाएगा ?

राम : लिखा है, आपसे रिश्ता ही नहीं चाहिए ।

लुब्धा : क्या ?......क्यों ? उसे नहीं चाहिए या मुझे ? उसकी मान-मर्यादा के योग्य नहीं हूँ क्या मैं ?

मधुर : एक मिनट पहले कहा था कि यह शादी नहीं चाहिए । अब शादी टल जाने पर नाराज क्यों हो रहे हैं ?

लुब्धा : अभी और क्या बक रहा है, पढ़िए तो सही ।

राम : किसी ने उन्हें बताया कि आप मक्खीचूस हैं ।

लुब्धा : मैं मक्खीचूस हूँ ? एक मुश्त अठारह सौ रुपये कौन मक्खीचूस दे डालेगा ? इतनी रकम, एक साथ, कभी उस अग्निहोत्रावधानी ने अपनी आँखों से देखा भी है ? घर के खर्चे सावधानी से करूँ तो मक्खीचूस बन जाऊँगा ? उसका पैसा, उसके सिर डाल दिया। अब मैं किस स्वभाव का हूँ, उसे क्यों ?

मधुर : आपको क्या कहें ? सोने के ढेर के समान हैं ।

राम : सुनते हैं, किसी ने यह भी कहा कि आप बूढ़े ही नहीं, क्षयरोगी भी हैं ।

लुब्धा : मैं बूढ़ा हूँ ? उसकी चुटिया काट दें । पचास वर्ष पर ही बुढ़ापा? खैर, कुछ खाँसी तो है (खाँसता है), पर वह बीमारी तो नहीं। इतना पैसा देकर, लड़की को मोल लेने के बाद, उसके (लड़की) बारे में और मेरे बारे में सोचने की उसे क्या पड़ी है ? पैसा लेने के बाद शव के साथ सही, शादी करानी ही पड़ेगी ।...... बोलते क्यों नहीं ?

राम : हाँ, ठीक, आप बूढ़े हुए तो क्या हुआ ?

लुब्धा : 'हुए तो' ऐसा क्यों कह रहे हैं ? शायद यह सारा झंझट आपके दिमाग की उपज है ।

राम : सब कुछ करने के लिए आप का भाई गिरीशम् वहीं पर है न!

लुब्धा : मेरे लिए 'शनि' बनकर वहाँ कैसे पहुँच गया, ?

मधुर : आहा, इन मर्दों का भी क्या विचित्र स्वभाव है ! अब तक रोते रहे कि यह शादी नहीं करूँगा । अब शादी टल गई तो रो रहे हैं ।......क्या आप का सचमुच शादी करने का इरादा है?

लुब्धा : है तो है, नहीं है तो नहीं । लेकिन इतनी सारी गालियाँ सुनकर, मैं चुप कैसे रह सकता हूँ ?

मधुर : करेंगे क्या ?

राम : क्या करेंगे ? मानहानि का दावा दायर कर देंगे ।

लुब्धा : दावा-गीवा कुछ नहीं । आपका भला होगा । चुप रहिए ।

राम : दावा नहीं तो एक और काम कीजिए । इससे सस्ता और अच्छा रिश्ता देखकर, संबंध तय कर लीजिए और शादी कर लीजिए तो मानों उस अग्निहोत्रावधानी को जूता मारने के समान होगा।

लुब्धा : वह कैसे ?

मधुर : मेरी बात मानकर, शादी की बात ही छोड़ दीजिए ।

लुब्धा : क्या तुम्हें भी बूढ़ा लग रहा हूँ ?

मधुर : आप बूढ़े हैं ? ऐसा किसने कहा ?

लुब्धा : इतनी अक्ल उस अग्निहोत्रावधानी को होती तो कितना अच्छा रहता ।

मधुर : एक भी दाँत नहीं गिरा, दृष्टि में दोष नहीं आया । भुजाओं को देखें तो लोहे के सीकचों के समान हैं ! (अपनी साड़ी से अवधानी की छाती नापकर) वाह छाती......

राम : यह कैसी बेअदबी !

मधुर : पत्र अपने आप मत पढ़ लीजिए । जरा हम भी सुनें ।

राम : तुम मुझ पर हुक्म चलाने वाली ? हम पढ़ लेंगे । तुम औरत जात के सुनने लायक नहीं । तुम भीतर चली जाओ ।

मधुर : नहीं, मैं यहीं बैठी रहूँगी ।

राम : हाथों से उठाकर, पिछवाड़े के कमरे में पटक दूँगा ।

मधुर : (कुर्सी के पीछे खड़ी रहकर, अवधानी की बाहुओं को जकड़ पकड़कर) मार्कंडेय ने जैसे शिवजी को पकड़ लिया था, मैं भी वैसे ही जेठजी से लिपट जाऊँगी । देखूँगी, मुझे कैसे ले जाएँगे।

लुब्धा : (अपने में) कितने नाजुक हाथ हैं! सिर से सिर लगाए तो वाह कैसी सुगंध! (बाहर) मामाजी! सूक्तिकार ने कहा है कि 'बालादपि सुभाषितम्' । मधुरवाणी को यहीं रहने दीजिए । बुद्धिमती है, सच्चाई को पहचान लेगी ।

राम : तब तो सुनो । ऐसा लिखो कि तुम्हारी पुत्री के आचरण के ठीक न होने के कारण आपके परिवार को समाज से बहिष्कृत कर दिया, यह समाचार लोक में खूब प्रचलित है ।

लुब्धा : (थोड़ी देर चुप रहकर) तुमने ही मेरा सत्यनाश कर दिया है।

मधुर : पंतुलु ने ही ?

लुब्धा : दूसरों की क्यों कहें ?

मधुर : (थोड़ी देर चुप रहकर) आपके घर आ जाऊँगी । आइए । यह शादी-वादी की बातें छोड़ दीजिए । पत्नी से अधिक आपकी देखभाल करूँगी ।

लुब्धा : (प्रसन्न होते हुए) मैं तो गरीब हूँ । शायद उतनी रकम नहीं दे पाऊँगा । तुम जैसी बहुमूल्य वस्तु को पंतुलु ही वहन कर सकते हैं ।

मधुर : मुझे रकम की जरूरत नहीं । खाना तो खिलाएँगे न ?

लुब्धा : उसकी कमी क्यों होगी ?

मधुर : तब तो चलिए फिर – पंतुलु की माया में फँसकर, शादी की बात छोड़ दीजिए और घर पर सुख से रहिएगा ।

राम : (मधुरवाणी को तीखी नजरों से देखकर) याद है क्या, अभी तक तुमने भोजन नहीं किया ? भीतर जाओ ।

मधुर : आपकी करतूत देखकर ही, पेट भर जाता है । (झट से भीतर जाती है ।)

लुब्धा : यह मधुरवाणी......सुन रही है न मामा, वेश्या होने पर भी [illegible] को इतनी अक्ल होती तो हम जी जाते ।

[illegible] : हाँ, अक्लमंद ही है । लेकिन बहुत ज्यादा क्रोधी है । मन में कुछ संदेह पैदा हो जाए तो आगे-पीछे नहीं देखती । सुनिए मामा, आप जैसे धर्मनिष्ठ व्यक्ति का वेश्या को छूना अनुचित है । वह बचकानेपन के कारण मुँह से मुँह लगाकर बात करे तो आपको मना करना चाहिए । पता नहीं, इसमें यह दुर्गुण कहाँ से आया, पराए लोगों से बिना बात किए चुप नहीं रह सकती। शहर में पलने से शायद यह बुरी आदत पड़ गई ।

लुब्धा : बचपन है न ! मधुरवाणी मेरी लड़की (बेटी) के समान है । मुझे छू ले तो उसे गलत मत समझिए ।

राम : तुम्हारा क्या जाएगा ? बात वह नहीं । सुनिए मामा, मैं ने उसे रख लिया है । अगर वह मेरे ही सामने दूसरे मर्द को पकड़कर यह कहे कि 'इसकी भुजाएँ लोहे के सींकचों के समान हैं, इसकी छाती भारी है'......ऐसा कान में मुँह रखकर फुसफुसाए तो कैसा लगेगा, आप ही बताएँ ?

लुब्धा : गलती हो गई, तोबा-तोबा कर ले रहा हूँ । माफ़ कीजिए ।

राम : आप तोबा कर लें तो कोई फायदा नहीं । उसे चपत लगाने चाहिए । लगता है कि आप पर उसका मन है । ठीक तरह से उसे समझाइए ।

लुब्धा : मुझपर मन होना ! मामा, यह कहीं संभव है ?

राम : आपके घर आना चाहती है न ! ले जाइए ।

(इतने में मधुरवाणी रेशमी साड़ी पहने प्रवेश करती है ।)

मधुर : हाँ, ले जाएँगे जरूर, अगर आपको मैं भार-सी लगूँ तो । इस महानुभाव की सेवा करूँ तो पुण्य तो मिलेगा ।

लुब्धा : मामाजी मजाक के लिए कह रहे हैं । तुम्हें छोड़ेंगे क्या ? मैं तुम्हारे योग्य नहीं ।

राम : ऐसा समझाइए । घास खिलाइए ।

मधुर : वे मजाक में कह रहे हों पर मैं सच्चे दिल से कह रही हूँ । घास तो गधे खाते हैं, आदमी नहीं ।

राम : देखो, फिर वही बात......गधा......(मधुरवाणी हँसी को रोकने का प्रयास करती है, लेकिन रोक नहीं पाती ।)

लुब्धा : मधुरवाणी को आपके प्रति भय और भक्ति दोनों हैं ।

राम : हैं तो सही, पर नाराज हो गई तो सामने वाले को तिनके के बराबर भी नहीं मानती । यह भी नहीं सोचती कि कोई पराया आदमी पास में है ।

लुब्धा : लगता है कि अब विवाह के प्रयत्न छोड़ देने होंगे । अब आपकी क्या आज्ञा है ?

राम : मेरी क्या आज्ञा ? मधुरवाणी का आदेश है कि शादी मत करो। उसकी सलाह पर प्रसन्न होकर, वैसा ही करना चाहते हैं । कहा है कि 'स्त्री बुद्धिः प्रलयान्तकः' ।

लुब्धा : आपको अपना समझकर ही तो सलाह माँगने आया हूँ । मधुरवाणी की बात मानकर, क्या मैं शादी से इनकार कर रहा हूँ ? शादी तो टल गई, पैसे बच गए, यह सोचकर खुश हो रहा हूँ ।

राम : मैं ने मौरूसी जायदाद को स्वाहा कर दिया है । परलोक की बात......मैं तो शाक्तेय हूँ, योग-साधना करता हूँ । फिर मुझे कर्म करने से कोई मतलब नहीं । दुनिया को दिखाने के लिए पितरों के लिए श्राद्ध-कर्म करता हूँ । फिर आप पूछ सकते हैं कि वेश्या को क्यों रख लिया ? कहा है कि जो कामी नहीं होता, वह मोक्षकामी नहीं बन सकता ।

लुब्धा : फिर कहिए क्या करूँ ?

राम : आप फिर से प्रयत्न करके शादी कर लीजिए। घरवाली के आने पर मीनाक्षी जरा कन्ट्रोल में रहेगी। मीनाक्षी के कारण आपकी होने वाली पत्नी भी कन्ट्रोल में रहेगी। सच है कि नहीं ? आप ही बताइए।

लुब्धा : बिलकुल ठीक। सच्ची बात है।

राम : सच्ची बात है। आप बहुत अनमने स्वभाव के हैं। अच्छाई-बुराई के बारे में पग-पग पर आपको याद दिलाते रहना पड़ता है। विवाह न हो तो आपकी कुंडली के अनुसार, आपको मारक-योग है। किस लोक में हैं आप ?

लुब्धा : ऐसा कुछ नहीं। इतने दिनों से हाथ-पैर मार रहा था तो अठारह सौ में ही एक रिश्ता तय हो गया लेकिन ऐन-मौके पर टल गया। अब सस्ते में हमें रिश्ता कहाँ मिलेगा ? नहीं मिलेगा, नहीं।

राम : कल आए थे एक ब्राह्मण गुन्टूर से। पता नहीं, ठहर गया या चला गया।

लुब्धा : रिश्ता ढूँढने के लिए ?

राम : हाँ, कितनी बेवकूफी की। मुझसे पूछा कि आपकी जान-पहचान का कोई रिश्ता है। मैं ने नकार दिया। मैं ने क्या सपना देखा कि यह रिश्ता टल जाएगा ? वह बड़ा धर्मनिष्ठ और वेद-पंडित है। अगर यह रिश्ता कर लें तो यह अग्निहोत्रावधानी के मुख पर जूते की मार के समान होगा।

लुब्धा : दाम कितना बताया है ?

राम : बहुत सस्ता बताया है। वही सोच रहा हूँ। वह गुन्टूर से आया है। वहाँ के लोगों को हमारे यहाँ के दाम-भाव की जानकारी नहीं है। इसलिए नंदिपल्ली में बारह सौ में रिश्ता तय कर लिया है। लेकिन दूल्हे के पक्ष वालों ने कहा कि कुछ समय के बाद ही रकम दे सकेंगे। उस ब्राह्मण के सिर पर ऋणभार है। समय पर ऋण अदा नहीं करेगा तो कोर्ट में दावा दायर

हो जाएगा । इस भय से कहीं न कहीं रिश्ता तय कर लेने का प्रयास कर रहा है । एक-दो जगह हजार रुपये पर बात हुई। उसने कहा कि बारह सौ से कम में कन्या नहीं दूँगा ।

लुब्धा : हम एक और सौ दे देंगे ।

राम : वह यहाँ है तो पचास या सौ अधिक......

लुब्धा : पता लगाइए, आपका भला होगा । कहाँ ठहरा है वह ।

राम : रक़म की बात ताक पर रख दीजिए ! लेकिन वह कन्या...... वाह कैसी जवानी......कैसी सुंदरता......कैसे सुलक्षण......हाथ देखा तो धनरेखा मोटी और लंबी......संतान की रेखाएँ सुस्पष्ट हैं । विग्रहपुष्टि है ।

(मधुरवाणी का प्रवेश)

राम : अवधानीजी की ग्रहस्थिति देख रहे हैं । कुंडली के अनुसार इस वर्ष विवाह हो जाना चाहिए ।

मधुर : मुझे आपकी बात पर विश्वास नहीं । (अवधानी के पास जाकर, मुख के पास मुख रखकर) क्या यह बात सच है ?

लुब्धा : सब यही कह रहे हैं ।

मधुर : सिद्धांती ने क्या कहा ?

लुब्धा : जन्मचक्र देखने वाला प्रत्येक सिद्धांती यही कह रहा है । मेरे जन्मचक्र के अनुसार कही गई भविष्य-वाणियाँ सच होती आ रही हैं ।

मधुर : तब तो आपका प्रारब्ध ! लेकिन पंतुलु की बातें मानकर, उस अग्रहार की कन्या से तो विवाह मत कीजिए ।

राम : भोजन करते-करते चली आई ! यहाँ क्या डूब रहा है ?

मधुर : चाँदी की प्याली के लिए आई हूँ ।

राम : ले जाओ । (मधुरवाणी जाती है ।)

लुब्धा : शादी करने से मना कर रही है न ?

राम : धीरे से बोलिए । कहीं वेश्या शादी करने की सलाह देगी ?

तुम पर उसकी नजर है ।

लुब्धा : मुझपर नजर ! वाह मामाजी, कोई सुनेगा तो हँसेगा ।

राम : अगर आप शादी नहीं करेंगे तो आपके घर आकर बैठ जाएगी। वह खुलकर बोल रही है । सुनाई नहीं पड़ रहा है क्या ? उसके साथ आप भी कुछ बचकानी हरकतें करेंगे तो आपको भी उसपर आसक्ति बढ़ जाएगी । सावधानी बरतिए ।

लुब्धा : मैं......मैं......मामा, ऐसा क्या बोल रहे हैं ? मेरी बेटी और उसमें क्या अंतर है ? गुन्टूर के उस शास्त्री का पता लगाइए न !

राम : सामने वाले मकान में रात को ठहरा था । जाकर, देख आऊँगा। लेकिन इतने में मधुरवाणी के भोजन के बारे में पूछ लूँगा । **(भीतर जा कर, आता है और बाहर की ओर जाता है ।)**

लुब्धा : अरे, यह पंतुलु सोच रहा है कि मैं मधुरवाणी को साथ ले जाऊँगा । वाह **(नास की चुटकी लेकर)** व्यक्ति और व्यक्ति के बीच अंतर वेश्या ही पहचान सकती है । पंतुलु के समान मूँछें रखकर, रंग लगा लूँ तो बीता यौवन फिर से आ जाएगा। यह सस्ता रिश्ता तय हो जाए तो बुरे दिन टल जाएँगे ।

(रामप्पा स्त्रीवेषधारी शिष्य को भुजा पकड़कर ले आता है और अवधानी को उसकी हथेली दिखाता है ।)

राम : मामा, तुम्हारे दिन फिर गए । भाग्यवान हो । देख लो, धनरेखा और संतानरेखा । गले के नीचे देखो हार-रेखाएँ......

लुब्धा : अब ज्यादा देखने की जरूरत नहीं ।

(करटकशास्त्री प्रवेश करता है ।)

राम : शास्त्रीजी, इधर आइए । **(दोनों आपस में बातें करते हैं ।)**

राम : **(लुब्धावधानी को अलग ले जाकर)** चौदह सौ माँग रहा है । सुना, कोई तेरह देने को तैयार है ।

लुब्धा : यह है क्या आपकी सहायता ? जाने दीजिए । बारह में तय करा दीजिए ।

राम : उपकार करने जाइए तो निंदा सिर पर ।......हम स्वयं जाकर पूछें तो सिर पर चढ़ जाते हैं । (करटकशास्त्री से अलग बातें करके) मामाजी, किसी भी तरह राजी कर दिया है । कन्या के लिए कुछ तो सोने के गहने देने का हठ कर रहा है ।

लुब्धा : वह मुझसे नहीं होगा ।

राम : अरे, चुप रहो । अब तो हामी भर दो । मधुरवाणी का कंठहार, समय पर उसके गले में पहनाकर, फिर ले जाऊँगा ।

लुब्धा : वह सब आप ही देख लीजिए ।

राम : ठीक है, खर्चा-वर्चा हमीं देखकर, कम खर्च में झटपट काम पूरा कर लेंगे । पोलिसेट्टि से बात मत कीजिए । पेद्दपालेम् के पुरोहित को बुलाने कौन जाएगा ?

लुब्धा : उसके लिए मेरा कौन है ? आपको ही बुलवाना होगा ।

राम : वहाँ जाने के लिए ड्रेस (dress) अच्छा चाहिए । पेटी से कोट-पगडी निकाल लूँगा ।

(प्रस्थान)

चौथा दृश्य

(लुब्धावधानी का घर । घर के सामने चबूतरे पर पीले कपड़े (शादी के लिए) पहनकर लुब्धावधानी और कन्यावेषधारी शिष्य तथा कुछ वैदिकी ब्राह्मण बैठे हुए हैं ।)

(रामप्पा बाजे-वाजे, कावड़ (सामने से भरे), नौकरों के साथ आकर, चबूतरे पर बैठ जाता है ।)

राम : बहुत थक गया जी । (नौकर से) बाजे वालों से कह दो कि बजाना बंद कर दें । भोई और बाजेवाले गाँव पहुँचने के बाद खूब शोर मचाने लग जाते हैं ।......पेद्दपालेम् काफी दूर है। टाँगों में बहुत दर्द होने लगा है । (देखकर) यह क्या पीले वस्त्र पहनना और दुलहिन के साथ बैठना! दूल्हे का वेष धारण कराया! वाह, बुढ़ापे में शौक ज्यादा!

लुब्धा : ऐन मुहूर्त के समय आप यहाँ रह नहीं पाए, इसका बड़ा खेद हो रहा है ।

राम : (चौंककर) क्या कहा ? मुहूर्त की वेला!

पुजारी : ठीक मुहूर्त के समय आप नहीं आ सके, इसपर हम सब लोग बड़े दुखी हुए । किसी मामले में फँस जाने के कारण नहीं आ सके, यही सोचा था । आपके न होने से सभा की शोभा ही नहीं रही । आप जैसे व्यवहार-कुशल व्यक्ति के......

राम : बकवास बंद करो । मुहूर्त से पहले ही मंगल सूत्र कैसे बँधवाया?

पुजा : प्रातः काल के चार घड़ी पहले है न शुभमुहूर्त !

राम : सिद्धांती ने बताया था कि पौ फटने के चार घड़ी के बाद मुहूर्त का निश्चय किया ।

पुजा : पंचांग को बदलाना किसके बस की बात है बाबूजी! सिद्धांती ने बताया होगा कि पौ फटने से पहले और आपने सुना होगा पौ फटने के बाद......।

राम : इस सत्यानाशी गाँव में पंचांग कहाँ ? सिद्धांती जो कहे, वही वेदवाक्य है । कितना द्रोह! विश्वासघात किया है सिद्धांती ने!

पुजा : सिद्धांती को भी बड़ा खेद हुआ, आपकी अनुपस्थिति का । अवधानीजी तो व्याकुल हो गए, पता नहीं, किस कारण से आप नहीं आ पाए । बाजे-वाजे की आवाज सुनने के बाद तो उनका मन स्वस्थ हुआ !

लुब्धा : सच मामाजी!

पुजा : अब मधुरवाणी की बात । शामियाने के नीचे अचेतन, स्वर्ण-प्रतिमा के समान खड़ी रह गई । उपस्थित सभी लोगों के आग्रह करने पर भी एक गीत तक नहीं गा सकी ।

कोंडुभट्ट : उतनी देर हेडकान्स्टेबिल के साथ बातें करती खड़ी रही । इतने लोगों के प्रार्थना करने पर एक गीत गाती तो उसका क्या जाता?

एक और ब्राह्मण : अरे मूर्ख, पंतुलुजी की अनुपस्थिति में कैसे गाती ?

पुजा : हेडजी से क्या बातें कर रही थी, जानते हो ? पंतुलुजी बड़ी रक़म साथ ले गए हैं । पता नहीं, किस आफत में फँस गए हैं । मुहूर्त के समय नहीं आए । पुलीस के जवानों को उन्हें ढूँढ लाने के लिए, भेजने को कह रही होगी ।

राम : छोड़ो इन बातों को । गुन्टूर का वह शास्त्री कहाँ है ?

पुजा : कौन ?

राम : वही गुन्टूर का शास्त्री ।

पुजा : गुन्टूर का शास्त्री कौन ?

लुब्धा : वह......वह आकर......वह......गाँव चला गया ।

राम : कैसी मूर्खता की बात ? बेटी की शादी हो रही हो, वह गाँव कैसे चला गया ?

लुब्धा : शादी हो गई न ?

राम : बुद्धिहीनता! मुहूर्त तो मेरे बगैर हो गया; लेकिन वैवाहिक-कार्य तो पाँच दिन तक होते होंगे न !

पुजा : एकरात्र विवाह है न । इसलिए प्रधान होम, शेष होम के बाद विवाह समाप्त हो गया ।

राम : (अवाक् होकर, थोड़ी देर के बाद लुब्धावधानी से) अरे स्वामी-द्रोही! भड़ुए!

पुजा : (मुँह बंद करके) बाबू, शांत होइए, शांत । (अवधानी से) अरे, पंतुलु के पैर पड़ो न! (रामप्पा से) आपका कराया हुआ शुभकार्य है । अशुभ वाक्य मत बोलिए । सिद्धांती और अवधानी के ससुरजी ने शास्त्र-चर्चा करके, मुहूर्त से दस मिनट पहले एकरात्र विवाह करने का निश्चय किया ।

राम : कैसा षड्यंत्र! उसे रकम तो नहीं दी न ?

लुब्धा : परसों तक ऋण नहीं चुकाऊँगा तो दावा दायर हो जाएगा, यह कहकर पूरी रकम लेकर चले गए हैं । एक हफ्ते के बाद आने का वचन दे गए हैं ।

राम : मुझे बिचवैया बनाकर, मेरी गैरहाजिरी में सारा मामला कैसे पूरा किया ? मैंने उसे कितना अड्वान्स दिया, तुम्हें मालूम है ? अभी से ससुर से मिलकर, मुझे धोखा दिया ?

लुब्ध। : उन्होंने कहा कि पंतुलुजी का निर्णय है, जब तक रकम हाथ में नहीं आएगी, तब तक सूत्र बाँधने नहीं दूँगा। फिर करूँ क्या?

राम : सूत्र नहीं बाँधोगे तो तुम्हारा बेड़ा डूब जाएगा क्या ? मेरे आने से पहले ऐसा कौन-सा तूफान आ गया ? उसने तुम्हें बड़ा धोखा दिया है, मैं आऊँगा तो अड्वान्स के रुपये कम कर दूँगा न। यह सोचकर रुपये लेकर, भाग गया है। उसका नाम क्या है?

पुजा : नाम......नाम......अवधानी, तुम्हीं बताओ।

लुब्धा : मुझे नहीं मालूम।

राम : अरे अभागे, अब तो साफ़ हो गया कि वह धोखेबाज है।

लुब्धा : आप ही उसे ले आए थे और कहा था कि सज्जन है, पंडित है। मैंने आपकी बातों पर विश्वास किया।

राम : तुम विश्वास करो या न करो, क्या होने वाला है ? मैंने उसे जो सौ रुपये दिए थे, वे मुझे दे दो।

लुब्धा : जिसे दिया, उसीसे माँग लीजिए। मुझसे क्यों माँगते हैं ?

राम : ऐसा......तब तुम से माँगूँगा नहीं......अब तुम से बात तक नहीं करूँगा......अब तुम्हारे घर में पल भर नहीं रहूँगा। (उठ खडे होकर) सब लोग सुनें। वह गुन्टूर का शास्त्री एकदम धोखेबाज है। नहीं तो इस मूर्ख की दी रकम लेकर, अपना नाम तक न बताकर भाग जाता ? मेरा पैसा भी लेकर भाग गया है। लगता है कि दूसरी शादी की कन्या या अब्राह्मण कन्या को इस मूर्ख के सिर मढ़कर, पैसा लेकर भाग गया। अरे, उस हेड के पास जाकर दो पुलीस वालों को ले आ। उसके पीछे दौड़ूँगा।

(रामप्पा के इस प्रकार बातें करते समय सिद्धांती प्रवेश करता है। रामप्पा के अपनी बात पूरी करके जाते समय, सिद्धांती उसकी भुजा पकड़कर रोक लेता है।)

सिद्धां : कहाँ जा रहे हैं ? थोडी देर रुकिए ।

राम : तुम्हारा कैसा आदेश ?

सिद्धां : गुन्टूर के शास्त्री का नाम आपको चाहिए ?

राम : क्या है उसका नाम ?

सिद्धां : पेरिशास्त्री । उनके नाम से आपको क्या काम ?

राम : उसकी तरफ से मुझे रुपये मिलने हैं ।

सिद्धां : एक पैसा भी देना नहीं है । मुझे वह सच्चाई मालूम ।

राम : हाथ क्यों दबा दे रहे हो ?

सिद्धां : हम ठहरे वैदिकी । हाथ नाजुक कैसे रहेगा ? अवधानी जी ने जो रुपये दिए, उनमें बचे कितने हैं ? बताइए ।

राम : तुम कौन होते हो हिसाब पूछने के लिए ? हाथ दबा दे रहे हो? कहीं लात मारोगे क्या ?

सिद्धां : शुभकार्य के समय 'विधवा, रंडा' कहोगे तो कौन चुप रहेगा ?

राम : रंडा नहीं सुमंगली ही कहूँगा । हाथ छोड़ दो ।

(लुब्धावधानी कन्यारूपी शिष्य की ओर सरकता है ।)

सिद्धां : क्रोध में भी दुनियादारी को नहीं भूलना चाहिए । आप ठहरे प्रभु और हम आश्रित । आपके लिए लाभप्रद बात बताऊँगा। जरा इधर पधारिए ।

राम : आदर देकर बात करोगे तो मेरे समान भलमानस दूसरा नहीं होगा ।

सिद्धां : अवधानीजी, आप भी इधर आइए ।

(तीनों गुप्त रूप से कानाफूसी करते हैं ।)

राम : (उत्साह से) सिद्धांती, तनिक नास । नियोगी तो तर्क के सामने सिर झुका देता है । कौन हैं जी रसोई-ब्राह्मण! हमारे घर मीठा-नमकीन भेजा कि नहीं ? अरे कोंडुभट्ट, इधर आ ।

(कोंडुभट्ट आता है ।)

कोंडु : क्या आदेश है ?

राम : घर तक मेरे साथ चल ।

कोंडु : जी ।

राम : हमारे बगीचे में अच्छे कटहल हैं । दो कटहल दूँगा । तुम्हारे यजमान को कटहल की साग बहुत पसंद है ।

कोंडु : जी ।

राम : शादी के समय क्या तमाशा हुआ ?

कोंडु : कुछ भी नहीं ।

राम : मधुरवाणी गाई क्यों नहीं ?

कोंडु : गाई थी ।

राम : हें......!

कोंडु : नहीं......।

राम : ऐसा कहो । उतनी देर हेड से बातें करती रही ।

कोंडु : नहीं, उससे एक बात तक नहीं की ।

राम : फिर......अभी कहा था न बातें करती रही, खिलखिलाकर हँसती रही ।

कोंडु : हाँ......नहीं......वह......वह......लिंगन्ना के कामभट्ट ने कहा कि ऐसा ही कहूँ ।

राम : उसकी बात देख लूँगा । मुझसे मजाक! तुम उसकी दोस्ती मत करो । बचपन से मैं तुम्हें जानता हूँ । तुम ईमानदार हो ।

कोंडु : जी, मैं हमेशा सच ही बोलता हूँ ।

राम : ठीक है, हेड की बात तो सच नहीं बताई । भगवान की कसम खाकर कहो, मधुरवाणी ने किस-किस से बात की है ?

कोंडु : फिर......सच्ची बात बता दूँ ?

राम : ईमानदार आदमी हो, इसीलिए तुम से पूछ रहा हूँ ।

कोंडु : तो......उसने सब के साथ बातें की हैं ।

राम : याने......किस-किस के साथ ?

कोंडु : कौन-कौन ? शादी को छोड़ हम सब लोगों ने मधुरवाणी को घेर लिया । यजमान से बातें कीं । और......

राम : बताओ न ?

कोंडु : फिर......हेड से ।

राम : अरे लुच्छे, अभी कहा था कि हेड से नहीं ।

कोंडु : हाँ, हेड से बात नहीं की ।

राम : अरे बदमाश, बात नहीं की ?

कोंडु : अरे, मर गया रे भगवान !

राम : झूठी बातें सुनकर मैं आग-बबूला हो जाता हूँ । कसम खाकर सच-सच बोलो । नहीं तो सिर के टुकडे-टुकडे हो जाएँगे । बात की या नहीं ?

कोंडु : नहीं......

राम : सच......

कोंडु : बिलकुल सच ।

राम : अब तुम ने सच्ची बात बताई । सुनो, तुम अभी छोटे हो । औरतों के बारे में, किसीके कहने पर भी, झूठी बातें नहीं कहनी चाहिए ।

कोंडु : मधुरवाणी तो बहुत अच्छी है ।

राम : गाँव के लोग ऐसा मानते हैं क्या ?

कोंडु : सब यही कहते हैं ।

(परदा गिरता है ।)

● ● ●

पाँचवाँ दृश्य

(गिरीशम् ऊखली को छाया में खींच लाता है । बुच्चम्मा उसे धोकर, उड़द की दाल डालकर, पीसने लग जाती है ।)

गिरी : भाभीजी, आँखों में आँसू कैसे ?

बुच्च : कुछ नहीं......।

गिरी : आपकी आँखों में आँसू देखकर, मेरा कलेजा मुँह को आता है।

बुच्च : आपको क्या......महाराज समान हैं । हमारी मुसीबतें हमको ही सताती हैं ।

गिरी : कैसे कठोर वचन बोल रही हैं ? आप इस तरह दुखों में डूबी रहें तो मेरी जिंदगी किस दिन के लिए ? आपके लिए, आप जो चाहें, वह करने को तैयार हूँ । जान तक दे देने को तैयार हूँ । यह लीजिए दराती ।

बुच्च : (दराती को पास लेकर) बहन की यह शादी टल नहीं पाई ।

गिरी : वह एक काम संभव नहीं हुआ ।

बुच्च : तब तो आप से मेरा क्या काम ? इतने जोर-शोर से शादी की तैयारियाँ करा रहे हैं । बापू को नहीं लगा, कम से कम आपको तो सूझना चाहिए कि यह शादी उचित नहीं है । आपको भी उसपर दया नहीं करनी चाहिए ? लुब्धावधानी आपके भाई हैं न । शायद यह सोचकर आप खुश हैं ।

गिरी : मुझे खुशी ? कितनी कठोर बात कही है! यह रिश्ता तय हो रहा है, यह जानकर मैं दिल ही दिल कितना दुखी हो रहा हूँ, भगवान ही जाने । अपने भाई को दो फुलस्केप पेजस में पत्र लिखा है । उसने मेरी एक न सुनी । फिर क्या करूँ ? उसका नाम लेना ही पाप है । यूँही बैठा रहूँ तो पता नहीं, आपके पिताजी क्या समझेंगे, यह सोचकर घरभर का, सौ लोगों का काम, मैं अकेला कर रहा हूँ । इतना ही है । इस विश्वास-पात्र नौकर पर आपके मन में दुर्भाव है तो चुपचाप आज रात को ही अपने गाँव की राह लूँगा ।

बुच्च : मत जाइए । यह घर छोड़ मत जाइए ।

गिरी : मैं जाऊँगा भी कैसे ? कई बार यों सोचता हूँ 'इस शादी को टाल नहीं सका न! अपने प्राणों से भी प्रिय......सोने की पुतली बुच्चम्मा को सुमंगली नहीं बना सका न! ऐसा सोचकर जीवन से विरक्त हो, निकल जाने के लिए उतावला बन रहा हूँ । लेकिन निकल जाने पर मेरी अपनी बुच्चम्मा न दिखाई पड़े तो जीवित कैसे रह सकूँगा ? उसके मन में मेरे प्रति दया नहीं है, फिर भी यहीं रहकर, उसे आँख भर देखते हुए दिन बिता दूँगा।' ऐसा सोचकर, यहाँ से जा नहीं पा रहा हूँ ।

बुच्च : मेरे भाई ने कहा कि अगर आप कहें तो लुब्धावधानी यह शादी नहीं करेंगे ।

गिरी : मेरी बात को इस लोक में कोई टाल नहीं सकता । इसलिए वेंकटेशम् ने ऐसा कहा होगा । लेकिन एक तुम्हारे पिताजी और दूसरे मेरे भाई.....लोकातीत हैं । ब्रह्मा का कहा भी नहीं मानते। ये क्रोधी स्वभाव के तो वह लोभी......। अपने सुख के लिए मेरे भाई ने यह शादी करने की नहीं सोची है । तुम्हारे पति ने तुम से शादी करके तुम्हें जितना सुखी बनाया है, उससे ज्यादा तुम्हारी बहन को सुखी नहीं बनाएगा । मैं ने लाख मना किया लेकिन मेरी बात सुनी तक नहीं । इसके अलावा मेरे मन में एक और आशंका हो रही है । कहूँ तो नाराज़ नहीं होओगी न ?

बुच्च : आप कुछ भी कहें, मैं नाराज़ नहीं होऊँगी ।

गिरी : उतनी तसल्ली दोगी तो मुझे और क्या चाहिए ? वहाँ के (रामचन्द्रापुरम् के) ब्राह्मण बहुत दुष्ट हैं । मेरे भाई के मरने के बाद तुम्हारी बहन को ठीक तरह जीने नहीं देंगे । उसकी गति भी मीनाक्षी के समान हो जाएगी ।

बुच्च : मीनाक्षी को किस बात की कमी है ?

गिरी : क्या कहूँ ? घर की बात, बाहर कैसे कहूँ ? फिर भी तुम से क्या छिपाऊँ ? मेरे भाई के मरने के दूसरे क्षण, तुम्हारी बहन

अपार संपत्ति की अधिकारिणी बन जाएगी । वह स्वतंत्र हो जाएगी । पूछने वाला, अच्छा-बुरा बताने वाला कोई नहीं होगा। तब बिगड़ जाने में संदेह कहाँ रहेगा ? तुम कह सकती हो कि मैं तो नीति-नियम का पालन कर रही हूँ । तुम्हारे पति की संपत्ति में से एक पैसा भी तुम्हारे हाथ नहीं आया ना । तुम तो पति के घर तक नहीं गई हो ।

बुच्च : हाँ, सही......

गिरी : माता-पिता के पास निष्ठापूर्वक दिन बिता रही हो । पराया आदमी घर में कदम नहीं रख सकता । लेकिन ऐसा कितने दिन चल सकता है ? माता-पिता चिरकाल तक तुम्हारी रक्षा नहीं करेंगे । उनके गुजर जाने के बाद तुम स्वतंत्र बन जाओगी । मन कब कौन-सा पलटा खाएगा, कह नहीं सकते । एक बार फिसल जाने के बाद, तुम क्या सोचोगी ? 'अरे हाय, गिरीशम्जी के साथ शास्त्रोक्त रूप से मेरी शादी हो जाती, सुमंगली बन जाती जो बाल-बच्चों के साथ, अष्टैश्वर्यों के साथ सुखी और संपन्न रहती न! मेरी यह दुर्गति नहीं होती न ।' ऐसा सोचकर तब पछताओगी । तब मैं कहाँ रहूँगा ? स्वर्ग में तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहूँगा । यह शादी हो जाने के बाद मैं वेंकटेशम् के साथ शहर चला जाऊँगा । वहाँ तुम्हारी याद करते निद्राआहार छोड़कर, कुछ दिन जीवित रहूँगा । कितने दिन आदमी निद्रा और आहार छोड़कर रह सकेगा ? तुम्हारा स्मरण करते-करते, नींद के न आने पर, रात के दो बजे आराम-कुर्सी पर लेटकर, सामने वाले आइने में अपनी सूरत देखकर यों सोचता कि यह सुंदर मुख, कमल के समान नेत्र, ये मूँछें—ये सब व्यर्थ हैं न? इन्हें देख प्रसन्न होने वाला कौन ? जब बुच्चम्मा मुझसे शादी नहीं करेगी तो यह जीवन ही व्यर्थ है । ऐसी विरक्ति के होने पर, मेज के ड्रायर से पिस्तौल निकालकर, अपनी छाती को निशाना बना कर, फटाफट दाग लूँगा ।

बुच्च : नहीं, नहीं, ऐसा मत कीजिए । मुझे रोना आ रहा है ।

गिरी : उसी क्षण देवता विमान भेजकर मुझे स्वर्ग ले जाएँगे । स्वर्ग जाने पर भी भाभी, मैं सुखी रहूँगा ? नहीं । सर्वाभरणों से विभूषित होकर, इठलाते हुए रंभा के मेरे पास आने पर भी मैं उसकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखूँगा । कहूँगा कि तुम कहाँ और बुच्चम्मा कहाँ ? तुम उसकी चरण-रेणु के समान भी नहीं हो । गो एवे (go away), डैम (Damn), डर्टी गूस (dirty goose) कहकर लात मार भगा दूँगा । इसी प्रकार समस्त अप्सराओं को भगाकर, काषाय वस्त्र पहनकर, कल्पवृक्ष के तले 'हा बुच्चम्मा ! बुच्चम्मा' रटते हुए, तुम्हारे नाम का जप करते हुए, पद्मासन-स्थित होकर, कई वर्ष तपस्या करता रह जाऊँगा। इस प्रकार कुछ वर्षों के बीत जाने के बाद, तुम नंदनवन में चंद्रोदय के समान वहाँ आ जाओगी । 'हा प्रिये, कितने दिनों के बाद आ गई हो !' कहते हुए, झट तुम्हें आलिंगन में ले लूँगा। तब तुम्हारा पहला पति, बुड्ढा, तौलिया पहनकर, नास भरी नाक से आएगा और कहेगा कि 'बुच्चम्मा तो मेरी पत्नी है ।' मैं यह कहते हुए कि 'अरे बेभवा, तुम बुच्चम्मा के योग्य नहीं हो, ये ले जाओ अपने रुपये' उसे एक लात मारकर भगा दूँगा । तब हम दोनों स्वर्ग-सुख भोगते हुए, शाश्वत रूप से रह जाएँगे ।

बुच्च : अपनी बातों से रोने वाली को भी हँसा देते हैं ।

गिरी : अगर तुम मुझसे शादी करोगी तो जीवन भर हँसते हुए, आनंद से समय बिता सकेंगे । तब तुम्हें इस प्रकार ऊखली के पास बैठने दूँगा क्या ? हमारे कितने नौकर-चाकर होंगे ! बाग-बगीचे, घोड़े-गाड़ियाँ...... तुम्हें पैदल चलते दूँगा क्या ? फूल के समान सिर पर चढ़ा लूँगा । उस अपने आनंद के बारे में सोच लो ।

बुच्च : इस जन्म में उतना आनंद कहाँ ?

गिरी : मैं तुम्हारा दास बनकर यह कह रहा हूँ कि 'मुझे स्वीकार कर लो और आजन्म इतना आनंद भोग लो' । तुम इस सुख को लात मार कर, अपने और मेरे जीवन को भी धूल में मिला देना चाहती हो तो मैं क्या कर सकता हूँ ?

बुच्च : आपको क्या ? आप तो मर्द-महाराज हैं !

गिरी : तुम मेरे साथ शादी करोगी तो तैं सचमुच महाराज हूँ । तुम्हारा वचन अमोघ है । उसका व्यर्थ नहीं होना चाहिए । आ जाओ मेरे साथ ।

बुच्च : आपके साथ ? नहीं......नहीं......।

गिरी : ठीक है, नहीं आओगी तो मैं प्राण त्याग दूँगा । बला सदा के लिए टल जाएगी ।

बुच्च : ऐसी बातें मत कहिए ।

गिरी : जो करने जा रहा हूँ, उसे बता देने में क्या बुरा है ? मेरा कुछ भी हो जाए, कम से कम अपनी छोटी बहन पर तो तुम्हारे दिल में दया होनी चाहिए ।

बुच्च : ऐसा क्यों कह रहे हैं ?

गिरी : सचमुच दया है क्या ?

बुच्च : कैसे नहीं होगी ?

गिरी : तब इस शादी को टालने का साधन तुम्हारे हाथों में है ।

बुच्च : मेरे हाथों में ?

गिरी : बिलकुल......

बुच्च : कैसी अजीब बातें......?

गिरी : इस भूप्रपंच पर स्थित समस्त नारियों में अकेले से प्रेम कर, एकदम तुम्हारा दास बन जाने के कारण तो मैं मजाक का पात्र बन गया न ?

बुच्च : नहीं, नहीं......मेरी कसम, ऐसा मत कहिए ।

गिरी : तो अपनी बहन की शादी को टाल देने के लिए कुछ कर सकोगी?

बुच्च : क्यों नहीं ?

गिरी : पता नहीं, करोगी कि नहीं ? 'करूँगी' ऐसा कसम खा लो ।

बुच्च : क्या कहकर कसम खाऊँ ?

गिरी : मेरी कसम खा लो ।

बुच्च : आपकी क़सम । कहिए, क्या करूँ ?

गिरी : तब सुनो । तुम्हें अकेली पाकर यह बात कहना चाह रहा था तो आज वह अवसर मिल गया । ध्यान से सुनो । तुम्हारी बहन की शादी को टाल देने के लिए एक ही उपाय है । वह यह है । आगे-पीछे सोचे बगैर तुम मेरे साथ चली आओ और मेरे साथ शादी कर लो । नहीं तो तुम्हारी बहन की शादी को कोई रोक नहीं सकेगा ।

बुच्च : (मुस्कुराती हुई) मैं आप के साथ भाग आऊँगी तो मेरी बहन की शादी रुक जाएगी ? वाह, क्या अजीब बात कह रहे हैं ?

गिरी : तुम्हीं मान जाओगी । सुनो, शादी के लिए जाते समय हम चुपचाप निकल भाग जाएँगे और रामवरम् में शादी कर लेंगे। जब यह बात तुम्हारे पिता को मालूम हो जाएगी तो वह बुड्ढे के साथ तुम्हारी बहन की शादी करने से इनकार कर देगा । या जिद्द पकड़े रहेंगे तो यह बात मालूम हो जाने पर मेरा भाई तुम्हारी बहन के साथ शादी करने के लिए राजी नहीं होगा । ठीक है कि नहीं ?

बुच्च : शायद सच है ।

गिरी : फिर तुम राजी हो न ?

बुच्च : किसके लिए ?

गिरी : मेरे साथ भाग निकलने के लिए ।

बुच्च : ओह......नहीं......जान निकल जाए......पर आपके साथ नहीं आऊँगी ।

गिरी : नहीं आओगी तो तुम्हारी बहन की शादी होकर रहेगी । मेरी मौत भी निश्चित है ।

बुच्च : ऐसा मत कहिए ।

गिरी : न कहूँ तो मौत रुकेगी क्या ? तुम्हें छोड़ जी नहीं पाऊँगा। वह एक तरह की मौत है । तुम ने मेरी क़सम खाकर वचन दिया।

अब तुम वचन न निभाओगी तो भगवान ही मुझे मार डालेगा। वह दूसरे प्रकार की मौत है । बहरहाल मेरे लिए मौत तो निश्चित है ।

बुच्च : मेरे कारण आप मर जाएँगे तो मैं भी मर जाऊँगी । मर मत जाइए न !

गिरी : वह मेरे हाथ में कहाँ है ? वह देखो, तुम्हारा भाई आ रहा है। हम लोगों को बात करने का मौका नहीं मिलेगा । एक बात कह दो । मरूँ कि जीऊँ ?

बुच्च : हजार वर्ष जीते रहिए ।

गिरी : तो मेरे साथ आ जाना निश्चित है न ?

बुच्च : आप जो कहेंगे वह करूँगी ।

(वेंकटेशम् टिड्डी को हाथ में पकड़कर प्रवेश करता है ।)

गिरी : देखा भाभी, तुम्हारा भाई । उमर में छोटा होने पर भी भामाओं को पकड़ रहा है ।

बुच्च : (मुस्कुराती हुई) वह तो टिड्डी है ।

गिरी : इतने दिनों के बाद हाथ में फँस गयी ।

(परदा गिरता है ।)

● ● ●

तीसरा अंक

पहला दृश्य

(लुब्धावधानी का शयन-कक्ष । पलंग पर लुब्धावधानी । नींद से हाथ-पैर मारते उठ बैठता है । काँपता रहता है ।)

लुब्धा : अरे असिरी! असिरी! अरे मार डाला रे । 'राम नाम तारकम्, राम नाम तारकम्, राम नाम तारकम् ।' यह दूसरी बार विवाह के लिए तैयार रंडी ही है । इसका पहला पति पिशाच बन गया है । मेरा गला घोंटने आया है । क्या करूँ ? बचने का क्या उपाय ? 'राम नाम तारकम्......राम नाम तारकम् ।'

(बाहर से असिरी । 'क्या है बाबूजी' कहते हुए दरवाजा खटखटाता है ।)

मीनाक्षी: क्या है बापू ? दरवाजा खोलो ।

लुब्धा : (अपने से) हाथ-पैर नहीं हिल रहे हैं । शरीर काँप रहा है । (दरवाजा खोलता है । असिरी से) अरे भड़ुए, तू भीतर मत आ।

असिरी : मैं तो बुलाने पर आया हूँ । (जाता है ।)

(मीनाक्षी और कन्यारूपी शिष्य का प्रवेश)

लुब्धा : (मीनाक्षी से) उस रंडी को बाहर ही रहने को कह दो ।

मीना : तुम मेरे कमरे में चली जाओ मैया! (वह चला जाता है ।) क्या बात है बापू ?

लुब्धा : अब मैं जीवित नहीं रहूँगा ।

मीना : क्या हुआ बापू ? पेट में दर्द या पैर में दर्द ? बताओ न !

लुब्धा : न पेट में दर्द है न पैर में । विधवा से विवाह करनेवाला अभागा हूँ । जीता कैसे रहूँगा ?

मीना : ये कैसी बातें बापू! किसने आपके मन में यह संदेह पैदा किया?

लुब्धा : संदेह कैसा ? सारा गाँव उसी बात को सच बता रहा है ।

मीना : रामम्पा पंतुलु ऐसी अफवाहों को फैलाता रहता है । हर एक से कहता फिरे तो सारा गाँव यही सोचेगा न । सोने की पुतली जैसी लड़की को डराइए मत । कहे बगैर पिता चले गए, इस बात को लेकर वह दिन-रात रोती बैठी है ।

लुब्धा : वह मुंडा पिता! बदमाश! गधे का बच्चा! विधवा का मेरे साथ .....मेरे साथ शादी कराकर, मुझे सरासर डुबो दिया । मैं अब जीवित नहीं रहूँगा, जीवित नहीं रहूँगा ।

मीना : अब मौत की बातें क्यों कर रहे हैं बापू ? मान लीजिए, यह सच है तब भी आपको खामोश रहना चाहिए । आप ही शोर मचाएँगे तो कैसा ? इन दिनों दूसरी बार शादी करके क्या लोग सुख से जीवन नहीं बिता रहे हैं ? लड़की गुणवती है । आपको किस्मत से मिली है । अब चुप भी रहिए ।

लुब्धा : मेरी किस्मत तो मिट्टी में मिल गई है । तुम ये कैसे बातें कर रही हो ? कहीं तुम भी उस षड्यंत्र में शामिल हो गई क्या ? ......(अपने को गाली देते हुए) अरे, विधवा से शादी करने वाले मूर्ख! तुम्हारी अक्ल कहाँ चरने गई थी रे ? तुम्हारी शिक्षा-दीक्षा कहाँ भटक गई रे ? तुम्हारा वेद-ज्ञान मिट्टी में मिल जाए! ......अब तुम्हें जीवित नहीं रहना चाहिए । **(मीनाक्षी हँसती है।)** हँसती क्यों हो री भ्रष्टा! तुम और तुम्हारी सौतेली माँ मुझे मारकर, राजमहेंद्रम्[1] जाकर विधवा विवाह कर लेंगे न! मुझे मालूम है । गिरीशम् की बात सच है । वेधवा होने से उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया । मेरी सारी संपत्ति घटाश्राद्ध[2] करने वाले के हाथ चली जाएगी । छिः जा......मैं सो जाऊँगा । (पलंग पर लेटते हुए) अरे भगवान, शायद फिर आएगा वह ।

मीना : कौन बापू ?

---

1. राजमहेंद्रवरम् नामक नगर में कंदुकूरि वीरेशर्लिंगम पंतुलु (सुप्रसिद्ध समाजसुधारक) का मुख्य-कार्यालय था ।
2. मृतक के शरीर के न मिलने पर, घड़े में उसकी आत्मा का आवाहन करके, किया जानेवाला श्राद्ध-कर्म ।

लुब्धा : अरी, तू चली जा । तुझे क्यों ? वह लुच्छा मेरा गला घोंट देगा और तेरी इच्छा पूरी होगी ।

मीना : आप ऐसी बातें करेंगे तो मुझे रोना आएगा बापू! मैं यहाँ से हटूँगी नहीं । कौन है वह......आपका गला घोंटने वाला ?

लुब्धा : तब तो तू भी यहीं बिस्तर डालकर लेट जा ।

मीना : ठीक है......पर यह बताइए कि आपका गला घोंटने वाला वह कौन है ?

लुब्धा : वही......उस रंडी का पहला पति । अभी थोड़ी देर पहले मेरी छाती पर सवार होकर, गला घोंटने लगा तो ऐसा लगा कि जान निकल ही गई ।

मीना : सच ?......सपना आया होगा बापू!

लुब्धा : सपना कहाँ ?......गला घोंट दे रहा था ।

मीना : आपको कैसे मालूम कि वह पहला पति है ?

लुब्धा : उसीने बताया । कह रहा था, अरे भड़ुए, मेरी पत्नी से शादी की है न । अब तुम्हें मार डालूँगा ।

मीना : कैसी शक्ल-सूरत थी ?

लुब्धा : एकदम गिरीशम् जैसा था ।

मीना : सपना हो सकता है बापू! उसीके बारे में सोचते-सोचते सो गए तो चाचा सपने में दिखाई पड़ा होगा ।

लुब्धा : मैं मरूँ तो किसे दुख होगा ?

मीना : उस लड़की से पूछ आऊँ ?

लुब्धा : नहीं, नहीं, जल्दी मत कर ।

मीना : मुझे डाँट दे रहे हैं । उसका मृतक पति आपको मार डालेगा, यह सोचकर भय खा रहे हैं । यह सारा संदेह-संशय क्यों ? एक बार सीधे उसीसे पूछ लेंगे तो बात स्पष्ट हो जाएगी ।

लुब्धा : वह सच्ची बात तुम्हें बताएगी क्या ?

मीना : मुझे सच-सच बता देगी । वह बड़ी भोली-भाली लड़की है । मेरी बड़ी सेवा कर रही है ।

लुब्धा : उसको भी बिगाड़ दे रही हो ?

मीना : ऐसी बातों से मुझे नफरत है। कहीं डर गए होंगे। इसलिए बुरा सपना आया होगा। इतना ही है। बेकार ही दूसरी शादी, दूसरी शादी कहकर शोर मत मचाइए। पुजारी गवरय्या को बुलाऊँगी। वह मंत्रित कर बभूत देगा। उसे लगाकर सो जाइए।

लुब्धा : अरे, उसे बुलाओगी तो उससे क्या कहूँगा ? खैर, उस लड़की से ही पूछ लो।

मीना : मैं नहीं पूछूँगी बापू! मुझे बे सिर-पैर की गालियाँ सुना रहे हो। मैं क्यों पूछूँ ? मैं अब उससे बात तक नहीं करूँगी।

लुब्धा : ऐसा नहीं। तुम मेरी मैया हो न! जरा पूछ लो।

(मीनाक्षी जाती है।)

लुब्धा : वेद का एक मंत्र पढ लूँ ? गायत्री का स्मरण कर लूँ ?......इन पिशाचों के सामने क्या वेदमंत्र काम कर सकेंगे! अब क्या करूँ? 'रामनाम तारकं' का जाप कर लूँगा। 'रामनाम तारकं, भक्ति-मुक्ति दायकम्। जानकी मनोहरं, सर्वलोक नायकम्। रामनाम तारकं, रामनाम तारकम्।' वह रंडी इस घर में रहेगी तो मैं जीता नहीं बचूँगा। 'रामनाम तारकं, रामनाम तारकम्।' कहाँ है रुद्राक्ष की माला ? **(पलंग के कोने पर बैठकर, बिस्तर के नीचे ढूँढकर, माला निकालता है। मीनाक्षी का प्रवेश।)**

मीना : आपकी बात सच है बापू!

लुब्धा : सच है! **(पलंग पर से नीचे गिर जाता है।)**

मीना : **(उठाकर)** बापू! बापू! ऐसा क्यों गिर गए ?

लुब्धा : कुछ भी नहीं......सच है न!

मीना : सच है। उसका पहला पति अभी-अभी उसे भी दिखाई पड़ा और बोला कि अरी रंडी, दुबारा शादी कर ली ? देख, अभी तेरे नए पति का गला घोंट दूँगा।

लुब्धा : हाय-हाय, रामप्पा पंतुलु का मकान श्मशान बन जाए। यह अभागा रिश्ता मेरे सिर क्यों मढ़ दिया ? इस पंतुलु का पिंड

बिल्लियों को खिलाया जाए । हाय, उसके पति-पिशाच के रूप के बारे में कुछ बताया क्या उसने ?

मीना : सुना, वह रोज उसे दिखाई पड़ता है । उसके मूँछें, लंबे-लंबे बाल हैं । रंग साँवला है ।

लुब्धा : वही, वही......अब क्या करूँ ? क्या उपाय है ? अब तो मैं जीवित नहीं रह पाऊँगा ।

मीना : पुजारी गवरय्या को बुला भेजूँ ?

लुब्धा : नहीं, नहीं । मेरी बात मानो । वह आएगा तो सारा घर खा जाएगा ।

मीना : खाएगा तो खाने दीजिए । जान से बढ़कर है क्या ?

लुब्धा : लाख मना करने पर भी मेरी बात नहीं मानती हो न! मेरे पलंग के पास बिस्तर डालकर सो जाओ । श्रीमद्‌भागवत ले आओ। सिरहाने रखकर सो जाऊँगा । (मीनाक्षी जाती है ।) जब यह रंडी मेरे घर से जाएगी तभी इस पिशाच की बला टल जाएगी। मुझ वेद-पाठ करने वाले के पास आया, यह मामूली राक्षस नहीं है, ब्रह्मराक्षस ही होगा । ठीक है, उसीसे निवेदन कर लूँगा कि 'मेरी पत्नी के प्रथम पति! यह मेरी पत्नी नहीं है । तुम्हीं उसके सच्चे पति हो । मैं उसका पति नहीं हूँ । उसका स्पर्श तक नहीं करूँगा । उससे चाकरी भी नहीं कराऊँगा । मेरी रक्षा करो । मेरा गला मत घोंट दो । कोई पाप करने के कारण यह पिशाचत्व तुम को प्राप्त हुआ है । अब मेरी हत्या करोगे तो ब्रह्महत्या का पाप लगेगा । अरे, बाप रे बाप, मेरी रक्षा करो। मेरे पास मत आओ । चाहो तो अपने ससुर का गला घोंट दो या उस रामप्पा पंतुलु का । नहीं तो......' (चीख पुकार, रोदन की ध्वनियाँ सुनाई पड़ती हैं ।) अरे भगवान, फिर आ गया शायद । (शिष्य रोता हुआ आता है और अवधानी से चिपक जाता है । मीनाक्षी झाडू से शिष्य को मारने आती है । शिष्य के बच निकलने पर अवधानी को मार लगती है ।)

मीना : अरी रंडी, मेरी अशरफी यहाँ डाल दोगी कि नहीं ? मेरी पेटी की चाबी कहाँ रख दी ?

लुब्धा : अरे, मुझे मारा न ? (शिष्य से) अरी, छोड़ मुझे, छोड़ दे । अरी मैया, मेरा स्पर्श तक मत कर । (मीनाक्षी से) इसका अपवित्र शरीर लग जाए तो मैं मर जाऊँगा । छुड़ा दो इसे । (मीनाक्षी शिष्य की बाहु पकड़कर खींचती है और गाल पर नोचती है । शिष्य मीनाक्षी का हाथ कुतरकर भाग जाता है।)

मीना : अरी चुडैल कहीं की! हाथ कुतर दिया बापू! खून टपटप बह रहा है । आज उसका अंत देखूँगी ।

लुब्धा : कितना दारुण काम किया है इस रंडी ने! हाथ इधर बता दो। (कपड़े से खून साफ करता है) अशरफी माँग रही थी न । कहाँ का है ?

मीना : उसके भडुए पिता ने मुझे देने के लिए इसके हाथ दिया था । उसके ढोंगी विनय-व्यवहार को देखकर, मेरी पेटी, वह अशरफी सब उसीके हाथ में दिया । ज़रा संदेह हुआ तो पूछा । कहने लगी कि कपड़ों की पेटी में रखा था । चाबी गुम गई है । चाबी न मिले तो ऊखल से सिर फोड़ दूँगी ।

लुब्धा : उसपर हाथ मत उठाओ । तुम तो क्रोध के मारे बौखला जाती हो । मार भी डाल सकती हो । वह एक केस (case) हो जाएगा।

मीना : मर जाएगी तो फेंक देंगे । देखिए, रंडी ने कैसे कुतर दिया! सुना है, आदमी के दाँतों में विष भरा रहता है । उसके लिए कोई दवा नहीं है ।

लुब्धा : कुंकुम लगा दो ।

मीना : उसका सिर फोड़कर, तभी कुंकुम लगाऊँगी । (जाती है ।)

लुब्धा : अब मेरा संदेह दूर हो गया है । या तो वह गला घोंट कर मार डालेगा या यह कुतर-कुतर कर मार डालेगी । मौत तो निश्चित है । इतनी रक़म खर्च करके, मौत को खरीद लिया है । यह मौत की शादी! अरे, इसे भगा देंगे तो पिशाच की बला टल जाएगी । कहाँ भेज दूँ ? गाड़ी पर बिठाकर शहर भेज दूँ ? वहाँ उसका पिता दिखाई नहीं पड़ा तो फिर वापिस आ जाएगी

तो गाड़ी का किराया सिर पर ।......रामप्पा पंतुलु की सलाह लूँ ? हाँ, अच्छा याद आया । इसे उसीके सिर पर मढ़ दूँगा। रखैल के साथ इसे भी रख लेगा । चाहा तो एक रुपया दक्षिणा के साथ भेज दूँगा ।

(मीनाक्षी का प्रवेश)

मीना : बापू, वह रंडी कहीं दिखाई नहीं पड़ रही है ।

लुब्धा : कहीं कुँए में कूद तो नहीं पड़ी न ?

मीना : पता नहीं ।

लुब्धा : झट से गवरय्या को बुला भेजो । कहीं तुम ने मार-मार कर.....।

मीना : दिखाई पड़े तब न ?

लुब्धा : अरे भगवान, यह नया उपद्रव कैसा रे!

(परदा गिरता है ।)

दूसरा दृश्य

(लुब्धावधानी के घर का बरामदा ।)

लुब्धा : (इधर-उधर टहलते हुए) दिखाई नहीं पड़े तो फिर गई कहाँ? कहीं कुएँ में तो नहीं गिरी ? पुलीस वाले घर लूट लेंगे । कुएँ में नहीं गिरी तो फिर गई कहाँ ?......अरे, नहीं तो इस बुढ़ापे में शादी क्यों ?......उस रामप्पा पन्तुलु ने सब तरह से मेरा सत्यानाश कर दिया!

(रामप्पा पंतुलु का प्रवेश)

राम : क्या है मामा, 'रामप्पा पंतुलु' कह रहे थे ?

लुब्धा : कुछ भी नहीं ।

राम : इतनी रात गए, बरामदे में टहल-कदमी क्यों कर रहे हैं ?

लुब्धा : कुछ नहीं......नींद नहीं आ रही है ।

राम : मामाजी, वह कंठहार अभी ला देने के लिए जिद पकड़ बैठी है मधुरवाणी । अन्यथा न समझकर दिला दीजिए ।

लुब्धा : कंठहार कैसा ?

राम : आपकी पत्नी को जो दिया था.....

लुब्धा : मेरी पत्नी को!......मैं ने नहीं दिया ।

राम : आपके कहने पर मैं माँग नहीं लाया था?

लुब्धा : मैंने नहीं कहा था ।

राम : तब उसे रख लेंगे क्या ? आपकी पत्नी के गले में अब वह नहीं है क्या ?

लुब्धा : मेरी पत्नी ?......वह कभी की मर चुकी ।

राम : अभी हाल में आपने जिससे शादी की, वह आपकी पत्नी नहीं है क्या ?

लुब्धा : दुबारा शादी रचनेवाली वह रंडी मेरी पत्नी कैसी ?

राम : दुबारा शादी..... ये कैसी बातें ?

लुब्धा : तुम्हीं ने तो कहा था ....।

राम : बात पर बात बढी....... योंही कह दिया तो उसे सच मान रहे हैं क्या ?

लुब्धा : योंही नहीं कहा, जोर देकर कहा था । यह सब तुम्हारा और उस गुंटूर शास्त्री का षड्यंत्र है । यह बिलकुल साफ हो गया है । वह रंडी जरूर तुम्हारे घर गई है । मधुरवाणी के समान उसे भी रख लो । मेरे पास मत आओ । तुम्हें दूर से हजार नमस्कार ।

राम : मैं अपनी चीज माँग रहा हूँ तो यह कैसी बकवास ?

लुब्धा : वह ढोंगी रंडी और वह हार दोनों भी तुम्हारे घर पर ही है।

राम : यह सब मैं नहीं जानता । तुम्हारा गला पकड़कर, अपनी चीज वसूल लूँगा ।

(भीगी पुस्तक पकड़कर मीनाक्षी, हाथ में लड्डु, सिर पर हल्दी पुती घड़ा, उसपर अखंड दीप लेकर असिरि और हाथ में बोतल ले, भीगे कपड़े पहना पुजारी गवरय्या प्रवेश करता है।)

पूजा : हां! ह्रीम्! हूं! ओंकार भैरवी!

(रामप्पा भय प्रदर्शित करता है ।)

मीना : कहीं दिखाई नहीं पड़ी बापू! इस पुस्तक को कुँए में गिरा दिया।

(अवधानी भय प्रदर्शित करता है ।)

राम : कौन दिखाई नहीं पड़ा ?

मीना : मेरी सौतेली माँ......गवरय्या कुँए में उतर पड़ा, चप्पा-चप्पा छान मारा । कुँए में कुछ दिखाई नहीं पड़ा। (अवधानी का भय कम हो जाता है ।) ब्रह्म-राक्षसी को गवरय्या ने इस बोतल में बाँध रख दिया है बापू!

राम : (जरा दूर हटकर) ब्रह्मराक्षसी कैसी ?

लुब्धा : एक और ब्रह्मराक्षसी आकर, हमारी बिटिया को डरा गई थी।

मीन : मुझे नहीं.......हमारे बापू का गला घोंट रही थी ।

राम : गवरय्याजी, वह कन्या कहाँ गई ?

गव : उसका पति उसे उठा ले गया ।

मीना : कहाँ उठा ले गया? कहा था न कि वह इस बोतल में बंद है।

गव : (थोड़ा सोचने का ढोंग रचकर, मुस्कुराते हुए) वह भी इसी बोतल में है ।

मीना : वह इस बोतल में कैसे आई ?

गव : वाह, भोली मीनाक्षी, उसे औरत समझ रखा है ? वह तो कामिनी-पिशाच है । इसलिए जब-जब मैं आपके घर आया, वह दूर निकल जाती थी । मेरे मन में तभी शंका हुई थी कि ऐसा क्यों कर रही है ।

मीना : दोनों को एक बोतल में बंद कर रखें तो कहीं भूत-शिशु पैदा न हों!

गव : पंतुलूजी! आप ध्यान दीजिए । यह बोतल कितना भारी (वजनदार) है ? दो लोगों का वजन......।

राम : अरे हाय......मेरे पास मत लाओ ।

गव : अरे, असिरी, तू उठा ले ।

असिरि : मुझे डर क्यों ? माता की दया चाहिए । (बोतल हाथ में उठाकर) अरी मैया! कितना वजनदार है!

गव : बोतल और यह अखंड दीप तुलसी (पौधे) के चबूतरे के पास रख दे ।

लुब्धा : भाई रे भाई, वह बोतल मेरे घर में मत रखवा दो । अपने घर रखवा लो ।

गव : शहद की बोतल समझ हमारे बच्चे ढक्कन निकाल दें तो फिर से दोनों भूत आकर आपके घर बैठ जाएँगे ।

लुब्धा : तब तो बोतल को जमीन में गड़वा दीजिए ।

गव : क्या वह काम उतना आसान है ? उसके लिए मंत्र-तंत्र बहुत कुछ करने का है । पुनश्चरण करना है, होम करना है, अन्नदान करना है ।

लुब्धा : मेरे घर को खोखला बना देना है!

गव : आपको ऐसा लगे तो मेरा क्या ? ढक्कन निकालकर, अपने रास्ते चला जाऊँगा ।

लुब्धा : ढक्कन निकालना क्यों ? मेरे पास जो कुछ है, उसमें से तुम्हें कुछ दूँगा । मत खोलिए, बोतल वहाँ रखकर चले जाइए ।

गव : आहा, अवधानीजी की चालाकी! मेरे जाते ही बोतल को गाड़ देने की सोच रहे हैं क्या ? उस बोतल के लिए शांतिपाठ किए बगैर भूस्थापित कर दूँ, तो क्या मैं रौरव आदि नरकों में नहीं जाऊँगा ? अभी ढक्कन निकाल देता हूँ ।

लुब्धा : न न, ऐसा मत करो । वह शांतिपाठ कल कर देना ।

गव : ऐसा है तो बोतल पास में रखकर, रातभर आपके पिछवाड़े में सो जाऊँगा । आप जाकर निश्चिंत हो सो जाइए । (जाता है।)

राम : मामा, एक बात । (दोनों जरा दूर जाकर, बातें करते हैं ।)

राम : मेरे कंठहार की बात......?

लुब्धा : वह तुम्हारे घर में ही है ।

राम : आप कह रहे हैं कि मेरी पत्नी तुम्हारे घर गई है । लेकिन वह लड़की वहाँ आई नहीं, हार लाई नहीं ।

लुब्धा : फिर मुझे क्या मालूम ?

राम : ऐसा मत कहिए । मेरा हार मुझे दीजिए । नाराज हो जाऊँ तो मुझसा बुरा कोई नहीं होगा ।

लुब्धा : मैं हार-वार कुछ नहीं जानता ।

राम : फिर किसे मालूम ? गवरय्या कह रहा था न कि तुम्हारी पत्नी पिशाच बन गई । शायद तुम ने और तुम्हारी बेटी ने उसे मार डाला होगा ।

लुब्धा : अरे गधे के बच्चे! (लाठी लेकर मारने जाता है ।)

राम : मेरा हार हड़प गए न! अब देख लूँगा । (जाता है ।)

लुब्धा : (अपने में) हार का क्या हुआ होगा ? (बाहर) माई!

मीना : क्या है बापू ? (आती है ।)

लुब्धा : हार का क्या किया उसने ?

मीना : पता नहीं । संदूक में रखा होगा या उसीके अंग पर होगा ।

लुब्धा : अंग पर ? पिशाच को हार की क्या जरूरत ?

मीना : क्या हुआ ? बुरा क्या है ? रख लेगी ।

लुब्धा : गवरय्या ने कुएँ में खोज लिया न ?

मीना : घंटा-भर ढूँढता रहा ।

लुब्धा : तुम ने देखा है न ?

मीना : देखा है ।

लुब्धा : कहीं वह रामप्पा पंतुलु के घर तो नहीं गई ?

मीना : गवरय्या ने बोतल में बंद कर दिया है न! कैसे जाएगी ।

लुब्धा : पता नहीं । कुछ भी नहीं सूझ रहा है । चलो सो जाएँ । हमारी किस्मत......। (जाते हैं ।)

तीसरा दृश्य

(सड़क पर इकतारा बजाते हुए, वेदांत-संबंधी गीत गाते हुए, शिष्य साधु संत के रूप में जाता रहता है । पीछे से रामप्पा पंतुलु आते रहते हैं ।)

शिष्य : 'घर-घर'
कहते फिरते हो ।
'कहते हो घर मेरा है ।'
कहाँ है रे घर तेरा ।
'अरे तोते'
बोल तेरा घर कहाँ है ?

राम : यह मेरा घर नहीं है ?

शिष्य : गाँव के उत्तर में ।
समाधिपुर में है तेरा
लकड़ियों का घर रे तोता!

राम : श्मशान में ?

शिष्य : जीता रहा कितने ही दिन
राज्य करता रहे कितने ही दिन
कब तक यह जीवन ?
कब तक यह राज्य ?

राम : अच्छा......

शिष्य : चार दिन की चाँदनी यह जिंदगानी ।
इसके लिए इतराते-फिरते हो बेकार ।
आगे की गति को पहचान रे तोते ॥

राम : यह कैसा अपशकुन......

शिष्य : लकड़ियाँ ही बंधुजन ।
लकड़ियाँ (काठ) ही रिश्तेदार ।
जनम देने वाली माता कौन रे तोते ।

राम : बंधुजन ? एक दीदी है । वह कभी मेरे घर आई नहीं । अब घर की मालकिन कौन ? दरवाजे के उस पार वेश्या, इस पार घर की मालकिन । दोनों मिलकर, चैन से रहने नहीं दे रही हैं ।

शिष्य : चार जन मिलकर ढोएँगे तुझे
पीछे-पीछे चलेंगे दस
जन......

राम : सिर फिरा गीत! चलो, जाएँगे। (थोड़ी दूर जल्दी-जल्दी चलकर) शायद उसी ओर आ रहा है, गीत के बोल सुनाई पड़ रहे हैं।

शिष्य : जल जाने तक तुम्हारे देते रहेंगे पहरा।
घर जाकर नहा लेंगे
साथ कोई नहीं आता रे तोते!

राम : पागल गीत......बेसिर-पैर का......

शिष्य : पंतुलुजी! कहाँ हैं ?

राम : भाग नहीं निकलेंगे तो चुटिया पकड लेगा। (भागता है।)

(परदा गिरता है।)

चौथा दृश्य

(रामचन्द्रापुरम् अग्रहार में, तालाब के किनारे वाले बगीचे में वधूपक्ष वालों की गाड़ियाँ खड़ी हैं। किनारे पर एक ओर अग्निहोत्रावधानी तो दूसरी ओर रामप्पा पंतुलु दातून करते हुए।)

अग्नि : गाड़ियाँ रोकिए, रोक दीजिए। हाथी के लिए खूब घास-फूस है। यह तालाब स्नान-वान के लिए बहुत अच्छा स्थान लग रहा है। कौन है जी वहाँ ? लुब्धावधानीजी ने आपको भेजा है क्या?

राम : क्यों ?

अग्नि : हमारी अगवानी के लिए किसी को भेजा नहीं क्या ?......मुझे अग्निहोत्रावधानी कहते हैं।

राम : आप ही हैं अग्निहोत्रावधानी ? कैसे आना हुआ ?

अग्नि : वैवाहिक कार्यक्रम के बारे में आप को जानकारी नहीं है क्या?

राम : किनका विवाह ?

अग्नि : आप इस अग्रहार के निवासी नहीं हैं क्या ? हमारी पुत्री का विवाह लुब्धावधानी के साथ......

राम : उनकी शादी तो हो गई!

अग्नि : मजाक कर रहे हैं क्या ? खैर, मजाक की बातों को छोड़ दीजिए। शादी के इंतजाम कैसे हो रहे हैं ?

राम : आप ही मजाक कर रहे हैं । शादी होकर दस दिन हो गए । सुना, आपने ही पत्र लिखा कि लुब्धावधानी के साथ रिश्ता हमें पसंद नहीं है । इसपर गुंटूर से आए किसी शास्त्री की लड़की के साथ शादी कर ली, बारह सौ रुपये देकर ।

अग्नि : भाईजी मजाक की बातें कर रहे हैं । यह उचित नहीं है । मजाक करने के लिए भी समय-असमय होता है ।

राम : क्या कह रहे हैं आप ? मैं जिंदगी में कभी झूठ नहीं बोला हूँ। मेरी बात पर संदेह करना उचित है क्या ?

अग्नि : कसम खाइए ।

राम : गायत्री की कसम ।

अग्नि : हाय, हाय! यह कैसा अन्याय! चलिए, उस गधे के बच्चे की हड्डियाँ चूर-चूर कर दूँगा ।

राम : मैं नहीं आऊँगा, आपके साथ । गुंटूर के उस रिश्ते को न करने की सलाह दी, तबसे मुझसे बात करना छोड़ दिया है । आप हो आइए । आपके आने तक यहीं बैठा रहूँगा ।

अग्नि : उस गधे के बच्चे के मकान का पता नहीं है न!

(जाता है । रामप्पा वहीं बैठा रहता है । थोड़ी देर के बाद अग्निहोत्रावधानी वापिस आता है । तब तक वेंकम्मा आदि वहाँ आ जाते हैं ।)

अग्नि : खूब पीट दिया है उस लुच्छे को । इसके श्राद्ध (बरसी) के लिए हाथी और घोड़े लाया हूँ । कहता है, राह-खर्च के लिए एक पैसा भी नहीं दूँगा ।

वेंक : हमारा दुर्भाग्य......मैं ने व्रत-पूजाएँ कीं, वे और प्रकार के हैं तो फल और क्या होगा ? मैं ने लाख मिन्नतें की थीं आपसे..... यह रिश्ता मत कीजिए । मेरी बात मानी नहीं । मैं डर ही रही थी । घर से निकलते समय बिल्ली सामने आई थी ।

अग्नि : अरी, मूर्ख, चुप रह । औरत जात को क्या मालूम ? भाईजी, क्रिमिनल केस दाखल करने के लिए गुंजाइश है क्या ? हमारे यहाँ एक वकील हैं । उन्हें हमारे बारे में सब कुछ मालूम है। उनसे भी सलाह लूँगा ।

राम : अदालती मामलों में घूम-घूमकर, आपके बाल पक गए हैं । आपको दूसरों की सलाह की क्या जरूरत ? मैं यहाँ का निवासी हूँ । चाहें तो गवाह-गिवाह को लाने में सहायता कर सकता हूँ। छोटे-मोटे वकील मुझे सलाह देने योग्य नहीं हैं । थोड़ी बहुत अंग्रेजी सीख लेने के कारण, मूल में जैसा है, वैसा तर्जुमा कर दे सकते हैं । लेकिन कोई चाल चलनी है तो आप जैसे योद्धा चाहिए । मुझ जैसे नियोगी को वह चाल चलानी है । यह क्या पूछ रहे हैं कि क्रिमिनल केस के लिए गुंजाइश है ? खैर, आप जानते नहीं हैं क्या जो मुझसे पूछ रहे हैं ? उसके बाद आसानी से चार-पाँच हजार सिविल में भी उगाह सकते हैं ।

अग्नि : ठीक, वही मैं चाहता हूँ ।

राम : हो गया । फिर सलाह-वलाह की क्या जरूरत ? जाकर केस दाखल कर देंगे । खर्च के लिए पैसे लेकर, निकल चलिए ।

अग्नि : मेरे पास एक पैसा भी नहीं है । क्या उपाय है ? सोचा, यह गधे का बच्चा रुपये देगा, साथ कुछ भी नहीं लाया ।

राम : घर जाकर, पैसा ले आने तक, पुण्यकाल बीत जाएगा । कहा है-'शुभस्य शीघ्रम्' । आपका क्या विचार है ?

अग्नि : इस मामले का फैसला किए बिना, घर की देहली पार करनी नहीं है । बेटी का कोई गहना इस गाँव में गिरवी रख देंगे ।

राम : तब तो लाइए । पोलिसेट्टी के पास गिरवी रख देंगे । पोलिसेट्टी को अपना बना लेना बहुत जरूरी है । आप ने जब लुब्धावधानी

पर हाथ चलाया तब पोलिसेट्टी वहाँ था । इसलिए जब लुब्धावधानी आप पर चार्ज करेगा, तब पोलिसेट्टी को अवश्य गवाह बनाएगा । इसलिए पोलिसेट्टी को लुब्धावधानी से दूर और अपने पास खींच लेना चाहिए । क्या कहते हैं ?

अग्नि : आपकी सलाह उत्तम है । पोलिसेट्टी के बारे में मेरे मन में वही भय है ।

राम : देखा, हर किसी को सलाह देना आता है क्या ? तिस पर अंग्रेजी पढ़े इन छोटे-मोटे वकीलों से सलाह करेंगे तो कहेंगे कि केस करने के लिए गुंजाइश तक नहीं है । गलत गवाहों के लिए गुंजाइश नहीं है । उनका क्या नुकसान ? गलत गवाहों के बिना केस जीतें कैसे ?......मैं हूँ नियोगी । मेरी बात पर ध्यान दीजिए। इसलिए आप के साथ आए वकील के साथ बाल-बच्चों को घर भेज दीजिए । हम लोग फौरन जाकर, लुब्धावधानी से पहले, केस दाखल कर देंगे । कोई गहना जल्दी ले आइए ।

अग्नि : बिटिया को बुला ला ।

वेंक : बिटिया है कहाँ ? कहीं सुस्ताकर, गाडी में सो तो नहीं रही है !

अग्नि : मानहानि के दावे में पैसा खूब उगाह सकते हैं न ?

राम : खूब......

एक साथी : बिटिया की गाड़ी कहीं दिखाई नहीं पड़ रही है । शायद पीछे रह गई ।

वेंक : देखिए, वह बिट्टू है न! यह यहाँ कैसे आया ? अरे, तू दीदी के साथ गाडी में बैठा नहीं था ?

वेंकट : नहीं, मैं हाथी पर बैठा था ।

अग्नि : अरे भडुए, तुम्हारे मास्टर कहाँ हैं ?

वेंकट : कहीं दिखाई नहीं पड़ रहे हैं ।

अग्नि : घोड़ा आया ? साईस कहाँ ?

वेंकट : साईस ने कहा......?

अग्नि : क्या कहा रे भड़ुए ?

वेंकट : मास्टरजी......रात को......

अग्नि : मुँह से बात क्यों नहीं निकल रही है ?

वेंकट : सुना, घोड़े से उतरकर, गाड़ी पर चढ़ गए ।

वेंक : अरे, कहीं बुच्ची को भगा तो नहीं ले गया ?

आसपास के लोग : हें......हें, क्या कह रही हैं ?

वेंक : अरे भगवान, सत्यानाश हो गया......हाय......हाय......

(एकदम जमीन पर बैठ जाती है ।)

अग्नि : (क्रोध से काँपते हुए) मास्टर उसे भगा ले गया ? गहनों की पेटी ? कोर्ट-कागजों का संदूक ?

वेंकट : दीदी की पेटी में मैं ने अपनी पुस्तकें रख दी थीं ।

अग्नि : अरे, भड़ुए......(गाली देते हुए) उसको तुम ही घर पर लाए। थोड़ी-सी भनक नहीं लगी, वरन् उसे जान से मार डालता । गधे के बच्चे को गाड़ देता ।

राम : (नजदीक आकर) कहा था कि मास्टर भलमानस हैं, पढ़े-लिखे हैं । क्या-क्या उठाकर ले गया ?

अग्नि : क्या-क्या उठाकर ले गया ? तुम्हारा श्राद्ध! विधवा बुच्ची को भगा ले गया । इस गधे के बच्चे की अंग्रेजी पढ़ाई ने घर डुबो दिया ।

(वेंकटेशम् के बाल पकड़कर मारने जाता है । परदा गिरता है ।)

समाप्त

• • •